RNI No. MPHIN/2013/52983

राष्ट्रीय हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

रंग संस्कृति

रंगमंच, संस्कृति एवं साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष-11, संयुक्तांक-2,3 अक्टूबर से मार्च 2024 मूल्य-25/-

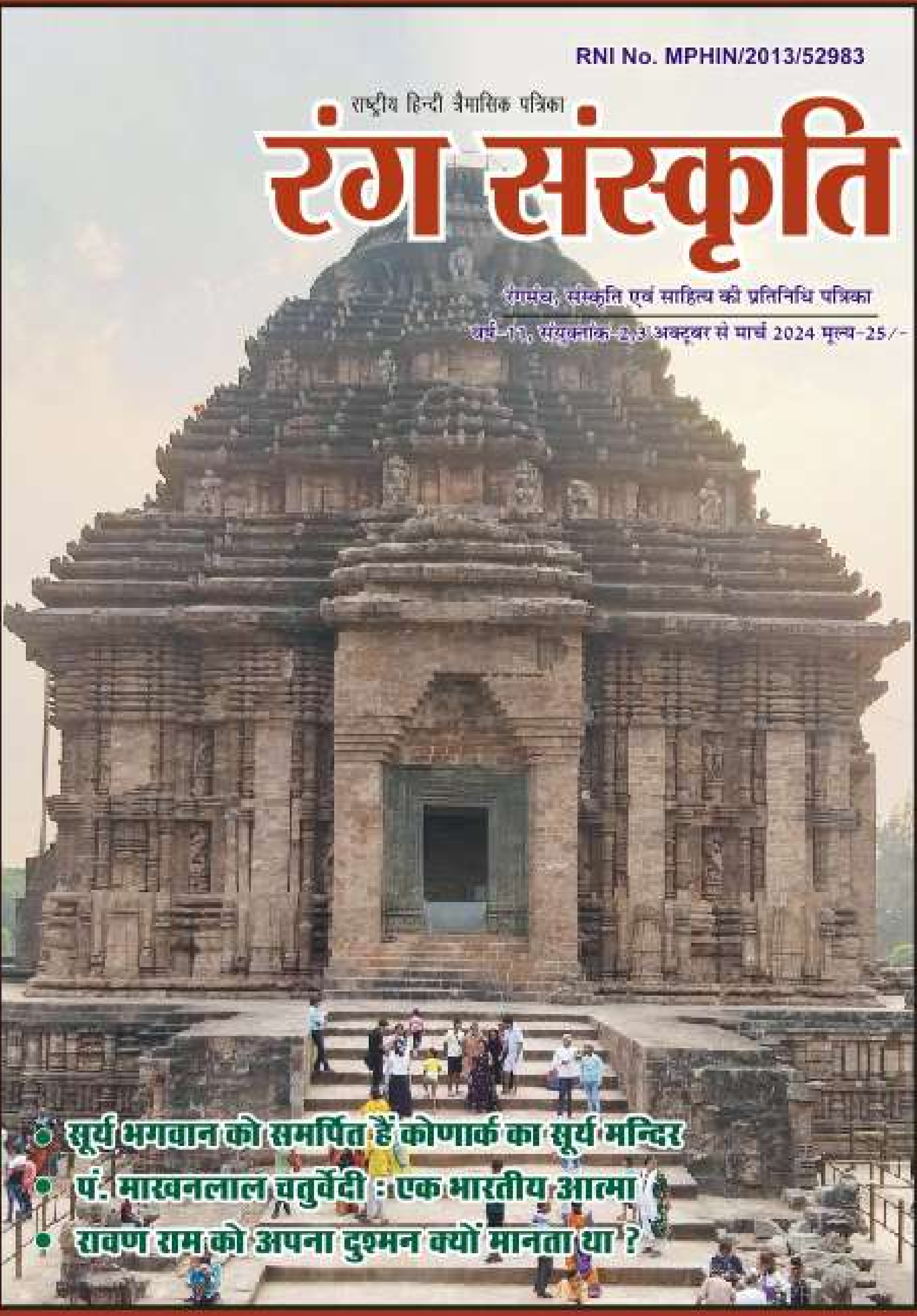

- सूर्य भगवान को समर्पित हैं कोणार्क का सूर्य मन्दिर
- पं. माखनलाल चतुर्वेदी : एक भारतीय आत्मा
- रावण राम को अपना दुश्मन क्यों मानता था ?

रंगमंच, संस्कृति एवं साहित्य पर आधारित

साप्ताहिक समाचार पत्र

अपनी गतिविधियों को साझा करें

ई मेल :
rangsanskriti@gmail.com

राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका

साथ ही डेली न्यूज़ पोर्टल www.rangsanskriti.com पर
प्रतिदिन नवीन समाचारों का अवलोकन करें

देश विदेश की सांस्कृतिक खबरें अब देश विदेश तक

RNI No MPHIN/2013/52983

राष्ट्रीय हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

रंग संस्कृति

रंगमंच, संस्कृति एवं साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष – 11, संयुक्तांक–2,3, अक्टूबर से मार्च 2024

मूल्य–25 रुपये

सम्पादक
वन्दना अत्रे

स्वत्वाधिकारी,प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक वन्दना अत्रे द्वारा क्लासिक कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स जहांगीराबाद, भोपाल से मुद्रित एवं 'यनी हाऊस', 141, अमरनाथ कॉलोनी, सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल से प्रकाशित।

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। पत्रिका में संग्रहित आलेखों, चित्रों में व्यक्त रचनाकारों, लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
प्रधान कार्यालय: यनी हाऊस 141, अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)– 462042, सम्पर्क : 0755–2495707, 9425004536

सुविचार

मानव कल्याण ही भगवद् गीता का प्रमुख उद्देश्य है, इसलिए मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन करते समय, मानव कल्याण को प्राथमिकता देनी चाहिए।

- भगवद्गीता

सफलता एक दीर्घकालीन परियोजना है, लेकिन उसकी शुरूआत आज हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों से होती है।

- बिल गेट्स

संकल्प से सृष्टि बनती है। अर्थात् मेरी दुनिया मतलब मेरा स्वास्थ्य, मेरे रिश्ते, मेरा काम, मेरा घर ये सब संकल्पों से बनता है। अगर हमने सही संकल्प करने शुरू कर दिए तो हमारी सृष्टि बदल जाएगी।

बीके शिवानी
आध्यात्मिक वक्ता और लेखिका

आमुख कथा
सूर्य भगवान को समर्पित हैं कोणार्क का सूर्य मंदिर
संकलन एवं संयोजन - अंकित गौड़

विवरणिका

क्र.	विवरणिका	पृष्ठ
1.	विवरणिका	1
2.	पाठक प्रतिक्रिया	2
3.	विशेष टिप्पणी	3
4.	136 देशों में बोली जाने वाली...	4-5
5.	देश के स्वाभिमान की पुनर्स्थापना...	6-7
6.	सूर्य भगवान को समर्पित है.. (आमुख कथा)	8-9
7.	रंग संस्कृति नाट्य समारोह...	10-12
8.	नोटबंदी की तरह हो राष्ट्रभाषा...	13-14
9.	वर्ष 2023 के साहित्य का नोबेल...	15-16
10.	अभूतपूर्व घटनाओं का वर्ष 2023	19-20
11.	रावण राम को अपना दुश्मन...	21-23
12.	माघ में स्नान मात्र से प्रसन्न...	24-25
13.	राम हमारे आराध्य है, आराध्य रहेंगे...	26
14.	ऑलराउंडर कवि साहित्यकार...	27
15.	पं. माखनलाल चतुर्वेदी...	28
16.	सरल अभिव्यक्ति की सार्थक...	29-30
17.	भोंदू ने दी घर जमाई बन सीख...	31
18.	गीत-ग़ज़ल	32-37
19.	जिन्न कालमुखी की रामलीला...	38
20.	लघुकथा	39
21.	रंगमंच	41-46
22.	सिने समीक्षा	48-51

रंग संस्कृति

कार्यकारी संपादक
यतीन्द्र अत्रे

साहित्य संपादक
सुरेश तन्मय

संपादक सहयोग
सुनील उपमन्यु, शिशिर उपाध्याय, डॉ. ओमेन्द्र कुमार, संदीप सृजन, बृजेश बड़ोले, तोताराम अमोदे, वीरेन्द्र काजवे, दविंदर कौर, दीपक चाकरे, महेश अग्रवाल, हरीश दुबे

मार्गदर्शन
मधुबाला अत्रे, विनय उपाध्याय, बालेन्द्र सिंह, अशोक द्विवेदी, संदीप राशिनकर, रवि तिवारी, आदित्य नारायण उपाध्याय, हेमन्त उपाध्याय

फोटो जर्नलिस्ट
दिनेश दवे

विधि सलाहकार
उद्भव अत्रे

रंग संस्कृति में प्रकाशित चित्र, समाचार, रचना, आलेख पर लेखक, रचनाकार से किसी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं लिया जाता हैं और ना ही उन्हें प्रदान किया जाता है। उनकी स्वेच्छिक स्वीकृति के पश्चात सम्पादक मण्डल के अंतिम निर्णय पर ही प्रकाशन सम्भव होता है।

सम्पादक

हस्ताक्षर

- देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
- सुनील चौरे 'उपमन्यु'
- सुखदेव राव चौरे
- संदीप सृजन
- शिशिर उपाध्याय
- सदाशिव कौतुक
- सुरेश कुशवाह 'तन्मय'
- कविता विश्वकर्मा
- राजेन्द्र ओझा
- दीपक चाकरे
- ओमप्रकाश चौरे
- विपिन चन्द्र साद
- ब्रजेश बड़ोले
- बलिराज चौधरी
- तोताराम अमोदे
- विनोद नागर
- गोवर्धन यादव
- यतीन्द्र अत्रे
- अंकित गौड़

पाठक प्रतिक्रिया

सम्पादक जी,

समाचार पत्र हो या पत्रिका आज के प्रतिस्पर्धी युग में जबकि सब कुछ डिज़िटल हो रहा हो, पाठकों की रुचि के अनुरूप सामग्री प्रकाशित कर उन तक पहुंचाना प्रशंसनीय कार्य है। रंग संस्कृति बहुत रोचक जानकारी युक्त सांस्कृतिक पत्रिका है, गागर में सागर कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। संपादकीय में समसामयिक विषयों पर समीक्षाएं सटीक होती हैं । 10 वर्षों के निरंतर प्रकाशन की यात्रा में मार्गदर्शक, लेखक, साहित्यकार एवं वे पाठक जो इस सांस्कृतिक आंदोलन के साक्षी रहे, उन्हें साधुवाद। इसके साथ ही रंग संस्कृति का संपादक मंडल भी बधाई का पात्र है।

गोपाल शुक्ला
भिलाई,(छ.ग.)

सम्पादक जी,

किसी बुलंद इमारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण उसकी नींव होती है.. विनय उपाध्याय जी द्वारा लिया पूर्व एयर मार्शल शशिकर चौधरी का साक्षात्कार, राष्ट्र सेवा के प्रति उनका दृढ़ संकल्प आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है। व्यक्ति भले ही बड़े पद पर पहुंच जाए लेकिन वह अपनी कर्मभूमि के साथ जिस तरह से बचपन की स्मृतियों को संजोकर रखता है, अपनी सफलता का श्रेय जन्मभूमि को देता है, यह उस क्षेत्र के रहवासियों के लिए भी गर्व की बात होगी।

स्वर्णलता शर्मा
गणेशधाम, रिंग रोड, इंदौर

नये मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश को मिलेगी नई दिशा

यतीन्द्र अत्रे

संशय के बादल छटे और अंततः मध्य प्रदेश को मुख्यमंत्री के रूप में नया चेहरा मिल ही गया। समाचार पत्रों टीवी चैनल, दावा कर रहे बड़े एवं कई वरिष्ठ नेताओं के अनुमान से परे विधायक दल की बैठक में तीसरी पंक्ति में बैठे मोहन यादव परिणाम आने के बाद प्रथम हो गए। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, संभवतः कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रहा होगा। हालांकि मोहन यादव मुख्यमंत्री नए बने हैं किंतु ना तो वे प्रदेश की जनता के लिए नए हैं और ना ही राजनीति में। छात्र संघ की राजनीति से अपना करियर प्रारंभ करने वाले डॉक्टर मोहन यादव उज्जैन दक्षिण से तीसरी बार विधायक के रूप में चुनाव जीते हैं,फिर मुख्यमंत्री चुने जाने के पूर्व वे शिवराज सरकार में उच्च शिक्षा मंत्री भी रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह की चयन सूची में मोहन यादव हैं तो इसका तात्पर्य यह लगाया जाना चाहिए कि उनकी कार्यप्रणाली को लेकर किसी भी तरह के संशय की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। महाकाल की नगरी उज्जैन में जन्म लिए डॉक्टर मोहन यादव मालवा की संस्कृति में बड़े हुए जहां यह कहा जाता है कि कोई बाहरी व्यक्ति किसी का पता पूछता है और यदि पता बताने वाले के पास समय होगा तो वह उसे घर तक पहुंचाने का प्रयास करेगा, यानी की सहयोगी भावना वहां कूट-कूट कर भरी होती है। डॉक्टर मोहन यादव में भी यह गुण देखे जा सकते हैं, तीन बार एक ही जगह से विधायक चुना जाना संभवतः इसी विचारधारा को सार्थक करता है। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जब छात्र राजनीति में प्रदेश स्तर पर चर्चित थे उस समय मोहन यादव उज्जैन की छात्र राजनीति में उभरता हुआ चेहरा माने जाते थे, उन्हें उस समय कभी महाविद्यालयों तो कभी विश्वविद्यालय में छात्रों की समस्याओं को लेकर जूझते हुए देखा जाता था। इसी जुझारू व्यक्तित्व ने उन्हें वर्ष 1982 में माधव विज्ञान महाविद्यालय उज्जैन का सह सचिव बनाया और 1984 में वे वहीं अध्यक्ष भी निर्वाचित हुए। सोशल मीडिया पर प्रसारित उनके व्यक्तिगत विवरण के अनुसार बीएससी एलएलबी एवं एमए के बाद उन्होंने पीएचडी की और मोहन यादव से डॉ. मोहन यादव हो गए। इसी दौरान अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में नगर मंत्री से प्रदेश मंत्री बनने की राह में विभिन्न पदों पर अपनी जिम्मेदारी निभाई फिर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में अपनी पहचान बनाते हुए प्रदेश की राजनीति का सफर आरंभ किया। वर्ष 2003 से 2023 तक लगातार वे उज्जैन से ही विधायक निर्वाचित हुए हैं। संघ की पाठशाला से अनुशासित डॉ. मोहन यादव की लोकप्रियता का अनुमान ऐसे लगाया जा सकता है कि जब वे मुख्यमंत्री बनने के बाद अपनी गृह नगरी अवंतिका (उज्जैन) पहुंचे तब उनके स्वागत के लिए आतुर सड़कों पर उपस्थित लोगों के बारे में यह कहा गया कि सिंहस्थ के बाद नगर में इतनी उपस्थिति पहली बार देखी गयी है। स्पष्ट विचारधारा वाले मध्यप्रदेश के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ऐतिहासिक तर्क के माध्यम से महाकाल की नगरी में किसी पदासीन मंत्री, राजा के रात्रि विश्राम के मिथक को तोड़कर नया उदाहरण प्रस्तुत किया है। अब अपेक्षा होगी कि परिवर्तन के इस दौर में सुशासन के साथ प्रदेश की जनता के लिए भी उनकी वही सहयोगी भावना होगी जिसके लिए वे मालवा क्षेत्र में जाने जाते रहे हैं।

कार्यकारी संपादक

मो. - 9425004536

ई-मेल - y.atre3636@gmail.com

136 देशों में बोली जाने वाली हिन्दी भाषा का व्याकरण विश्व में सर्वोत्तम

मथुरा में आयोजित हुआ त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य-कला संस्कृति सम्मेलन

मथुरा, कानपुर। 'हिन्दी भाषा आज विश्व के 136 देशों में बोली जाने वाली विश्व की तीसरी भाषा बन चुकी है, हमारा प्रयास है कि यह विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा बने क्योंकि इसका व्याकरण विश्व का सर्वोत्तम व्याकरण है।' अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विशेषज्ञ डॉ. रामा तक्षक (नीदरलैण्ड्स) ने शहर के स्थानीय होटल मुकुन्द पैलेस के सभागार में अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य कला व संस्कृति केन्द्र, भारत (रजि.) तथा अखिलभारतीय ब्रज संस्कृति केन्द्र,मथुरा (रजि.) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य–कला व संस्कृति सम्मेलन:2023 के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि स्वरूपेण अपने वक्तव्य में कहा।

विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सेवी डॉ. हरि सिंह पाल (प्रधान संपादक– सौरभ पत्रिका,न्यूयार्क अमेरिका) सहित अन्य विद्वानों ने अपने वक्तव्यों में हिन्दी भाषा को ग्लोबल भाषा के रूप में स्थापित करने पर बल दिया।

सम्मेलन के संयोजक व अकादमी पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य डॉ. खेमचन्द यदुवंशी शास्त्री ने आयोजन की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए रहस्योद्घाटन किया– 'हिन्दी को ग्लोबल भाषा बनाने के लिए विश्व स्तर पर हमें एकजुट होकर प्रयास करना है और इसके लिये नई पीढ़ी को इसके महत्व और उपयोगिता को समझाते हुए उन्हें जोड़ना भी बेहद जरूरी है।'

इससे पूर्व माँ शारदे की छवि पर अतिथियों ने माल्यार्पण करते हुए दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत सम्मेलन का उद्घाटन किया तथा संस्था के पदाधिकारी डॉ. एस.एस. अग्रवाल, प्रद्युम्न यदुवंशी, प्रभाकांत सक्सेना, ऋतुराज यदुवंशी, ललिता यदुवंशी ने उत्तरीय पहनाते हुए तिलक लगाकर अतिथियों का स्वागत किया।

तदोपरांत 'विश्व क्षितिज पर हिन्दी के बढ़ते हुए कदम' विषयक संगोष्ठी प्रारम्भ हुई जिसमें आनंद गिरी गोस्वामी 'मायालु' (लुम्बनी–नेपाल), डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा (टोक्यो–जापान), पं. मदन लाल शर्मा (बर्गहिंगम, लन्दन), गोपाल बघेल 'मधु' (टोरेंटो, कनाडा), डॉ. नीलू गुप्ता (केलिफोर्निया, अमेरिका) डॉ. प्रमिला भार्गव, (टोरेंटो, कनाडा),

डॉ. किरण लता वैद्य (ऑस्ट्रेलिया), छोटू प्रजापति (सऊदी अरब) ने हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता को अपने–अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। इसी क्रम में विश्व स्तरीय हिन्दी सेवी डॉ. हरि सिंह पाल (नई दिल्ली), प्रोफेसर एस. पी. सिंह (बिहार), अवधेश कुमार सक्सेना 'अवधेश' (मध्यप्रदेश), धीरेन्द्र सिंह (देहरादून), दिनेश श्रीवास्तव (आजमगढ़), शिक्षाविद हीरा लाल पाण्डेय (नई दिल्ली), डॉ.ओमेन्द्र कुमार वर्मा (कानपुर), रामेन्द्र कुमार शर्मा (आगरा), सपना बनर्जी (आजमगढ़) के साथ–साथ स्थानीय विद्वान व पत्रकार श्याम सुन्दर ओझा (ब्यूरोचीफ– अमर उजाला,मथुरा), चन्द्र प्रताप सिकरवार (समन्वयक–गीता शोध संस्थान, वृन्दावन), राकेश कुमार शर्मा, भागवताचार्य प. गोपाल प्रसाद उपाध्याय डॉ. हरिबाबू ओम, प्रोफेसर डॉ. पल्लवी सिंह, प्रोफेसर डॉ. नीतू गोस्वामी, डॉ. शैल कुमारी गौतम आदि ने हिन्दी के विश्व क्षितिज पर बढ़ते हुए कदम का साहित्यिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ शिक्षाविद व साहित्यकार डॉ. नटवर नागर ने कहा कि हिन्दी की शोभायात्रा भारत की सीमा–रेखा को पार करके विदेशी भूमि पर बड़े सम्मान के साथ आगे बढ़ रही है, अब हिन्दी न केवल भारत में बल्कि विश्व के अनेकानेक देशों में लगभग साढ़े तीन सौ करोड़ लोगों की भाषा बन चुकी है।

इस अवसर पर 9 देशों के अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यकारों सहित 31 विश्व स्तरीय साहित्यकारों व कला साधकों को इंटरनेशनल लाइफ टाइम अचीवमेंट एवार्ड : 2023 से सम्मानित किया गया :–

डॉ. रामा तक्षक–हिन्दी साहित्य (नीदरलैण्ड्स)
श्री गोपाल बघेल – हिन्दी साहित्य व आध्यात्मिक प्रबंधन (कनाडा)
डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा– हिन्दी साहित्य (जापान)
डॉ. मोहनकांत गौतम– हिन्दी साहित्य व शिक्षण (नीदरलैंड्स)
पं. मदन लाल शर्मा– हिन्दी साहित्य व ज्योतिष विज्ञान (लन्दन)
डॉ. नीलू गुप्ता – हिन्दी साहित्य (केलिफोर्निया),
डॉ. प्रमिला भार्गव – हिन्दी साहित्य (कनाडा),
डॉ. आनन्द गिरी मायालु – हिन्दी साहित्य (नेपाल)
श्री छोटू प्रजापति– हिन्दी साहित्य (सऊदी अरब)
डॉ. हरि सिंह पाल– हिन्दी साहित्य लेखन व सम्पादन (नई दिल्ली)
प्रोफेसर डॉ. सिध्देश्वर प्रसाद सिंह – हिन्दी साहित्य व शिक्षा (बिहार)
श्री हीरा लाल पाण्डेय – शिक्षा व समाज सेवा (नई दिल्ली)
श्री अवधेश कुमार सक्सेना– हिन्दी साहित्य व ज्योतिष विज्ञान (शिवपुरी–मध्यप्रदेश),
डॉ. ओमेन्द्र कुमार वर्मा– हिन्दी रंगमंच (कानपुर)

द्वितीय सत्र में सम्मानित कला साधकों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया जिसके प्रारम्भ में सपना बनर्जी (आजमगढ़) ने अपने हिन्दी गीत,भजन और गजलों के सुमधुर गायन से वातावरण को संगीतमय बना दिया।

देश के स्वाभिमान की पुनर्स्थापना है श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा

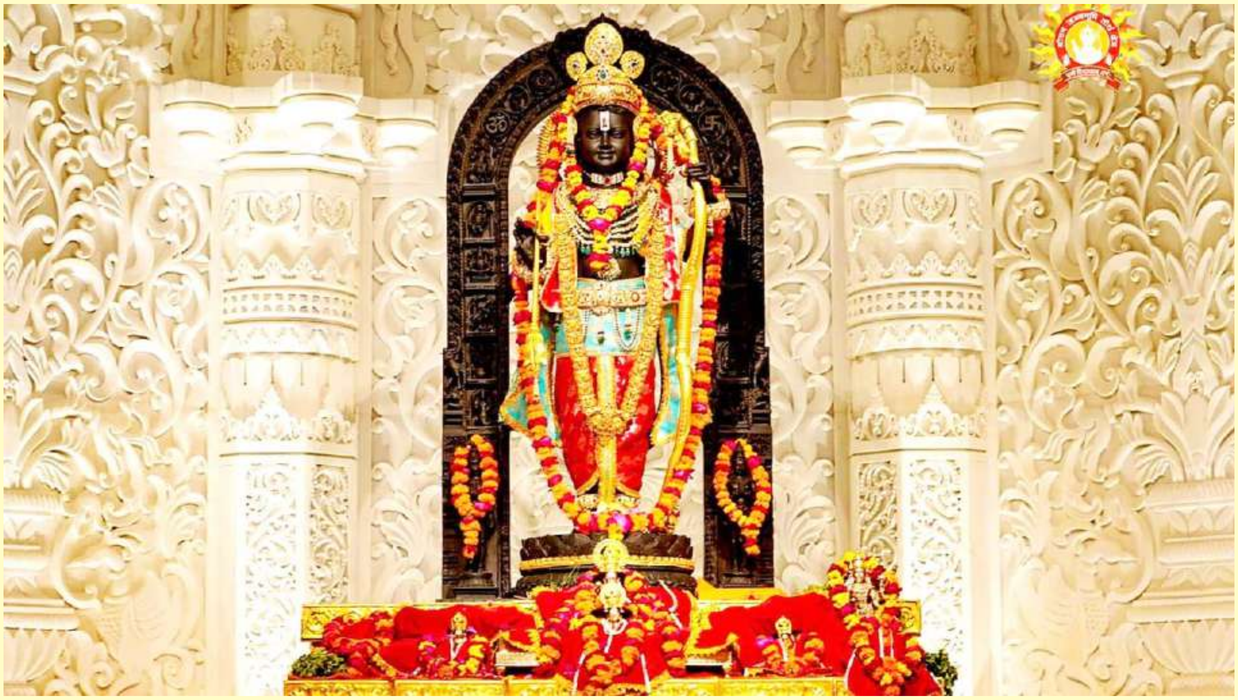

आज सौभाग्य का पावन अवसर है। सैकड़ों वर्षों बाद यह शुभ घड़ी आई है...अयोध्या में अपने जन्मस्थान पर रामलला विराजमान हो रहे हैं। पूरे संसार के सनातनी हर्षित, आनंदित और प्रफुल्लित हैं। समूचे विश्व में जयश्रीराम गुंजायमान है। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हमें यह सुखद दृश्य देखने का अवसर मिला है। श्रीरामजी की गरिमा के अनुरूप मंदिर निर्माण के लिये पीढ़ियों ने पांच सौ वर्ष तक संघर्ष किया इसमें अनगिनत बलिदान हुए।

राम मंदिर हमारी संस्कृति, हमारी आस्था, राष्ट्रीयत्व और सामूहिक शक्ति का प्रतीक है। यह सनातन समाज के संकल्प, संघर्ष और जिजीविषा का ही परिणाम है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में श्रीराम मंदिर निर्माण का सपना साकार हो रहा है। यह उमंग और उत्सव का अवसर है,समूचा समाज उल्लास के साथ खुशियां मना रहा है।

राजा राम प्रत्येक भारतीय और विश्व में व्याप्त सनातनियों के आदर्श हैं। वे सत्यनिष्ठा के प्रतीक, सदाचरण और आदर्श पुरुष के साकार रूप मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। श्रीराम जन्मस्थान मंदिर निर्माण के हर्षोल्लास के साथ हमें भगवान राम के जीवन से प्रेरणा भी लेनी चाहिए। कर्तव्यपथ पर प्रतिबद्ध श्रीराम के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे सबके थे और सबको साथ लेकर चलते थे। सबका विश्वास अर्जित करने के लिये अपने सुखों का भी त्याग कर देते थे। वे जितने वीर थे, मेधावी थे उतने ही सहनशील भी। उन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया और विपरीत परिस्थिति कभी उन्हें विचलित नहीं कर सकती थीं।

प्रजावत्सल राजा राम के लिये न्याय और राजधर्म सर्वोपरि था। इन्हीं अद्‌भुत विशिष्टताओं के कारण श्रीराम को आदर्श राजा कहा जाता है। उनकी राज व्यवस्था में न कोई छोटा था न कोई बड़ा था, सभी समान सम्मान के अधिकारी थे। सबको उनकी योग्यता, क्षमता और मेधा के अनुसार काम के अवसर प्राप्त थे। भेदभाव

श्रीराम ने उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया...

रहित समाज व्यवस्था के लिए रामराज्य का उदाहरण दिया जाता है।

रामराज्य में प्रजा की सुखद स्थिति का रामचरित मानस के उत्तरकांड में उल्लेख है–'दैहिक दैविक भौतिक तापा,राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।' अर्थात् रामराज्य में शासन व्यवस्था इतनी आदर्श थी कि प्रजा समृद्ध, रोग रहित और आपदा रहित थी।

राष्ट्र के सांस्कृतिक एकत्व के लिए श्रीराम जी ने उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया। वे अपना वनवासकाल पूर्ण करके लंका से सीधे अयोध्या नहीं आये। वे उन सभी स्थानों पर गये जो उनका वन गमन मार्ग था। लौटते समय निषाद, किरात, केवट और वनवासी समाज के सभी प्रमुख बंधुओं को अपने साथ लाये थे। अपने राजकाल में श्रीरामजी ने एक–एक व्यक्ति का विश्वास अर्जित किया और उन्हें संगठित किया। उनका पूरा जीवन राष्ट्र और समाज के लिये समर्पित रहा। हमें ऐसे ही राष्ट्र का निर्माण करना है।

लगभग पांच सौ वर्षों की दीर्घ प्रतीक्षा और धैर्य के बाद रामलला पूर्व प्रतिष्ठा के साथ अयोध्या आ रहे हैं। यह प्रगति और परंपरा का उत्सव है। इसमें विकास की भव्यता और विरासत की दिव्यता है। यही भव्यता और दिव्यता हमें प्रगति पथ पर आगे ले जाएगी। माननीय प्रधानमंत्री जी के संकल्प के साथ समाज के संघर्ष और आत्मशक्ति का परिणाम है कि आज रामलला विराजमान हो रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों से आग्रह किया है कि 'जब अयोध्या में प्रभु राम विराजमान हों, तब हर घर में श्रीराम ज्योति जलाएं, दीपावली मनाएं।' रामलला की प्राण–प्रतिष्ठा अवसर पर हमने प्रदेश के शहरों और ग्रामों में रोशनी और दीप जलाने की तैयारी की है। प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों में श्रीराम कथा सप्ताह मनाया जा रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने भव्य राम मंदिर निर्माण के निमित्त एक सप्ताह तक देश के सभी मंदिरों तथा तीर्थ स्थलों पर स्वच्छता अभियान चलाने का आह्वान किया है। हमने मध्यप्रदेश में स्वच्छता से स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से समृद्धि के लिए सभी तीर्थ स्थलों, मंदिरों तथा नदियों में स्वच्छता अभियान चलाया है। प्रभु श्रीराम ने वनवासकाल के लगभग 11 वर्ष चित्रकूट में व्यतीत किये हैं। हमने तीर्थ स्थल चित्रकूट सहित रामवन पथ गमन मार्ग के 1450 किलोमीटर के 23 प्रमुख धार्मिक स्थलों का विकास करने का निर्णय लिया है। इसमें अधोसंरचना विकास के कार्यों के साथ–साथ धार्मिक चेतना, आध्यात्मिक विकास और राम कथा से जुड़े आयामों को भी शामिल किया जाएगा। भगवान कामतानाथ के परिक्रमा पथ का निर्माण कार्य भी शीघ्र प्रारंभ होगा।

अयोध्या में रामलला की प्राण–प्रतिष्ठा का यह ऐतिहासिक क्षण हम सभी के लिये प्रेरणा का अवसर है। भारत के सांस्कृतिक वैभव और समृद्धि के इस पावनकाल में यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने देश को आत्मनिर्भर और सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है, हम इस संकल्प की सिद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत को यदि सशक्त और विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में अग्रणी बनाना है, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि समाज संगठित रहे, समरस रहे, एकजुट रहे और प्रत्येक व्यक्ति आत्मनिर्भर बने। यदि भारत राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाना है, तो पूरे समाज को आत्मनिर्भर बनना होगा, तभी रामराज्य की कल्पना सार्थक हो सकेगी।

आज रामलला अपने जन्म स्थल पर विराजमान हो रहे हैं इस सुमंगल अवसर पर सभी प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई...।

(लेखक म.प्र. के मुख्यमंत्री है।)

साभार - mpinfo.org

सूर्य भगवान को समर्पित हैं

कोणार्क का सूर्य मन्दिर

पुरी में विराजमान हैं भ्राता बलभद्र, बहन सुभद्रा के साथ जगत के पालनहार भगवान जगन्नाथ

अंकित गौड़

भ्राता बलभद्र, बहन सुभद्रा के साथ भगवान जगन्नाथ

उड़ीसा पूर्वी भारत में स्थित एक राज्य है जहां भगवान जगन्नाथ, बहन सुभद्रा एवं उनके बड़े भ्राता बलभद्र विराजमान है। भगवान की मूर्ति बड़ी ही मनमोहक और देखते ही बनती है यह मंदिर उड़ीसा राज्य के पुरी जिले में स्थित है। भगवान जगन्नाथ के विराजमान होने के कारण भी इस जगह को जगन्नाथ पुरी कहा गया है। हम परिवार के 21 सदस्यों ने जगन्नाथ पुरी के दर्शन की रूप रेखा तैयार की और फिर अप्रैल माह का समय यात्रा के लिए चुना। रेल मार्ग द्वारा पूरी हमसफर से भोपाल से जगन्नाथ पुरी पहुंचे। रात्रि विश्राम वहां एक होटल बुक करके किया। अगली सुबह हम पुरी दर्शन के लिए निकल गए। होटल के पास ही एक समुद्र तट था। समुद्र किनारे पहुंचते ही मन समुद्र की लहरों में गोते लगाने लगा। जहां एक तरफ विशालकाय समुद्र को देखकर भय उत्पन्न हो रहा था वहीं उसकी खूबसूरती मन मोह रही थी। समुद्र की लहरों के साथ खेलते मस्ती करते प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य को देखने के बाद हम जगत के पालनहार भगवान जगन्नाथ के दुर्लभ दर्शन के लिए चल दिए। भगवान जगन्नाथ का मंदिर विशाल पत्थरों से बना हुआ है। उस दिन पुरी में हनुमान जयंती का उत्सव चल रहा था। गर्मी का समय था इसलिए वहां के रहवासी बाहर से आए श्रद्धालुओं पर छोटे–छोटे फव्वारों से पानी का छिड़काव कर रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वें इस माध्यम से हमारा स्वागत सत्कार कर रहें हों। साथ ही उस जल से अपना प्रेम न्यौछावर कर रहे हों। जगह–जगह पर मिट्टी के कुल्हड़ में ठंडी–ठंडी छाछ प्रदान की जा रही थी और जय जगन्नाथ के जयकारे वहां लग रहे थे। पुरी शहर के लोग बड़े ही सरल एवं अच्छे व्यक्तित्व के धनी नज़र आ रहे थे। हमने मंदिर में प्रवेश किया। मंदिर में बारीकी से नक्काशियां उकेरी गई थी और उनमें देवी–देवताओं की मूर्तियां विराजमान थी। मुख्य मंदिर के शिखर पर आठ आरों वाला अष्टधातु से निर्मित एक चक्र स्थापित है। मंदिर के मुख्य भाग में भगवान जगन्नाथ अपनी बहन सुभद्रा एवं बड़े भ्राता श्री बलभद्र के साथ विराजमान दिखाई दिए। मंदिर प्रांगण में साक्षी गोपाल एवं अनेक देवी–देवताओं के मंदिर बने हुए हैं। हम सब ने सभी भगवानों के दर्शन किए और प्रसाद ग्रहण किया। हमने अपने मार्गदर्शन के लिए एक गाइड भी नियुक्त किया, जिसने भगवान के साथ–साथ वहां के प्रसाद के चमत्कार की घटना भी बताई। गाइड ने बताया कि यहां रसोई में मिट्टी के पात्र में ही भोजन प्रसादी बनाई जाती है और मंदिर की रसोई में प्रसाद पकाने के लिए सात बर्तन एक दूसरे पर रखे जाते हैं और यह भोजन प्रसादी लकड़ी के ईंधन से ही पकाया जाता है। इस प्रक्रिया में ऊपर रखा बर्तन का खाना पहले पकता है। यहां का प्रसाद कभी झूठा नहीं माना जाता है। मंदिर में झंडा चढ़ाने की अपनी एक अनूठी प्रथा है। पुजारी जी के द्वारा मंदिर के शिखर पर झंडा चढ़ाने को लेकर भी एक किंवदंती है, जिसमें यह कहा जाता है कि मंदिर पर चढ़े झंडे के लहराने की दिशा अर्थात जिस दिशा में हवा चल रही होती है उसके विपरीत झंडा लहराता है। यह कौतुहल से भरा दृश्य हम सब ने भी अपनी आंखों से देखा। इसके

सूर्य मंदिर : चुम्बकीय शक्ति से कोणार्क से गुजरने वाले जहाज स्वतः ही खिंचे चले आते थे।

भगवान जगन्नाथ के दर्शन उपरांत मंदिर के समीप से लिया गया चित्र

पश्चात सूर्य मंदिर जो की पुरी से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, हम सब वहां के लिए चल दिए रास्ते में दोनों और नारियल के वृक्ष बड़े ही आकर्षक लग रहे थे। इस बीच चंद्रभागा नामक समुद्री तट आता है जहां चहल कदमी एकदम शांत है। वहां का शांत वातावरण मन को अलग ही दुनिया में ले जाता है। कुछ ही समय में हम सूर्य मंदिर पहुंच गए, सूर्य मंदिर को कोणार्क मंदिर भी कहा जाता है। वहां के जानकारों (गाईड्स) के अनुसार सूर्य मंदिर का निर्माण लाल बलुआ पत्थरों से तथा काले ग्रेनाइट के पत्थरों से हुआ है। पत्थरों को उत्कृष्ट नक्काशी के साथ उकेरा गया है। वहां के गाइड ने जानकारी देते हुए बताया कि मंदिर तीन मंडपों से बना है, इनमें से दो मंडप ढह चुके हैं। मंदिर में हाथी, घोड़े, फूल, बेल और ज्यामितीय नमूनों की नक्काशी उकेरी गई है। मंदिर भारत के उत्कृष्ट स्मारक स्थलों में से एक है। स्थानीय रहवासियों के कथन अनुसार सूर्य मंदिर के शिखर पर एक चुंबकीय पत्थर लगा था, जिसके प्रभाव से कोणार्क से गुजरने वाले जहाज इस और खिंचे चले आते थे, जिससे उन्हें भारी नुकसान होता था। इसको देखते हुए वह पत्थर निकाल दिया गया। किसने निकाला इसका स्पष्टीकरण नहीं है। यह पत्थर मंदिर पर केंद्रीय षिला का कार्य करता था। जिससे कि मंदिर की दीवारों के पत्थरों का संतुलन बना रहता था। इस चुंबकीय पत्थर को हटाते ही बाकी पत्थरों का संतुलन भी बिगड़ गया और मंदिर का कुछ हिस्सा ढह गया। सूर्य मंदिर के दर्शन के पश्चात हम ट्रेन पकड़ने स्टेशन की ओर चल दिए और हमारा जगन्नाथ पुरी का सफर संपूर्ण हुआ। पुरी से अपने गंतव्य की ओर लौटते हुए उड़ीसा की एक साफ सुथरी छवि हमारे मन में निर्मित थी। समुद्र तट के समीप होने से यह पर्यटकों का आकर्षण का केंद्र बना हुआ रहता है। देश के अतिरिक्त विदेश से भी यहां लोग आते हैं। रंग संस्कृति के पाठक भी अपने परिवार के साथ पुरी दर्शन की यात्रा की योजना बना सकते हैं। जहां भगवान जगन्नाथ के दर्शनों के साथ एक रमणीय स्थल का लाभ आप भी उठा सकते हैं।

सूर्य मंदिर प्रांगण

लेखक उप सम्पादक होने के साथ रंग संस्कृति के ग्राफिक्स डिज़ाइनर है।
सम्पर्क - आईबीडी कॉलोनी, कोलार रोड, भोपाल

नाटक अंधायुग, चौथी सिगरेट के मंचन से आरम्भ...

रंग संस्कृति नाट्य समारोह कर्ण के जीवनकाल से परिचित करा गया

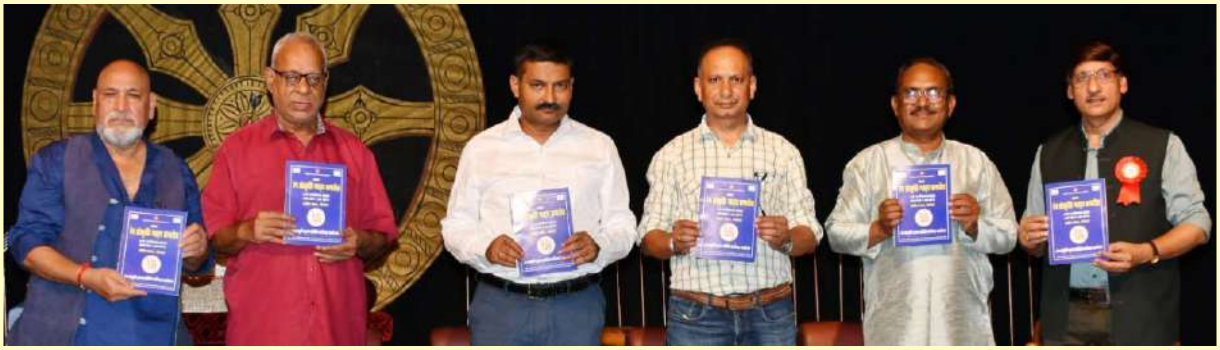

स्मारिका विमोचन : बाये से अशोक बांठिया (मुम्बई), वरिष्ठ पत्रकार गिरिजा शंकर, हरिनारायण चारी मिश्रा (पुलिस आयुक्त), बालेन्द्र सिंह, यतीन्द्र अत्रे, विनय उपाध्याय

दृश्य - नाटक अंधा युग

भोपाल। विधायक विश्रामगृह परिसर में स्थित शहीद भवन में मुंबई की संस्था टीम संपूर्ण के कलाकारों द्वारा अभिनीत एवं कुलविंदर बक्शीश द्वारा निर्देशित नाटक 'कर्ण' की प्रस्तुति के साथ रंग संस्कृति सृजन समिति द्वारा आयोजित तीन दिवसीय 'रंग संस्कृति नाट्य समारोह' का समापन हुआ। अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत को श्रद्धांजलि स्वरुप समर्पित इस प्रस्तुति में कर्ण के जीवन से जुड़ी बातों एवं तथ्यों को दर्शाया गया। नाटक की कहानी रश्मिरथी कर्ण काव्य खंड और मृत्युंजय से ली गई थी। नाटक में विशेष बात यह रही की सभी पात्रों की भूमिका तीन महिला कलाकारों द्वारा निभाई गयी, निर्देशक के अनुसार इसमें देश की लुप्त होती कलाओं जैसे मयूरभंज, मणिपुर मार्शल आर्ट, थांग–ता कलरिपयट्टू, जात्रा और लाईहरोवा नृत्य दिखाएं गए।

दृश्य - नाटक चौथी सिगरेट

8 सितंबर से आरंभ इस नाट्य समारोह में शुभारंभ अवसर पर साहित्य सृजन में श्री सुरेश तन्मय, संगीत निर्माण में श्री मॉरिस लाजरस, एवं रंगमंच में मुकेश पाचोड़े को दिए अवदान के लिए 'रंग संस्कृति प्रतिभा सम्मान' के अंतर्गत शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह के द्वारा सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार श्री गिरजा शंकर ने शहीद भवन के नाट्य सभागार की दर्शक दीर्घा में रंग प्रेमियों की अच्छी संख्या देख प्रसन्नता व्यक्त की, अपने उद्बोधन में उन्होंने रंग निर्देशक, आयोजन संस्थाओं से कहा कि उन्हें दर्शकों के पास स्वयं जाना होगा, माध्यम वे स्वयं चुने। मंच पर विशेष

दृश्य - नाटक कर्ण

अतिथि के रूप में भोपाल के पुलिस आयुक्त श्री हरि नारायणचारी मिश्रा, मुंबई से आमंत्रित अभिनेता श्री अशोक बांठिया के साथ वरिष्ठ रंगकर्मी बालेंद्र सिंह उपस्थित थे। पूर्व में रंग संस्कृति सृजन समिति की अध्यक्ष वंदना अत्रे ने अतिथियों का स्वागत पुष्प कुछ से किया। उसके उपरांत संस्था सचिव एवं एवं पत्रकार श्री यतींद्र अत्रे ने स्वागत उद्बोधन के साथ संस्था की गतिविधियों को उपस्थित दर्शकों से साझा किया। उद्घोषक विनय उपाध्याय ने कुशल संचालन करते हुए कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाया। नाट्य समारोह में प्रथम दिवस की प्रस्तुति के रूप में बालेंद्र सिंह निर्देशित एवं धर्मवीर भारती द्वारा लिखित हम थिएटर समूह के कलाकारों द्वारा नाटक 'अंधा युग' का मंचन किया गया।

शहर के रंगप्रेमी दर्शक जो 3 सितंबर को रवीन्द्र भवन में मंचित इस प्रस्तुति को किसी कारण से नहीं देख पाए, उनके लिए भी धर्मवीर भारती की इस कालजयी रचना को मंच पर फिर अभिनीत होते देखने का अवसर था। द्वितीय दिवस सुप्रसिद्ध अभिनेता एवं रंगकर्मी राजीव वर्मा द्वारा निर्देशित एवं योगेश त्रिपाठी लिखित चर्चित नाटक 'चौथी सिगरेट' का मंचन भोपाल थियेटर्स के कलाकारों द्वारा किया गया।

समारोह में सम्मानित हुए, साहित्यधर्मी और कलाकार

लगभग 45 वर्षों से साहित्य साधनारत भोपाल के भेल संस्थान से सेवानिवृत सुरेश कुशवाह हिन्दी के अतिरिक्त निमाड़ी लोक भाषा के साहित्यकार के रूप में भी जाने जाते रहे हैं। सुरेश जी द्वारा रचित लघु कथा 'रात का चौकीदार' महाराष्ट्र शासन के शैक्षिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत कक्षा नवी में पढ़ाई जा रही है। लघु कथा के अतिरिक्त नवगीत, बाल कविता, दोहे एवं हाईकु विधा में रचनाओं का सृजन करने वाले सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' सांस्कृतिक पत्रिका 'रंग संस्कृति' के साहित्य संपादक हैं। सुरेश जी की अनुपस्थिति में उनकी सुपुत्री साहित्यकार श्रुति कुशवाह ने सम्मान ग्रहण किया।

सम्मान समारोह : साहित्यकार सुरेश तन्मय की सुपुत्री श्रुति

लोक कथाकार प्रवीण चौबे

प्रवीण चौबे– निमाड़ मालवा के वैवाहिक समारोह में बजाए जाने वाले एवं यूट्यूब पर धूम मचाने वाले गीत झामरु गुड्डू ताड़ी पीनऽ नाचो रे... के रचयिता प्रवीण चौबे ने मारो ठुमको...तथा महेश्वर दर्शन जैसे गीतों से प्रसिद्धि पायी है। नाट्य कला में स्नातक प्रवीण को लोकगीत गायन के माध्यम से नगर निगम खरगोन के स्वच्छता ब्राण्ड के रूप में कार्य करने का अवसर मिला है।

मॉरीस लाजरस– वाणिज्य एवं नाट्य कला में स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त मॉरीस लाजरस ड्रामेटिक आर्ट्स में गोल्ड मेडलिस्ट हैं वहीं आकाशवाणी भोपाल के बी हाई ग्रेड कलाकार भी हैं। प्रयाग संगीत समिति से संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के बाद मॉरिस ने 1982 से रंग कर्म के क्षेत्र में अपनी यात्रा आरंभ की और एक अभिनेता होने के साथ संगीतकार के रूप में अपनी पहचान बनाई। आज मॉरिस संगीत, नाटक और ऑडियो के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं। मॉरिस ने 50 से अधिक देशभक्ति एल्बम और रेडियो ड्रामा निर्माण में संगीत दिया है, वहीं उनके संगीत निर्देशन में प्लेबैक सिंगर – अभिजीत घोषाल, हर्षदीप कौर, राजा हसन और विनोद राठौड़ जैसे गायकों ने अपनी आवाज दी है।

संगीतकार मॉरिस लाजरस

रंगकर्मी मुकेश पाचोड़े

मुकेश पाचोड़े – 18 वर्षों से रंगमंच के क्षेत्र में सक्रिय मुकेश पाचोड़े ने मंच पर अभिनय के साथ कई फिल्मों एवं टीवी सीरियल, विज्ञापन फिल्मों में अपने सहज अभिनय की छाप छोड़ी है– चक्की, थाई मसाज, गंगाजल, मेरे देश की धरती, शेरनीऔर लव ऑल में निभाई भूमिकाओं ने मुकेश को एक सशक्त अभिनेता के रूप में पहचान दिलाई है।

नशा मुक्ति, स्वच्छता के प्रति ग्रामीणों को किया जागरूक

खरगोन। ग्राम नन्दगाँव (बगुद) में राष्ट्रीय योजना शिविर आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन पूर्व सरपंच शंकरलाल पाटीदार एवम् पूर्व उ.श्रे.शिक्षक श्री तोताराम कन्हैयालाल अमोदे (आकाशवाणी कलाकार) ने किया। उद्घाटन में उपस्थित प्राचार्य आर. एस.देवड़ा, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुरेश अवासे, मेडम भगोर, ग्राम के शिक्षक, ग्रामवासी, स्वयंसेवक आदि उपस्थित रहें। आकाशवाणी कलाकार तोताराम अमोदे ने व्यक्तित्व विकास पर विचार व्यक्त किये। बौद्धिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों शिविरार्थियों, स्वयंसेवकों ने हिन्दी, राष्ट्रीयगीत, नुक्कड़ नाटक, रैली, प्रभात फेरी निकाली। शिविर में डॉ. सहदेव पाटीदार, डॉ. जी.एस.मसार, डॉ. ललित भटानिया, डॉ. सुनैना चौहान, प्रो. संजय कोचक, दिलीप कर्पे, डॉ. वन्दना बर्वे, डॉ. जी.एस.चौहान, महाविद्यालय परिवार ने ग्रामीणों, स्वयंसेवकों को विकास, अनुशासन, उक्त गतिविधियों को जीवन में अपनाना है। आकाशवाणी कलाकार ने नारी सशक्तिकरण, नशा मुक्ति, स्वच्छता अभियान, कविता, गीत, विचार व्यक्त किये। अमोदे जी ने पिताश्री – कन्हैयालाल– नत्थूजी स्मृति में बेलपत्र का पौधारोपण किया, ग्राम में हायर सेकेन्ड्री, हाट बाजार की मांग है। जनभागीदारी अध्यक्ष श्री दीपक कानुनगो जी एवं समिति सदस्य – श्री डॉ. आर.एम.देवड़ा, डॉ. एस.डी.पाटीदार, डॉ. शैल जोशी, डॉ. जी.एस.चौहान आदि ने समस्याओं का समाधान करने का आश्वासन दिया।

नोटबंदी की तरह हो राष्ट्रभाषा पर निर्णय

इटावा हिंदी सेवा निधि के 31वें भव्य वार्षिक अधिवेशन एवं हिंदी सेवी सम्मान समारोह में बोलते हुए सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति पंकज मित्तल ने कहा कि राष्ट्रभाषा पर भी नोटबंदी की तरह निर्णय होना चाहिए। इसके लिए जन आंदोलन खड़ा किया जाए ताकि सरकार निर्णय लेने को विवश हो। इस्लामिया इंटर कॉलेज, इटावा के प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि व्हाट्सएप ग्रुपों पर सुबह–सुबह गुड मॉर्निंग के संदेश भेजने के बजाय राम–राम, ओम नमः शिवाय जैसे भारतीय अभिवादन भेज कर हिंदी की सेवा करनी चाहिए।

उच्च न्यायालय प्रयाग में राम जन्मभूमि विवाद के निस्तारण और सरकारी अधिकारियों के बच्चों को प्राइमरी स्कूल में भेजना अनिवार्य बनाने जैसे तमाम क्रांतिकारी बयानों से प्रख्यात हुए राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण के सदस्य न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल ने कहा कि हिंदी बोलने में हम स्वाभिमान और गर्व का भाव भूल गए, यहीं से अंग्रेजियत हावी हो गई। उनका कहना था कि केंद्र सरकार को सारे आदेश, निर्देश हिंदी में ही जारी करने चाहिए तभी अंग्रेजी के शोषण से आम जनता को बचाया जाना संभव होगा। उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को बेसिक शिक्षा मातृभाषा में दिलाएं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश न्यायमूर्ति ए आर मसूदी ने कहा कि उच्च न्यायालय में हिंदी नहीं है तो उसकी एक वजह न्यायाधीशों की अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा है। विधानपरिषद के सचिव रहे न्यायमूर्ति अशोक चौधरी ने कहा कि मैने सभी निर्णय हिंदी में ही दिए हैं। निर्णय जब आसान साधारण भाषा में होता है तो पीड़ित वादकारी को न्याय मिलने की खुशी अलग ही दिखती है।

न्यासी व संस्था के महासचिव वरिष्ठ अधिवक्ता प्रदीप कुमार ने कहा कि यह चिंता का विषय है कि हम अपने परिजनों को निमंत्रण–पत्र भी अंग्रेजी में देने लगे हैं। उन्होंने कहा कि हमें निश्चय कर अंग्रेजी के निमंत्रण वाले आयोजनों का बहिष्कार करना चाहिए। इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति राजीव सिंह ने भी विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई' के निदेशक डॉ. मोतीलाल गुप्ता 'आदित्य' ने कई महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए। उन्होंने पूछा कि भारत का संविधान और न्यायपालिका देश की जनता के लिए हैं या जनता संविधान और न्यायपालिका के लिए है? न्यायमूर्तियों को जनता की भाषा सीखनी चाहिए या जनता को न्यायमूर्ति की भाषा सीखनी चाहिए ? उन्होंने पूछा कि यदि भारत 1947 में स्वाधीन हो गया था तो दुनिया के अन्य देशों की तरह यहां के नागरिकों को अपनी भाषा में न्याय क्यों नहीं मिलता? डॉ. गुप्ता ने यह भी कहा कि महाराष्ट्र शासन ने जिस प्रकार दुकानों व्यापारिक प्रतिष्ठानों के बोर्ड आदि वहां की भाषा की लिपि में लिखना अनिवार्य किया है हिंदी पट्टी के राज्य ऐसा क्यों नहीं करते? मुंबई से पधारे न्यायिक क्षेत्र के आंदोलनकारी राजेंद्र ठक्कर ने कहा कि जनता की भाषा में जनता को न्याय न देना अन्याय का मार्ग प्रशस्त करता है।

इंग्लैंड से पधारी कवयित्री डॉ. जय वर्मा ने कवि सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि हिंदी को यूनेस्को में शामिल कराया जाना अति आवश्यक है। मासूम गाजियाबादी, शाहिद इलाहाबादी, कमलेश शर्मा, राजीव

राज, कुमार मनोज, रोहित चौधरी, ऋचा रॉय, सुभाष सहगल, अवनीश त्रिपाठी आदि कवियों ने खूब तालियाँ बटोरी। प्रख्यात कवि रामदरस मिश्र की जन्म शक्ति मनाते हुए इटावा हिंदी सेवा निधि ने उनकी कृति राम दरस 100 बरस का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. नीरजा माधवी, न्यायमूर्ति महेंद्र गोयल, न्यायमूर्ति शुभा मेहता, न्यायमूर्ति उमेशचंद्र शर्मा, व. अधिवक्ता नवीन सिन्हा, कवि मासूम गाजियाबादी, रवि महाजन एवं डॉ. जुगनू महाजन, डॉ. ओम निश्चल,जयवीर सिंह, डॉ. दुखनराम, इंद्रभूषण सिंह. सुभाष सहगल, कवि कुमार मनोज, कवि सुरेशभाई मिश्र, कवि महाराम सिंह, शायर समसुद्दीन सईदी, शारदा शुक्ला, लेखक मुनीष त्रिपाठी, अभिलाषा गुप्ता को हिंदी सेवा के लिए सम्मानित किया गया।

न्यास की महासचिव तथा इलाहाबाद उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रदीप कुमार ने सभी अतिथियों का स्वागत किया संचालन शिक्षाविद डॉ. विद्याकांत तिवारी एवं साहित्यकार डॉक्टर कुश चतुर्वेदी ने किया। समारोह के मुख्य अतिथि केंद्र भू–विज्ञान मंत्री की रिज्यूम ने वीडियो के माध्यम से अपना संदेश प्रेषित किया। न्यासी दिलीप कुमार गुप्त, वरिष्ठ अधिवक्ता ने परिवार की राष्ट्रभाषा की परंपरा को प्रस्तुत किया। न्यायमूर्ति अशोक गुप्ता ने अपने आभार प्रदर्शन में अपने पिता न्यायमूर्ति प्रेम शंकर गुप्त की विनम्र कृतज्ञ शैली की छाप छोड़ी। पधारे अतिथियों व वक्ताओं नें न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त परिवार द्वारा हिंदी सेवा निधि के माध्यम से हिंदी सेवा कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

मैं हिन्दी के जरिए प्रांतीय भाषाओं को दबाना नहीं चाहता,
किन्तु उनके साथ हिन्दी को भी मिला देना चाहता हूं। – महात्मा गांधी

वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई द्वारा रंगसंस्कृति को प्रेषित

हमे लोक भाषाओं की मिठास को बचाना होगा-प्रोफेसर संजय द्विवेदी

बड़वाह, (रंग संस्कृति प्रतिनिधि।) डॉ. एस एन तिवारी स्मृति साहित्य सम्मान समिति एवं सहयोगी संस्थान विचार प्रवाह साहित्य मंच के तत्वावधान में एक गरिमामय समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर पंडित संजय द्विवेदी ने अपने लालित्यपूर्ण उदबोधन में हिंदी और लोकभाषाओं के महत्व को दर्शाया। इसके पूर्व इंदौर के पांच साहित्यकारों डॉ. प्रोफेसर श्रीमती पद्मासिंह, सुप्रसिद्ध दोहाकार प्रभु त्रिवेदी, श्री हर्षवर्धन पंडित, श्रीमती माधुरी व्यास एवं प्रो. गरिमा दुबे को उनके विलक्षण साहित्य सृजन हेतु डॉ. एस एन तिवारी साहित्य सम्मान से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. विकास दवे ने की विशिष्ट अतिथि श्री अरविंद तिवारी अध्यक्ष प्रेस क्लब इंदौर रहे। अतिथियों का स्वागत सुषमा दुबे देवेंद्र सिसोदिया आदि ने किया। आभार प्रदर्शन सर्वप्रिय पत्रकार मुकेश तिवारी ने किया। कार्यक्रम में इंदौर के प्रबुद्ध साहित्यकार उपस्थित रहे।

वर्ष 2023 के साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला जॉन फॉसे को

देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

वर्ष 2023 के प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार घोषित किए जा चुके हैं। चिकित्सा, भौतिकी, रसायन, साहित्य, शांति और अर्थशास्त्र के लिए ये पुरस्कार दिए जाते हैं। नोबेल पुरस्कार सर्वश्रेष्ठता के प्रतीक माने जाते हैं।

साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार 5 अक्टूबर, 2023 को स्विस अकादमी ने घोषित किए। इस बार नार्वे के प्रसिद्ध लेखक और नाटककार जॉन फॉसे (यून फुस्से) को साहित्य का यह पुरस्कार दिया जाएगा। इनको यह पुरस्कार ''उनके अभिनव नाटकों एवं गद्य के लिए मिला, जो अनकही को आवाज देते हैं।'' यद्यपि इन्होंने अन्य विधाओं में महत्वपूर्ण एवं अनूठे कार्य किए हैं। कविता के क्षेत्र में इन्होंने अच्छा सृजन किया है। इनकी रचनाओं का चालीस से अधिक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। वर्तमान में जॉन फॉसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित नाटककार और साहित्यकार हैं।

साहित्य का नोबेल पुरस्कार पाने वाले वह चौथे नार्वेजियन साहित्यकार हैं। इनसे पहले नार्वे के ब्योर्नस्टजर्न ब्योर्नसन को 1903 में, नट हैम्सन को 1920 में और सिग्रिड अनडसेट को 1928 में यह पुरस्कार मिल चुका है। चौथी बार 95 वर्ष बाद यह पुरस्कार नार्वेजियन लेखक के हिस्से में आया है।

जॉन फॉसे ने लगभग 40 नाटक, उपन्यास, कविता संग्रह, लघु कथाएँ, निबंध और बच्चों के लिए किताबें लिखी हैं। इनके लेखन में अनुवाद भी सम्मिलित है। इनके लिखे नाटक विश्व भर में लोकप्रिय हैं और इनके लिखे नाटकों को अत्याधिक पहचान मिली है। जॉन अपने सृजन में छोटे–छोटे वाक्यों में बड़ी और गहरी बात कहने के माहिर हैं।

वर्ष 1959 में 29 सितंबर को नार्वे के पश्चिमी तट पर हाउगेसुंड में जन्मे जॉन फॉसे को वर्तमान में विश्व के सबसे लोकप्रिय नाटककारों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इनके पहले उपन्यास 'रॉड्ट, स्वार्ट (1983, ''रेड, ब्लैक'') ने साहित्य के क्षेत्र में एक नया चलन उत्पन्न किया। यह उपन्यास आत्महत्या जैसे संवेदनशील विषय पर लिखा गया था। इन्होंने 'फॉसे मिनिमलिज्म' नामक शैली में उपन्यास लिखे। जिसे इनके दूसरे उपन्यास 'स्टेंग्ड गिटार' में इस शैली को देखा जा सकता है जो वर्ष 1985 में लिखा गया। इस उपन्यास में एक गतिरोध में फंसी माँ के बारे में उसने खुद को अपने घर से बाहर बंद कर लिया है जहाँ उसने अपने बच्चे को छोड़ दिया है। इनका पहला कविता संग्रह एंगेल मेड वत्न आई अगेन (1986, ''एंजेल विद वाटर इन हिज आइज''), और निबंधों का पहला संग्रह फ्रो टेलिंग थ्रू शोइंग टिल राइटिंग (1989, फ्रॉम टेलिंग थ्रू शोइंग टिल राइटिंग'') था। इस समय तक वह खुद का समर्थन करने के लिए होर्डलैंड में लेखन अकादमी में प्रशिक्षक बन गए थे। फॉसे को अपने उपन्यास नॉस्टेट (1989, बोथहाउस) के प्रकाशन के साथ अपने देश में पहचान मिलनी शुरू हुई थी। नोबेल समिति ने पुरस्कार का निर्णय देते हुए कहा कि जो आम आदमी व्यक्त नहीं कर सकता वे इनके नाटकों और निबंधों में शब्द मिलते हैं। इनका लिखा नाटक 'ड्रीम्स ऑफ ऑटम बहुत प्रसिद्ध हुआ। इनके अन्य नाटक 'समवन इज गोइंग टू कम होम', 'द चाइल्ड', 'द नेम' भी अत्यंत प्रभावशाली हैं। यूरोप में समकालीन नाटककारों में सबसे अधिक नाटक इनके मंचित हुए हैं। इनकी अन्य उल्लेखनीय कृतियाँ 'मेलनकॉली', 'सेप्टोलॉजी' और 'वेकफुलनेस' है। अर्द्ध–आत्मकथात्मक कृति 'सेप्टोलॉजी' एक ऐसे व्यक्ति के बारे में तीन खंडों के सात भागों में है, जो अपने जैसे दूसरे व्यक्ति से मिलता है। यह कृति 1250 पृष्ठ में सृजित है जिसमें एक भी पूर्णविराम नहीं है। इस कृति के तीसरे खंड को वर्ष 2022 में बुकर पुरस्कार के लिए चुना गया था जॉन फॉसे को 21वीं सदी का 'सैमुअल बैकेट' माना जाता है।

जॉन फॉसे ने 1990 और 2000 के अधिकांश वर्षों में नाटक लिखने पर ध्यान केंद्रित किया। 2010 के अंत में फॉसे ने ट्रिलोगिएन (2014, ट्रिलॉजी) लिखना भी शुरू किया जिसमें एंडवेक, ओलाव्स ड्रमर और क्वेल्डस्वव्ड हैं। जिसके लिए 2015 में नॉर्डिक काउंसिल साहित्य पुरस्कार मिला।

वर्ष 2020 के दशक में जॉन फॉसे ने कई नाटक लिखे। जिनमें से कुछ स्लिक वर डेट (2020, ''दिस इज हाउ इट वाज''), स्टर्क विंड (2021, ''स्ट्रॉन्ग विंड''), और आई स्वार्ट स्कोजेन इन (2023, ''इन द) शामिल है। इनमें से सभी का प्रदर्शन नॉर्वेजियन थिएटर ओस्लो में किया गया था। बाद के गद्य में क्विटलिक (2023, ए शाइनिंग) शामिल है, जिसमें एक ड्राइवर नार्वेजियन जंगल में खुद को खो देता है और एक अज्ञात प्राणी के सामने आता है।

अपने सृजन के साथ ही कई अच्छे और अपने प्रिय लेखकों के कार्यों का नाइनोसर्क में अनुवाद किया। जिसमें ऑस्ट्रेयाई कवि जॉर्ज ट्रैकल द्वारा सेबेस्टियन आई ड्रम (2019, सेबेस्टियन ड्रीमिंग), रेनर मरिया द्वारा डुइनोएलिगियर (2022, टेन एलेगीज) शामिल है।

हिंदी में पहली बार 2016 में जॉन फॉसे की कृति का प्रकाशन हुआ था। तेजी ग्रोवर द्वारा इनकी कृति 'डेट अर ऐलस' का 'आग के पास अलिस है यह' नाम से अनुवाद किया गया है। इन्हें नोबेल पुरस्कार के तहत 11 मिलियन स्वीडिश क्राउन (लगभग 1मिलियन डॉलर) की नकद राशि और प्रतीक चिन्ह प्रदान किया जाएगा। आधिकारिक तौर पर इन्हें अन्य नोबेल पुरस्कार विजेताओं के साथ 10 दिसंबर को अल्फ्रेड नोबेल की पुण्य तिथि पर आयोजित एक समारोह के दौरान मिलेंगे।

नोबेल पुरस्कारों की शुरुआत से लेकर 2023 तक 9 भारतीय या भारतीय मूल के विद्वानों को भी यह पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। 1913 में साहित्य के लिए रबीन्द्रनाथ टैगोर, 1930 में भौतिकी के लिए सर सी वी रमन, 1968 में हर गोविंद खुराना को मेडिसिन, मदर टेरेसा को 1979 में शांति, सुब्रमण्यम चंद्रशेखर को 1983 में भौतिकी, अमत्य सेन को 1998 में अर्थशास्त्र, वेंकेटरमन रामाकृष्णन को 2009 में रसायन, कैलाश सत्यार्थी को 2014 में शांति और अभिजीत बैनर्जी को 2019 में अर्थशास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार मिल चुका है।

ग्राम-कैतहा, पोस्ट-भवानीपुर
जिला-बस्ती 272124 (उ. प्र.), मो : 7355309428

रासेयो शिविर में छात्राओं ने जगाई राष्ट्रप्रेम की अलख

खरगोन। शासकीय कन्या महाविद्यालय खरगोन में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का शिविर शहर से 05 किलो मीटर दूर मांगरूल गांव में आयोजित किया गया। शिविर का आरंभ संस्था के प्रभारी प्राचार्य डॉ. ए. के. गोखले एवं पूर्व प्राचार्य डॉ. आर के यादव ने किया। इस अवसर पर डॉ. एस. एच. जाफरी एवं प्रो. ऐ जे सोलंकी भी उपस्थित थे। सात दिवस तक चलने वाले इस शिविर में छात्राओं ने प्रतिदिन सुबह प्रभात फेरी एवं गांव मे सफाई अभियान चलाया। गांव के लोगों को स्वच्छता तथा नशा मुक्ति की तालीम दी। संध्याकाल चार बजे बौद्धिक सत्र का आयोजन किया जाता था। शिविर में जानी मानी हस्तियों ने राष्ट्र प्रेम की अलख जगाई। सांस्कृतिक कार्यक्रम में गांव की महिलाओं को भी आमंत्रित किया गया। बौद्धिक सत्र में आकाशवाणी कलाकार श्री तोताराम कन्हैयालाल आमोदे ने भाग लिया। लोगों को नशे से मुक्ति कैसे दिलाई जाए इस संबंध में बहुत सी बातें बतायी तथा निमाडी भाषा में एक कवीता भी सुनाई। आमोदे जी ने अपने अनुभवों को भी प्रेरणास्वरूप साझा किया। शिविर में विशेष रूप से आमंत्रित डॉ. गोनेकर ने छात्राओं को पर्यावरण विषय पर जागरूक किया। डॉ. सेवंती डावर ने छात्राओं से रक्तअल्पता तथा स्वास्थय से जुडी बातों पर गंभीर चर्चा की। अन्य प्राध्यापकों में श्री सावनेर, श्रृद्धा महाजन, संगीता खरे एवं रजिया खान ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन एन एस एस अधिकारी डॉ. रफिया अज़ीज ने किया।

जीते सबका दिल वही है मनीषा पाटिल

सुनील उपमन्यु

एक ऐसा नाम जो शहर के जिव्हां पर रहता है। जिनके बिना कार्यक्रम अधूरे प्रतीत होते है। जिनका सुमिरण कर किया जाता है गुड फील वे हैं– मनीषा पाटिल। श्रीमती मनीषा पाटिल अपने कर्तव्य का निर्वहन उत्कृष्ट कन्या छात्रावास में अधीक्षक के रूप में कर रही है। वे मराठा सेवा संघ की राष्ट्रीय महासचिव अभी बनी है। मनीषा राज्य आनन्द संस्थान मध्यप्रदेश की मास्टर ट्रेनर और अन्य कई क्षेत्रों से जुड़ी है। कई बार तो वे स्वयं भी भूल जाती है कि कौन कौन सी संस्थाए उनके पास है ? ये सब उनकी कर्मठता, कर्तव्यनिष्ठा निस्वार्थ सेवा का प्रतिफल है। उनकी व्यस्तता का राज यही है। ये कोशिश करती है की सभी कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति रहे। मनीषा जी संस्कार भारती की सदस्य है। विवेकानन्द व्याख्यान माला समिति के सदस्य, लायन्स क्लब खण्डवा की पूर्व सचिव रह चुकी है। सम्मानों की बात करे तो अखिल भारतीय मातृ सम्मेलन हेतु उज्जैन में राज्यसभा उपसभापति श्रीमती – सुमित्रा वाल्मीकि जी द्वारा हम फाउंडेशन मालवा प्रांत की अध्यक्ष मनीषा पाटिल का सम्मान किया गया। बड़े से बड़े सम्मान प्राप्त करने वाली मनीषा पाटिल ने छोटे से छोटा 'ज्योति चौरे स्मृति' सम्मान भी सहज स्वीकार कर लिया। जिसके लिए संस्था ककस याने कवि कला संगम परिवार उनका आभारी है। उनका व्यक्तित्व विराट है, सरल सरस एवं सौम्य स्वभाव की है। विकट एवं विपरीत परिस्थितियों में भी उनके मुख पर मुस्कान तैरती रहती है। जो उनके धैर्यता को दिखाती है। उनका जन्मदिन भी प्रत्येक संस्था मनाती है ये उनका जुड़ाव का प्रतिफल है। मनीषा पाटिल जी का मुखड़ा सदैव दैविक शक्ति से भरपूर दिखता है। अपने शासकीय कर्तव्यो का निर्वहन करते हुए समय निकाल समाज सेवा भी करती रहती है। लिखने को तो बहुत कुछ उन पर लिखा जा सकता है ,किसी भी पत्रिका का एक अंक ही उनके द्वारा किए गए सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यो पर निकल सकता है। मैं अपना सौभाग्य समझता हूं कि उन पर कलम चलाने का सुवसर प्राप्त हुआ। अंत मे यही कहूंगा–भावुक एवं बड़ा कोमल है, इनका दिल, निरन्तर सामाजिक कार्यो में प्राप्त करती रहे सम्मान मनीषा पाटिल।

साहित्यकार/हास्य कवि
खण्डवा

तानसेन संगीत समारोह में विनय उपाध्याय ने राग कथा पर दिया व्याख्यान

यूनेस्को द्वारा घोषित संगीत नगरी ग्वालियर में आयोजित तानसेन संगीत समारोह 2023 में टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र, आरएनटीयू के निदेशक श्री विनय उपाध्याय ने अतिथि वक्ता के रूप में 'राग कथा' विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर विनय ने उपस्थित संगीत चिंतकों और शोधार्थियों को अपनी हाल ही प्रकाशित किताब 'कला की छांव' और अन्य सांस्कृतिक साहित्य भेंट किया। तानसेन की मजार और मानसिंह तोमर संगीत एवम् कला विश्वविद्यालय में गायन – वादन की सभाओं और 'वादी–संवादी' सत्र में श्री उपाध्याय ने संगीत के नवाचारों और उसके बदलते परिदृश्य पर लंबा संवाद किया। इस अवसर पर ग्वालियर कमिश्नर श्री दीपक सिंग और संगीत विवि के कुलपति डॉ. एस नाहर और संस्कृति विभाग के कला निदेशक जयंत माधव भिसे सहित अनेक शोधार्थी और संगीतकार उपस्थित थे।

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बंधित विवरण
घोषणा फार्म - 4

1 प्रकाशन स्थल	भोपाल
2 प्रकाशन अवधि	त्रैमासिक
3 मुद्रक का नाम	वन्दना अत्रे
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	यनी हाउस, 141 अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल
4 प्रकाशक का नाम	वन्दना अत्रे
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	यनी हाउस, 141 अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल
5 सम्पादक का नाम	वन्दना अत्रे
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	यनी हाउस, 141 अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल
6 उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों	वन्दना अत्रे

मैं वन्दना अत्रे एतद् द्वारा घोषित करती हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर
वन्दना अत्रे
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

अभूतपूर्व घटनाओं का वर्ष रहा 2023

मध्यप्रदेश को अभूतपूर्व जनादेश के साथ नए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का नेतृत्व मिलना, राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की ऐतिहासिक प्रदेश यात्राओं, अनूठी विकास योजनाओं, जी–20 की ऐतिहासिक बैठकों, इंदौर में 17वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन, सातवें ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट जैसे प्रतिष्ठित आयोजनों के कारण वर्ष 2023 मध्यप्रदेश के लिए अभूतपूर्व घटनाओं का वर्ष बन गया। विकास के कई क्षेत्रों में मध्यप्रदेश देश में आगे रहा।

वर्ष 2023 की शुरुआत से ही प्रदेश के समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास में उल्लेखनीय घटनाएं दर्ज होना शुरू हो गई थीं। वर्ष के आखिरी महीने में 13 दिसंबर को डॉक्टर मोहन यादव ने मध्यप्रदेश के 19वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली और 25 दिसंबर को 28 सदस्यों का मंत्रिमंडल बना। इसके साथ ही नई सरकार, नए ऊर्जावान नेतृत्व के साथ नई आशाओं से भरे 2024 में प्रवेश कर रही है।

वर्ष 2023 की शुरुआत इंदौर में आयोजित 17वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन के शुभारंभ के साथ हुई जिसका शुभारंभ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किया और समापन राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने किया।

इसके बाद फरवरी महीने की शुरुआत में आवासहीन और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के हितों के लिए स्वराज नीति 2023 अस्तित्व में आई। खेलो इंडिया यूथ गेम्स का गरिमापूर्ण आयोजन हुआ। मध्यप्रदेश ने 39 स्वर्ण पदक जीते। भोपाल के पास इस्लामनगर को 308 सालों बाद अपना असली नाम जगदीशपुर और खोई पहचान मिली।

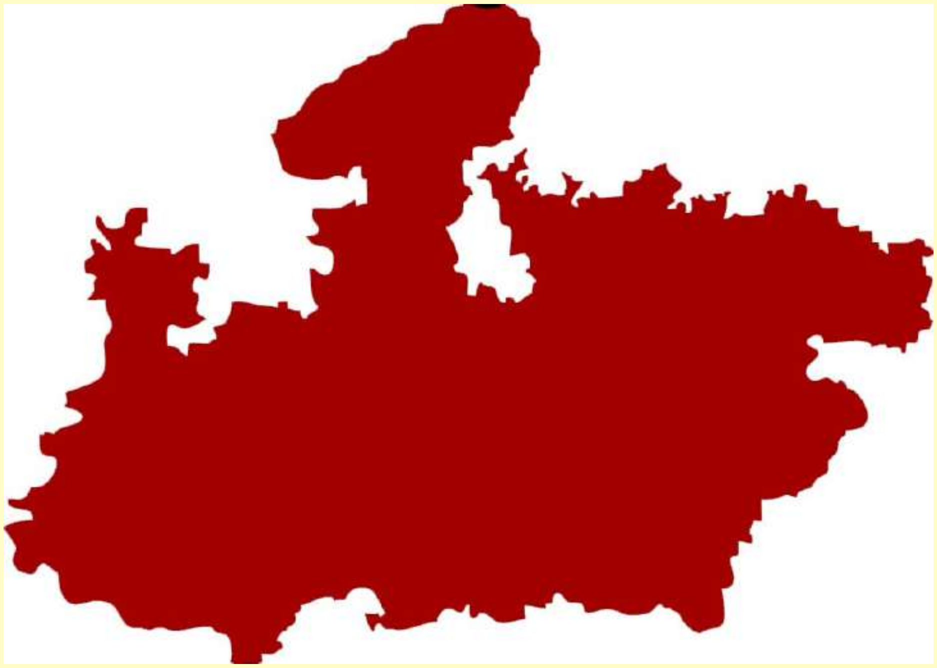

इंदौर नगर निगम ने सौर ऊर्जा के लिए ग्रीन बॉन्ड जारी कर इतिहास बनाया। इसी महीने एक और रिकॉर्ड बनाते हुए हैं मध्यप्रदेश ने 2657 अमृत सरोवर बनाकर देश में दूसरे नंबर पर रहा।

मार्च महीने की शुरुआत सातवें अंतर्राष्ट्रीय धर्म–धम्म सम्मेलन के साथ हुई जिसका उद्घाटन राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने किया। इसके अलावा फसल क्षति की राहत राशि बांटने में देश में मध्यप्रदेश सबसे आगे रहा। पवित्र क्षेत्रों की सूची में दमोह के कुंडलपुर सिद्ध क्षेत्र और श्री जागेश्वर नाथ क्षेत्र को शामिल कर पवित्र क्षेत्र घोषित किया गया।

इसके बाद अप्रैल माह में मध्यप्रदेश राज्य मिलेट मिशन योजना लागू करने का निर्णय हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी रीवा में आयोजित राष्ट्रीय पंचायत राज दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए और गांव की सामाजिक, आर्थिक और पंचायत राज व्यवस्था को मजबूत बनाने संकल्प दोहराया। जल जीवन मिशन में बुरहानपुर जिला देश में आदर्श जिला बना। इसी महीने में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के प्रसिद्ध मन की बात का 100 वां एपिसोड पूरा हुआ।

मई महीने की शुरुआत में ही 11 लाख से ज्यादा डिफाल्टर किसानों का 2123 करोड़ रुपए का कर्ज माफ हुआ। जल संसाधनों के प्रबंध–संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रदेश को सर्वश्रेष्ठ राज्य का पुरस्कार मिला। मुख्यमंत्री

तीर्थ दर्शन योजना में नया आयाम जोड़ते हुए देश में पहली बार बुजुर्गों को विमान से तीर्थ यात्रा कराई गई। उन्हें प्रयागराज तीर्थ ले जाया गया।

राज्य सरकार ने एक और महत्वपूर्ण फैसला लेते हुए 31 दिसंबर 2022 तक की सभी अनाधिकृत कॉलोनियों को वैध कर दिया। साथ ही अवैध कॉलोनियों के बनने पर रोक लगा दी। मई के आखिर में 2752 कॉलोनियां को वैध घोषित किया गया। साथ ही अतिक्रमण से मुक्त 23000 एकड़ भूमि के उपयोग के लिए स्वराज कॉलोनी योजना लागू की गई। शहरी अधोसंरचना के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण इंदौर और भोपाल से मेट्रो रेल का ट्रायल रन हुआ। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना की कनेक्शनधारी बहनों को गैस रिफिल 450 रूपये में उपलब्ध कराने का ऐतिहासिक निर्णय भी इसी माह हुआ।

जून के महीने में 12वीं क्लास में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को ई–स्कूटी देने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। करीब 9000 विद्यार्थियों को ई–स्कूटी मिली। सहकारिता आंदोलन की दिशा में आगे बढ़ते हुए मध्यप्रदेश की सहकारिता नीति लागू की। अधोसंरचना विकास के लिए भी जून का महीना महत्वपूर्ण रहा जब प्रधानमंत्री से श्री नरेंद्र मोदी ने रानी कमलापति स्टेशन से पांच वंदे भारत ट्रेन को रवाना किया।

जुलाई महीने की शुरुआत में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने सर जीवाजी राव सिंधिया म्यूजियम ग्वालियर का अवलोकन किया। पूरे प्रदेश में 16 जुलाई से 14 अगस्त तक विकास पर्व मनाया गया, जिसमें विकास कार्यों से आम लोगों को परिचित कराया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शहडोल के लालपुर से राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन की शुरूआत की।

जुलाई का महीना प्रदेश के समकालीन इतिहास में इसलिए उल्लेखनीय रहेगा कि इस महीने में नीति आयोग ने विश्लेषण में बताया कि मध्यप्रदेश के एक करोड़ 36 लाख लोग गरीबी रेखा से बाहर आ चुके हैं। डिजिटल लैंड रिकॉर्ड मैनेजमेंट में भी मध्यप्रदेश ने बड़ी उपलब्धि हासिल की। वन्य जीव प्रबंधन में मध्यप्रदेश ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए टाइगर स्टेट दर्जा हासिल कर अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाई।

अगस्त महीने की शुरुआत में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने भोपाल में लोक जनजाति अभिव्यक्ति के पर्व 'उत्कर्ष और उन्मेष' का शुभारंभ किया। इसी महीने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 1000 करोड़ रूपयों से 34 अमृत भारत रेलवे स्टेशनों का विकास करने का संकल्प दोहराया। प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना में भी मध्यप्रदेश आगे रहा। प्रदेश को 1074 गांवों के समग्र विकास के लिए 210.90 करोड़ रुपए मिले। प्रदेश में सामाजिक समरसता के युग की शुरूआत करते हुए प्रधानमंत्री ने सागर जिले के बड़तूमा में संत रविदास स्मारक और कला संग्रहालय का भूमि पूजन किया।

सितंबर महीने की शुरुआत में महिला स्वयं–सहायता समूहों द्वारा संचालित देश के पहले टोल प्लाजा आगर मालवा के विश्व धरोहर चाचा खेड़ी उज्जैन के कायदा और छतरपुर के संजय नगर में शुरू हुए। विश्व प्रसिद्ध सांची देश की पहली सोलर सिटी बना। यहाँ 63 किलोवाट क्षमता के सौर संयंत्र घरेलू छतों पर लगाए गए। इससे वार्षिक 14000 टन से ज्यादा कार्बन–डाइऑक्साइड के उत्सर्जन में कमी आएगी। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना आवास योजना इसी महीने लागू हुई। मध्यप्रदेश सांख्यिकी आयोग बनाने वाला पहला राज्य बना। आध्यात्मिक गौरव को स्थापित करते हुए ओंकारेश्वर में आदिगुरू शंकराचार्य की 108 फीट ऊँची प्रतिमा की स्थापना हुई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बीना में पेट्रो–केमिकल काम्प्लेक्स में 51 हजार करोड़ रूपये लागत की परियोजनाओं का शिलान्यास करते हुए कहा कि भारत को विश्व की प्रथम तीन अर्थव्यवस्थाओं में लाने में मध्यप्रदेश की भूमिका होगी।

मध्यप्रदेश को शामिल कर पांच राज्यों में चुनाव की घोषणा के साथ 9 अक्टूबर को आचार संहिता लागू हुई और 17 नवम्बर को मतदान हुआ एवं 3 दिसम्बर को परिणाम आए। सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी को 163 विधानसभा सीटों पर विजय मिली। चुनाव में मतदान का प्रतिशत 77.15 रहा। महिलाओं का मतदान प्रतिशत 76.03 रहा। साल के अंतिम सप्ताह में 1282 तबला वादकों ने ग्वालियर में एक साथ वादन कर गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में स्थान दर्ज किया। डॉ. मोहन यादव ने 25 दिसम्बर को तबला दिवस घोषित किया।

साभार - mpinfo.org

रावण राम को अपना दुश्मन क्यों मानता था ?

सुखदेव राव चौरे

सुखदेवराव चौरे

धनुष यज्ञ में जब रावण धनुष को हिला तक न सका, ऐसे धनुष को राम द्वारा क्रीड़ा कृत तोड़ना की घटना रावण की बुद्धि को चमत्कृत कर गई। उसे यह विश्वास हो चला कि उसके राक्षस कुल का उद्धार और समस्त राक्षस नगरी लंका का उद्धार राम द्वारा ही संभव है। अतः राम को युद्ध के लिए उकसाये बिना, उद्धार की कोई राह, रावण को नहीं सूझी। यदि वह राम को लंका के लिये आमंत्रित करता तो राम अतिथि होते। और उस जमाने की युद्ध नीति अनुसार, अतिथि को अपमानित कर युद्ध के लिये उसकाना, रावण को उचित प्रतीत नही हुआ। रावण को एक ही नीति उचित प्रतीत हुई। वह थी राम से विरोधी भक्ति। भक्ति साधना का एक प्रकार विरोधी भक्ति भी शार योक्त होकर मान्य है। रावण ने यह नीति अपनाई। और मौके की तलाश में रहा कि, राम को युद्ध के लिये कैसे उकसाया जाय। इसके लिये ऋषि मुनियों के यज्ञ में, अपनों दूतों द्वारा विघ्न डालना शुरू किया। ऋषियों के आग्रह पर, राजा दशरथ ने अपने दोनों पुत्र राम और लक्ष्मण के ऋषियों के आश्रम की सुरक्षा के लिये भेजा। दोनों भाइयों में से राम ने कई राक्षसों का युद्ध में जीवनोद्वारा किया। इस प्रकार कुछ शांति स्थापित हुई। रावण को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्ति की कुछ किरणें दृष्टि गोचर हुई।

जब रावण को ज्ञात हुआ कि राजा दशरथ ने राम को 14 वर्ष का वनवास दिया है, उसकी तो बांखे खिल गई। बिन मांगे मुराद पूरी होते दिखाई दी। राम यदि 14 वर्ष के लिये लंबे समय के लिये पत्नि सीता और भाई लक्ष्मण के साथ, वन में रहेंगे तो राम को योजनाबद्ध तरीके से, लंका में आने के लिये, बाध्य कर सकता है। रावण जैसे विद्वान जानता था कि, भगवान से, अपने भक्त का अपमान सहन नही होता। अतः रावण भाई विभीषण जो राम का भक्त था सोत–जागते, उठते–बैठते, राम–नाम जपता रहता था, उसको अपमानित किया। वह भी लात मारकर, लंका से निष्कासित किया। इससे अधिक अपमान और क्या हो सकता था। लेकिन राम की ओर से, लंका आकर, भक्त के अपमान का बदला लेने की कोई प्रतिक्रिया, नजर न आई, तो अन्य कार्य योजना पर विचार करने पर मजबूर होने लगा।
इससे रावण को इतना तो संतोष हुआ कि लंका से राक्षस राज्य का अंत निकट है।

लेकिन राम का लंका आगमन का कोई संकेत रावण को नही मिला। रावण को विचार आया कि, यदि वह सीता को हरण कर लंका ले आये, तो राम उसकी खोज में लंका अवश्य आयेंगे, जिससे उसके उद्देश्य की पूर्ति होगी। लेकिन राम और लक्ष्मण की सुरक्षा से सीता का हरण, एम महान कठिन कार्य था। रावण ने सोचा, यदि किसी प्रकार राम और लक्ष्मण को, सीता की सुरक्षा से, अल्प समय के लिये भी हटाया जाय तो वह सरलता से सीता को हरण कर, लंका ला सकता है।

महिला मनोविज्ञान का ज्ञाता (रावण) जानता था कि, किसी महिला को चित्ताकर्षक कोई भौतिक वस्तु या जीव पसंद आ जाय तो, उसे प्राप्त कराने के लिये, अपने अभिभावक (जो भी हो) से आग्रह करती है।

अतः सीता के समक्ष चित्ताकर्षक, स्वर्ण–मृग की उपस्थिति उपयुक्त लगी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये,

राक्षस कुलोत्पन्न "मारीच" राक्षस उपयुक्त प्रतीत हुआ, क्योंकि वह कई प्रकार के रूप – शरीर आदि तत्काल धारण करने, बदलने का विशेषज्ञ था। यदि मारीच जीवित राम की पकड़ में आ जाता है, तो राम के आश्रम में, सीता का मातृत्व और नित्य, इन भौतिक नैत्रों से, राम के सौंदर्य–रूप का रसपान, करते रहने का पुण्य–लाभ प्राप्त करेगा और यदि राम के बाण से आहत होकर मृत्यू को प्राप्त होता है, तो इस भौतिक राक्षस देह से मुक्त होकर दिव्य दैविक धाम को जावेगा तथा राम की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर, सीता का हरण वह (रावण) आसानी से करके, सीता को लंका ले जाने में सफल होगा। ताकि राम सीता की खोज में लंका अवश्य आयेंगे और रावण का उद्देश्य राम का लंका आगमन पूरा होगा।

मारीच ने सुन्दर आकर्षक "स्वर्णमृग" रूप धारण किया। सीता का दर्शन करते हुए खड़ा हो गया। सीता ने राम से आग्रह किया कि, इस "स्वर्णमृग" को जिंदा या मुर्दा, पकड़कर लाकर मुझे दें। जैसे ही राम ने मृग को पकड़ने का प्रयत्न किया, मृग ने छलांग लगाई, कुछ दूर गया और दौड़ लगा दी। राम धनुषबाण लेकर मृग को पकड़ने हेतु दौड़े, मृग आगे आगे भागता रहा। जैसे जैसे राम मृग को पकड़ने जाते, मृग थोड़ी दूर जाकर फिर रूक जाता था। ऐसा करते करते राम कुछ दूर चले गये, तब रावण ने, सीता के अपहरण का प्रयत्न किया, तो देखा कि सीता, लक्ष्मण के संरक्षण में है। अतः उसका हरण कठिन है, इसी बीच राम के बाण से मारीच घायल हुआ। मारीच राम की आवाज
में जोर से चिल्लाया "हा लक्ष्मण"। राम को किसी कष्ठ में होना समझकर लक्ष्मण, राम के आवाज की दिशा में दौड़ गये। सीता को अकेली देख रावण उसका अपहरण कर अपने स्वचलित विमान से लंका की ओर उड़ चला।

लंका पहुंचकर, रावण सीता को अपने उपवन के अशोक वृक्ष के नीचे बैठा दिया। सीता को यदि, अपने सर्व सुविधा युक्त महल में ठहराता तो सीता का आर्तनाद, राम को सुनाई नही देता। और राम का लंका आगमन नही होता।

यहां रावण ने कुछ राक्षसियों को, कष्ट पहुंचाने के लिये सुरक्षा के बहाने छोड़ा। ताकि सीता का आर्तनाद, राम को लंका आने के लिये बाध्य करें। सीता, कष्टों से आहत होकर, कोई अनुचित कदम न उठा ले, अतः रावण ने मातृस्वरूपा, राक्षसी त्रिजटा को धीरज बंधाते रहने के लिये रखा। सीता जब भी राक्षसी सेविकाओं के कारण अधिक दुखी होकर व्याकुलता में, राम पुकारती, त्रिजटा तभी उसे धीरज रखने को समझाते हुए, राम का लंका आकर, सीता को सुरक्षित ले जाने का आश्वासन देते रहती थी।

इसी अवधि में सीता की खोज में हनुमान लंका आ गये। विभीषण के कथन अनुसार हनुमान, अशोक वाटिका गये। अशोक वृक्ष के पत्तों की आड़ में बैठकर, राम की याद में, सीता का आर्तनाद सुनते रहे। राक्षसी सेविकाओं द्वारा सीता को प्रताड़ना रावण द्वारा सीता को कटु वचन सब कुछ हनुमान देखते–सुनते रहे। राम के विछोह का सीता का विलाप भी सुना। सब कुछ श्रवण कर, हनुमान ने, राम के लंका आगमन का संकेत पाया। रावण व अन्य सेविकाओं के जाने के बाद हनुमान सूक्ष्म रूप में, सीता के समक्ष, विनीत भाव से उपस्थित हुए। राम–लक्ष्मण के हाल सुनाये तथा राम–लक्ष्मण का वानर सेना के साथ, लंका शीघ्र आगमन तथा सीता को लंका से ले जाकर, राम– सामीप्य के समय के आगमन आदि सुनाकर, सीता को सांत्वना दी। भूख की तुष्टि के लिये, सीता से अनुमति लेकर फल आदि प्राप्ति के लिये हनुमान रावण की अशोक वाटिका उजाड़ने लगे। सामने जो भी राक्षस आया, हनुमान, न उसे इस भौतिकी राक्षसी देह से मुक्ति दिलाई। रावण ने जब अशोकवाटिका के यह हाल सुने, तो अंदाज

लगा लिया कि हनुमान अपने उछल–कूद भरे वानर–स्वभाव द्वारा लंका को भस्म कर सकता है। इस प्रकार रावण भौतिक बंधनो से मुक्ति पा सकेगा। रावण ने हनुमान की पूंछ लंका के निवासियों के वस्त्रादिक आदि से लपेट कर, तेल डाल कर आग लगा दी। हनुमान ने अपनी उछलकूद स्वभाव द्वारा समस्त लंका को राख में बदल दी। रावण संतुष्ट हुआ कि राम–भक्ति में बाधा स्वरूप यह भौतिक पदार्थ अब नही रहे। संत कबीर का भी कथन था कि ईसमिलन की इच्छापूर्ति चाहते हो तो, अपने एक मात्र झोपड़े को भी आग लगाकर, भीख के कटोरे के साथ, उसके संग चले। रावण धीरे–धीरे अपने राक्षस योनि प्राप्त संबंधियों को राम से युद्ध के लिए एक–एक कर भेजता रहा। सबको जुटाकर राम से युद्ध के लिये नहीं भेजा, क्योंकि यदि ऐसा करता तो राम को सबसे समग्र रूप से युद्ध के लिये अधिक श्रम करना पड़ता। कोई भी सिद्ध भक्त, अपने उद्देश्य के पूर्ति के लिये अपने आराध्य को किसी प्रकार का अधिक कष्ट देना नही चाहता। जब सभी राक्षस योनि प्राप्त कुटुंबी + संबंधी, राम के हाथों, घायल हो मुक्ति पा गये, तब रावण अंत में वह स्वयं, राम से युद्ध के लिये राम के समक्ष आया। यदि वह, राम के समक्ष पहले आता तो, रावण का अपने रिश्तेदार संबंधियों आदि को मुक्ति के उद्देश्य का सपना अधूरा रह जाता।

राम के बाण से आहत रावण, जब युद्ध के मैदान में गिर गया, तब राम को अपने समक्ष उपस्थित, इन भौतिक नेत्रों और संपूर्ण आत्मा को केन्द्रित कर, देखता रहा। इस प्रकार अपनी विरोधी भक्ति मार्ग द्वारा भौतिकी राक्षसी देह से मुक्ति पाने में सफल हुआ। राम ने रावण की भौतिक देह की अंतिम क्रिया, भाई विभीषण द्वारा ही पूर्ति कराई व उसे लंका के राजसिंहासन पर पदासीन (स्थापित) किया।

रावण को अपने उद्देश्य से हटाने के प्रयास जटायु, मारीच, हनुमान, मंदोदरी, अंगद, विभीषण, माल्यवान, लक्ष्मण, शुक्रदूत, प्रहस्त, कालनेमी, कुंभकर्ण ने किया। लेकिन रावण अपनी राम से विरोधी भक्ति द्वारा मुक्ति प्राप्ति के पथ से नही डिगा। न अपने भक्ति मार्ग का कोई प्रचार किया। यह है – दृढ़ भक्ति मार्ग का उदाहरण जबकि वर्तमान का मानव स्व द्वारा भक्ति के उद्देश्य का कारण प्रचारित करता है। उत्सव मनाता है, भक्तिमार्ग में, तर्क, वितर्क, सुतर्क, कुतर्क, आदि एकान्त या सार्वजनिक तौर पर करता रहता है। भक्ति मार्ग पर चलने की शिक्षा, तो रावण से सीखनी चाहिये।

मेरी दृष्टि में यह संपूर्ण घटनाक्रम, रावण की राम– भक्ति का प्रतीक है, न कि राम के प्रति किसी प्रकार की शत्रुता का।

पाठकगण, मेरे उक्त विचारों से कितने सहमत/असहमत है?ज्ञात नही है। मैं प्रतीक्षारत रहूंगा।

यही हाल कंस के थे, लेकिन वह कृष्ण का सतत स्मरण रूप दर्शन "भय" के कारण करता था। प्रहलाद हर वस्तु दिशा प्राणी में ईश्वर का ही स्वरूप देखता था। भक्त सूरदास, कृष्ण को बालरूप में क्रीड़ा करते देखता था। यही हाल भक्त रैदास के थे। कबीरदास, किसी भी वस्तु को अपना न मानकर, ईश्वर की ही मानता था। मीरा संपूर्ण रूप से कृष्ण का अपना पति मानकर हर कार्य को उनकी आज्ञा मानकर कार्य करती थी। ऐसे कई उदाहरण है जिसमें भक्त प्रभु (या अपने ईष्ट देव) के सतत स्मरण में लीन होकर रहता है और प्रभु को प्राप्त कर अंत में उन्ही में लीन हुआ है।

(लेखक के ये अपने विचार हैं।)

छत्रसाल नगर, रायसेन रोड, भोपाल
मो. - 9755358707

माघ में स्नान मात्र से प्रसन्न होते हैं 'भगवान श्री हरि'

गोवर्धन यादव

हमारे ऋषि–मुनियों ने नदी की महत्ता को प्रतिपादित करने हुए कहा है कि नदी में स्नान मात्र से प्रसन्नता का अनुभव होता है, इतना ही नहीं शीतल जल में भीतर डुबकी लगाने वाले मनुष्य पापमुक्त होकर स्वर्गलोक को जाता हैं। उन्होंने नदियों को माँ के सदृश्य मानकर उनकी पूजा–अर्चना की। वेद–पुराण में विभिन्न नदियों के महात्मय को उन्होंने विस्तार से वर्णित किया है. और यहाँ तक उल्लेखित किया है कि किस तिथि को, किस माह में स्नान करने से कौन–कौन से पुण्योदय होते हैं। यही कारण है कि हमारे देश में नदियों को सच्ची श्रद्धा और विश्वास के साथ विधिवत पूजन और अर्चन किया जाता है।

स्नान–ध्यान को लेकर माघ माह में प्रयाग स्नान को लेकर गोस्वामी तुलसीदासजी श्रीरामचरितमानस में लिखते हैं– माघ मकरगत रबि जब होई 'तीरथपतिहिं आव सब कोई देव दनुज किन्नर नर श्रेनीं' सादर मज्जहिं सकल त्रिवेनी पूजहिं माधव पद जलजाता' परसि अखय बटु हरषहिं गाता।

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में माघमास के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा गया है व्रत, दान और तपस्या से भी भगवान श्रीहरि को उतनी प्रसन्नता नहीं होती, जितनी कि माघ महीने में स्नान मात्र से होती है। इसलिए स्वर्गलाभ, सभी पापों से मुक्ति और भगवान वासुदेव की प्रीति प्राप्त करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को माघ स्नान करना चाहिए।

व्रतैर्दानैस्तपोभिश्च न तथा प्रीयते हरिः 'माघमज्जनमात्रेण यथा प्रीणाति केशवः'
प्रीयते वासुदेवस्य सर्वपापापनुत्तये ' माघस्नानं प्रकुर्वीत स्वर्गलाभाय मानवः (पद्मपुराण)

मत्स्यपुराण (53/35) के अनुसार माघमास की पूर्णिमा को जो व्यक्ति नदी में नहाकर स्नान दान कर, ब्रह्मवैवर्तपुराण का दान करता है,उसे ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

माघ मास –भारतीय संवत्सर का ग्यारहवाँ चान्द्रमास और दसवाँ सौरमास "माघ" कहलाता है. इस महिने में मघा नक्षत्रयुक्त पूर्णिमा होने के कारण इसका नाम "मघ" पडा. धार्मिक दृष्टिकोण होने से इस माह का बहुत अधिक महत्व है. इस मास में शीतल जल के भीतर डुबकी लगाने वाले मनुष्य पापमुक्त हो स्वर्गलोक में जाते है– "माघे निमग्नाः सलिले सुनीते विमुक्तपापास्त्रिदिवं प्रयान्ति" महाभारत के अनुशासनपर्व में इस प्रकार का उल्लेख प्राप्त होता है–

दशतीर्थसहस्त्राणि तिस्त्रः कोट्यस्तथा परा' समागच्छन्ति माघ्यां तु प्रयागे भरतर्षभमघमासं प्रयागे तु नियतः संशितव्रतः ' स्नात्वा तु भरतश्रेष्ठ निर्मलः स्वर्गमाप्नुयात हे भरतश्रेष्ठ ! माघमास की अमावस्या की प्रयागराज में तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थों का समागम होता है। जो नियमापूर्वक उत्तम व्रत का पालन करते हुए माघमास में प्रयाग स्नान करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाता है।

महाभारत के अनुशासन पर्व श्लोक 66/8, 106/21, 109/5 के अनुसार जो माघमास में ब्राह्मण को तिल का दान करता है, वह समस्त जन्तुओं से भरे हुए नरक का दर्शन नहीं करता। जो नियमपूर्वक एक समय के भोजन से व्यतीत करता है, वह धनवान कुल में जन्म लेकर कुटुम्बीजनों में महत्त्व को प्राप्त होता है. माघमास की द्वादशी

तिथि को दिन–रात उपवास करके "श्री माधव" की पूजा करता है, उसे राजसूययज्ञ का फल प्राप्त होता है।

माघ मास में सी विशेषता है कि इसमें प्रयाग, काशी, नैमिषारण्य, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार तथा अन्य पवित्र तीर्थों और नदियों मं स्नान का बडा महत्व है. इलाहाबाद (प्राचीन समय का 'प्रयाग') में गंगा–यमुना के संगम स्थल पर लगने वाला माघ मेला सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। हिन्दू पंचांग के अनुसार 14 जनवरी या 15 जनवरी को मकर संक्रांति के पावन अवसर के दिन 'माघ मेला' आयोजित होता है। इस अवसर पर संगम स्थल पर स्नान करने का बहुत महत्व होता है। इलाहाबाद के माघ मेले की ख्याति पूरे विश्व में फैली हुई है., माघ मेला भारत के सभी प्रमुख तीर्थ स्थलों में मनाया जाता है। नदी या फिर सागर में स्नान करना, इसका मुख्य उद्देश्य होता है। पद्मपुराण में माघ मास की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए एक कथा आती है। वह इस प्रकार है–

प्राचीनकाल में नर्मदाजी के सुन्दर तट पर एक सुव्रत नामक ब्राहमण निवास करते थे। वे ज्योतिष, गजविद्या, अश्वविद्या, मन्त्रशास्त्र, सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र के ज्ञाता थे और चौसठ कलाओं का भी उन्होंने अध्ययन किया था. साथ ही वे अनेक देशों की भाषाएँ और लिपियाँ भी जानते थे। इतना सब कुछ होने पर भी उन्होंने कभी धर्म कार्यों में धन खर्च न करते हुए लोभ ही में फंसे रहे। और इस तरह उन्होंने लाखों स्वर्णमुद्राएँ अर्जित कर लीं। कुछ समय पश्चात उन्हें वृद्धावस्था ने आ घेरा। सारा शरीर जर्जर होने लगा और काल के प्रवाह से सारी इन्द्रियाँ शिथिल होने लगीं। स्थिति यहाँ तक आन पडी कि वे कहीं आने–जाने में भी अपने आपको असमर्थ पाने लगे। सहसा उनके मन में विचार आया कि सारा जीवन तो धन अर्जन में लगा दिया पर परलोक सुधारने के लिए तो कुछ भी नहीं किया. एक दिन चोरों ने उनके जमा धन को चुरा लिया। धन के चोरी हो जाने पर उन्हें धन की नश्वरता का भी बोध हुआ। अब उन्हें केवल एक चिन्ता थी तो केवल परलोक सुधारने की. व्याकुलचित्त होकर वे उपाय सोच रहे थे कि अचानक उन्हें आधा श्लोक स्मरण में आया. माघे निमग्नाः सलिले सुशीते विमुक्तपापास्त्रिदिवं प्रयान्ति..सुव्रत को अपने उध्दार का मूल मन्त्र मिल गया था। उन्होंने माघ–स्नान क संकल्प लिया और चल दिये नर्मदा में स्नान करने के लिए। वे नौ दिन तक प्रातः नर्मदा जल में स्नान करते रहे. दसवें दिन स्नान के बाद वे अशक्त हो गए और शीत से पीड़ित हो अपने प्राण त्याग दिए। उन्होंने जीवन भर कोई सत्कर्म नहीं किया था, लेकिन माघ मास में स्नान मात्र से उनका मन निर्मल हो गया था। देहत्याग के समय एक दिव्य विमान स्वर्ग से आया और वे उसमें असीन हो स्वर्ग चले गए। माघ मास में श्रद्धालुजन बड़ी संख्या में पवित्र नदियों में स्नान करने और पुण्य लाभ लेने के लिए निकल पड़ते हैं।

(लेखक के ये अपने विचार हैं।)

103, कावेरी नगर,छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
मो. : 9424356400

रंग संस्कृति परिसर में तिरंगा फहराया

भोपाल। 75 वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में रंग संस्कृति परिसर में समाज सेवी एवं मार्केटिंग सोसायटी उदयपुरा, रायसेन के पूर्व अध्यक्ष श्री खुमान सिंह रघुवंशी ने तिरंगा फहराया। इस अवसर पर रंग संस्कृति की सम्पादक श्रीमती वंदना अत्रे एवं यतीन्द्र अत्रे के साथ संस्था के पदाधिकारी मुकुल त्रिपाठी, अंकित गौड़, नागेन्द्र सिंह, उद्भव अत्रे (एडवोकेट) उपस्थित रहे।

राम हमारे आराध्य हैं, आराध्य रहेंगे

यतीन्द्र अत्रे

22 जनवरी 2024 के वे 84 सेकंड जब अयोध्या में रामलाल की प्राण प्रतिष्ठा हुई, पूरा ब्रह्मांड जयकारों से गूंज उठा। निश्चित रूप से यह क्षण स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य होगा। विद्वानों के अनुसार रामलला के मनमोहक स्वरूप में परमात्मा का वास हो गया है। भाग्यशाली होंगे वे सभी लोग जिन्होंने भगवान श्री राम के बालरूप के प्रत्यक्ष दर्शन किए, इसके अतिरिक्त देश दुनिया से टीवी चैनल और दूसरे माध्यमों से देख रहे लाखों दर्शक भी इस छवि को अपलक निहारते रहे।

आज भारत के इन्हीं असंख्य लोगों ने विश्व को आभास करा दिया है कि राम हमारे आराध्य हैं और आराध्या रहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने इस अवसर पर कहा है कि – 'राम आग नहीं ऊर्जा है, राम विवाद नहीं समाधान है'। उन्होंने भारत की न्यायपालिका का आभार भी व्यक्त किया, वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघ संचालक श्री मोहन भागवत ने कहा कि – अनेक पीढ़ियों ने बलिदान देकर यह आनंद का दिन राष्ट्र को उपलब्ध कराया है। साधुवाद के पात्र है वे लोग जिन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुरोध पर अपने–अपने क्षेत्र को अयोध्या बनाने का प्रयास किया। असंख्य दीप जले, तो शोभा यात्राएं, ध्वज यात्राएं निकाली गई, मंदिरों में सुंदरकांड, हनुमान चालीसा के पाठ हुए वहीं

घरों में दीपावली जैसा आनंद दिखाई दिया। ऐसा चित्रण आखिर क्यों ना हो क्योंकि प्रभु श्री राम भारतवासियों के रज– रज में आज भी बसे हैं। स्नान, ध्यान हो या पूजन का समय हो, घर–घर में प्रभु श्री राम का जाप किया जाता है। देश के अनेक नगरों में जब आपस में मेल मिलाप होता है तब अभिवादन स्वरूप श्रीराम का नाम लिए जाने की परंपरा आज भी विराजमान है। घर में कोई शुभ कार्य हो तब कहा जाता है कि प्रभु श्रीराम की कृपा है और जब कोई अशुभ घटना होती है तो उस समय कहते हैं– राम राम... क्या हो गया। यानी कि जब कोई उम्मीद ना हो तब भी हम राम का नाम लेकर सकारात्मक की ओर अपने कदम बढ़ा सकते हैं। विद्वानों के मत से यदि कोई व्यक्ति राम नाम का उच्चारण अपने कंठ से करता है तब उसके कंठ के अतिरिक्त पूरे शरीर में एक कंपन की अनुभूति होती है, राम शब्द एक योग भी है जिसके उच्चारण मात्र से शरीर में उत्पन्न व्याधियों का उपचार भी संभव है। रामधुनी तो यहां तक कहते हैं कि राम–नाम जप कर भवसागर को पार किया जा सकता है।

लेखक रंग संस्कृति के कार्यकारी सम्पादक हैं।
मो. : 9425004536

ऑलराउंडर कवि साहित्यकार थे गड़बड़ नागर

संदीप सृजन

जहॉ गड़बड़ मचा करती, उसे घरबार कहते है।
जो फोकट में मिला करता, उसे हम माल कहते है।
चाय सा जरूरी है– सुनों जी हास्य जीवन में
जहॉ भोंदू भी पूजे जाये, उसे ससुराल कहते है।

इन पंक्तियों के लेखक उज्जैन शहर में पिछले छह दशक से साहित्यिक गोष्ठियों और कवि सम्मेलनों में अपनी उपस्थिति से अलग पहचान वाले पं. अभिमन्यु त्रिवेदी 'गड़बड़ नागर' 1 फरवरी 2024 को अल्पकालीन बीमारी के चलते अनंत की यात्रा पर निकल गये।

अपने चुटेले अंदाज में व्यंग्य कविता, ग़ज़ल के साथ गद्य लेखन में वे माहिर थे तुकबंदी के साथ सामयिक रचना कर्म में उनका शौक था। वे जब भी किसी से फोन पर या मिलने पर बात करते तो आशु कवि के रुप में दो चार पंक्तियां त्वरित जरुर सुनाते थे, देश में कोई भी घटना हो या कोई विशेष अवसर हो वे त्वरित गद्य और पद्य में लिख देते थे। मंचों पर वे बहुत ही मनोरंजक और हास्य प्रधान प्रस्तुति दे कर श्रोताओं को खूब हंसाते थे, उनकी टिप्पणियां शुद्द व्यंग्य लिए होती थी बिना किसी लाग–लपेट के अपनी बात कहते थे। गोष्ठियों और पारिवारिक मंचों पर भी हास्य से भरपूर रचना का पाठ करते थे।

टंकी भर है प्यार आपका,चम्मच भर है मेरा।
नई फिल्मों की हीरोइन सा, लागे नया सबेरा।।

गड़बड़ नागर जी का लेखन हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू के प्रचलित शब्दों की खिचड़ी रहा। वे आलोचक की परवाह किए बगैर मिश्रित भाषा में ही अपनी बात अपने अंदाज में कहते थे। कविता में गद्य और गद्य के बीच कविता शायद इस चंपू विधा ने ही अभिमन्यु त्रिवेदी को गड़बड़ नागर बनाया था। उन्होंने भाषा और शब्दों से कभी परहेज नहीं किया।

गड़बड़ नागर जी की विशेषता थी की वे सरलता और सौम्यता की प्रतिमूर्ति थे,जो उनसे मिला वो उनका मित्र हो गया, अदावत नाम की कोई चीज उनके जीवन में थी ही नहीं। एक बार जिसने उनके स्वभाव को जान लिया वो उनका हो गया। पिछले आठ सालों से वे 'शाश्वत सृजन' मासिक पत्र के लिए 'सब गड़बड़ है' नाम से कॉलम लिख रहे थे जिसमें सामयिक मुद्दों पर कटाक्ष के साथ महत्वपूर्ण टिप्पणियों से गुदगुदाते भी थे। साथ ही नागर समाज की पत्रिका के सम्पादन सहयोगी भी रहे। साहित्य और समाज के लिए तन,मन,धन से सहयोग देते थे। अपने पिता जी श्री शुकदेवजी त्रिवेदी की स्मृति में वे संस्था शब्द प्रवाह के माध्यम से गीतकार सम्मान भी प्रतिवर्ष देते थे। उज्जैन शहर की कई साहित्यिक संस्थाओं से सक्रिय रुप से जुड़े हुए थे।

कवि के रुप में गड़बड़ नागर जी ने उज्जैन के निकटवर्ती क्षेत्रों के कई कवि सम्मेलनों में समकालीन मूर्धन्य कलमकार जैसे पं. सूर्यनारायण व्यास, रामधारी सिंह दिनकर, शिवमंगलसिंह सुमन, काका हाथरसी, गोपालदास नीरज, रामावतार त्यागी जैसे कवियों के साथ तो काव्यपाठ किया ही उज्जैन शहर की तीन पीढ़ी के साथ पॉच दशक तक मित्रवत अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी। पेशे से शिक्षक रहे गड़बड़ नागर जी सबके चहेते थे। 18 जुलाई 1944 को जन्में गड़बड़ नागर जी जीवन भर विद्यार्थी भी रहे और शिक्षक भी। साहित्य जगत के कई प्रतिष्ठित सम्मान भी उन्हें मिले, दूरदर्शन और आकाशवाणी पर भी वे काव्य पाठ कर चुके थे। उनकी एक गद्य कृति 'पुरजा पुरजा प्रजातंत्र' एक पद्य कृति 'कुछ लोग ऐसे होते है' प्रकाशित हुई तथा एक ऑडियो सी डी उनकी ही आवाज में 'भड़ास' भी निकली। स्वतंत्र रुप से उनकी रचनाएँ सैकड़ों पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। गड़बड़ नागर जी का चले जाना मित्रों के लिए तो दुःखद है ही, साहित्य जगत के लिए भी अपूर्णीय क्षति है क्योंकि गड़बड़ नागरजी ऑलराउंडर कवि साहित्यकार थे। विनम्र श्रद्धांजलि गड़बड़ नागरजी को...।

लेखक सांस्कृतिक पत्रिका 'शास्वत सृजन' के सम्पादक हैं
सम्पर्क : 99 व्ही डी मार्केट बुधवारिया चौक, उज्जैन
मो.: 9406649733

पं माखनलाल चतुर्वेदी : 'एक भारतीय आत्मा'

आगमन 4 अप्रैल 1889 ग्राम बाबई जिला होशंगाबाद अवसान 30 जनवरी 1968 खण्डवा

शिशिर उपाध्याय

हम सबके माखन दादा की 56 वीं पुण्यतिथि है, बाबई ग्राम में जन्मे पं माखनलाल जी ने खण्डवा को अपनी कर्मस्थली चुना और यहीं से राष्ट्रप्रेम की अलख जगाई। उन्होंने कर्मवीर प्रेस की स्थापना की एवं कर्मवीर नामक साप्ताहिक पत्र अंतिम समय तक निकाला।

खण्डवा में सरलादेवी मटरुमल बगीचे के बाएं हाथ के एक किराए के मकान में वो अंतिम समय तक रहे। बगीचे के सामने कोने पर 'कर्मवीर' प्रेस थी। आजकल यह कर्मवीर प्रेस गली ही कहाती है, अफसोस वहाँ न तो प्रेस है न कोई स्मारक है वरन नगर निगम ने वहाँ पर एक बाजार बना दिया है। हमारा घर 'साहित्य कुटीर' बड़े बम के पास ब्राह्मणपुरी की गली में था, जो मात्र आधा किलोमीटर था, मुझे याद है जब भी हम हमारे गाँव कालमुखी से आते थे तब दादा(पं रामनारायण उपाध्याय) के साथ इसी कर्मवीर प्रेस गली में से जाते थे, और अक्सर माखन दादा जोर से आवाज लगाते थे, अरे, रामनारायण इतनी जल्दबाजी में कहाँ जा रहे हो, दादा कहते अरे इन बच्चों को मोहन हिन्दू होटल में जलेबी और समोसे खिलाने ले जा रहा हूँ। और फिर हमारे समोसे, जलेबी, सब ठंडे हो जाते थे क्योंकि माखन दादा के पास बैठे तो समझो आधा –पोन घण्टे की फुर्सत, ठहाकों पर ठहाके, इस बीच और मित्र भी आ जाते, हम दादा की धोती खींचते मगर माखन दादा गालों पर हाथ फेरते और कहते अभी चले जाना भाई, तब तक चाय आ जाती। यह दौर निरन्तर चलता रहा था, आ माखन दादा खाण्डवा के साहित्य देवता थे, बड़े बड़े साहित्यकार वहाँ अक्सर आया करते थे। मुझे गर्व है कि उनकी अंतिम यात्रा के समय हम उनके बड़े जुलुस का अंग थे, जो भजन कीर्तन के साथ पूरे खण्डवा शहर से निकली थी, आज उनकी 56वीं पुण्यतिथि पर उनके सहज आशीर्वाद हमारे साथ है, मेरे गालों पर उनके कपसिले हाथों की शीतल उंगलियों का स्पर्श आज भी अंकित है, उन दिनों की याद आती है तो रोम रोम सिहर उठता है, कैसे हम इतने बड़े वटवृक्ष की छाया में रहे ,सहसा विश्वास नहीं होता।

पं रामनारायण उपाध्याय के साथ माखन दादा दाहिने

पुनः उनका पुण्य स्मरण ।।

21 सृजन :शर्मा कालोनी
बड़वाह (खरगोन) मो. न. 9926021858

सरल अभिव्यक्ति की सार्थक कविताएँ

सदाशिव कौतुक

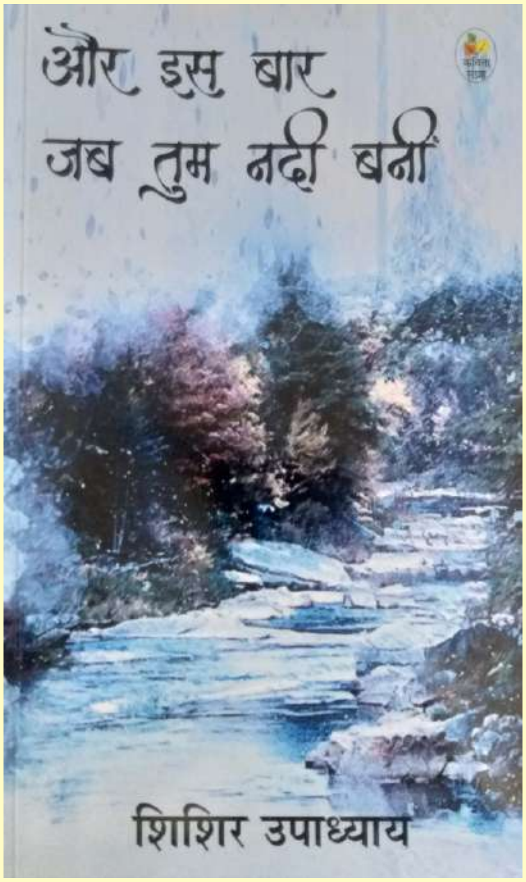

हिन्दी में कविता आज भी साहित्य की केन्द्रीय विधा इसलिए बनी हुई है क्योंकि हिन्दी का समाज अब भी जनपदीय समाज है, जिसे हम हिन्दी संस्कृति कहते है। संक्रमण के इस लगभग एक सदी लम्बे दौर में जनपदीय संस्कृतियों के जातीय संस्कृति में रूपान्तरण की जद्दोजहद सबसे ज्यादा कविता के माध्यम से ही व्यक्त होती रही है। महानगरों में भी कविता वहीं बची है, जहाँ जनपदीय चेतना मरी नही है। हम जब श्री शिशिर उपाध्याय की हिन्दी कविता को देखने परखने का प्रयत्न करते है, तो कस्बों और छोटे शहरों में सक्रिय बहुत सारे कवियों की याद आती है। इन दिनों श्री शिशिर उपाध्याय का प्रकाशित हुआ कविता संग्रह "और इस बार जब तुम नदी बनी" पढ़ा। इस संग्रह में 84 कविताएँ संकलित है। इन कविताओं में ग्रामीण जीवन के बदलते यथार्थ के साथ–साथ शहरी मध्यमवर्ग की विडम्बनाओं का सटीक चित्रण हुआ है। कवि के पास गाँव–घर का व्यापक अनुभव है। देखने–समझने की अर्न्तदृष्टि भी है। संग्रह में शामिल ग्रामीण जीवन से संबंधित कविताएँ है जैसे – टूटती नदी है सूख चुकी नदी, नदी और मैं, जाएँ कभी गाँव में, अन्तर्द्वन्द, कैसे डूबते है, बसंत लगते ही, सूरज कुमार, पेड़ और मेरा मन, अगहन में, और एक दिन आषाढ़ में, गुलाब और केक्टस, गेहूँ की बाली, पंछीसी याद, रोज शाम ढलते ही, एक घर था, वृक्ष मित्र, पंछी आदि ऐसी रचनाएँ है जो ग्रामीण परिवेश का प्रतिनिधित्व करती है। ये कविताएँ ग्रामीण जीवन तथा घर परिवार के बीच कोई नई बात करने का प्रयास करती है। कवि की नजर गाँव की विडम्बनाओं और विसंगतियों पर भी है। कविता में नदी पर और स्त्री पर भी अच्छे विचार आए है। तब और अच्छा लगता है जब कवि ग्रामीण जीवन में आ रहे बदलावों को व्यापक आंतरिक और बाह्य परिवर्तनों से जोड़ने में सफल होता है।

नदी पर लिखी गई कविताएँ अच्छा संदेश देती है। नदी के सूखने पर कवि ही नहीं पूरे समाज की चिन्ता होनी चाहिए। ये कहकर नदी ने छलांग लगा दी। पहाड़ से उसे लोक कल्याण के लिए बहना है, सिंचना है, फसलों को। बुझाना है प्यास प्राणियों की। बहुत अच्छी कल्पना है। (छलांग) परछाई कविता में कवि की कल्पना अतिउत्तम है। जैसे – तुम्हारे भीतर परछाई बन कर रहूँगा मैं। बस .... तुम नदी बने रहना। ओजस्विनी कविता में कवि एक अच्छा दृश्य प्रस्तुत करता है। जैसे– वह उगाती है। अपनी हथेलियों पर। रोज सूरज। उसकी ऊर्जा से बनाती है। गोल–गोल रोटियाँ। बहुत अच्छा प्रयास है। पूर्ण स्त्री कविता में कवि स्त्री से दिनभर के क्रियाकलापों का सटिक चित्रण करता है। गाँव कविता में गन्ने की गाँव से तुलना जीवन के रिश्तों से करता कवि एक नई बात पाठक के सामने रखता है। नारी सौन्दर्य पर लिखी गई नारी सौन्दर्य कविता स्त्री की विवशता और विद्रुपता दोनों की ओर इशारा किया गया है। कविता संस्कृति को भी अच्छे रूप में ढाला गया है। इस तरह इस संग्रह की प्रत्येक कविता नये स्वरूप को लिए हुए है। नई–नई कल्पनाओं के माध्यम से सज्जित की गई कविताएँ पाठक को प्रभावित करती है। कवि में कविता लिखने का कौशल साफ झलकता है। नदी के रचे गए अनेकानेक बिम्ब सार्थक प्रयास है। इन कविताओं में निमाड़ की माटी का सौंधापन पाठक को मस्त कर देता है। मौलिक चिन्तन युक्त ये जनपदीय भावों से ओतप्रोत कविताएँ अच्छा प्रभाव छोड़कर आल्हादित करने के साथ–साथ सोचने पर भी विवश करती है। पाठक का ध्यान आकृष्ट करती है। इस संग्रह की कविताओं में अपने आस–पास का बिखरा हुआ यथार्थ है। अति बौद्धिकता से हटकर सरल–भाषा और सहज भाव इन कविताओं की विशेषता है। वर्तमान में रेखांकित करती ये कविताएँ

समकालीन परिप्रेक्ष में सार्थक सिद्ध हो गई है। इन सभी कविताओं के लोक संवेदनाओं की प्रस्तुती लोक मंगल की मंशा को बल देती कल–कल बहती नदी की तरह स्वच्छंद नजर आती है। इस संग्रह की कविताओं में लोक और प्रकृति के रूप दृष्टिगत होते है। समय की मांग है ये कविताएँ। शिशिर उपाध्याय गीतकार भी है इसलिए छन्दमुक्त इन कविताओं में सौन्दर्य बोध भी है। सरल भाषा और सहज अभिव्यक्ति पाठक को पूरा संग्रह पढ़ने की उत्सुकता बनाए रहती है। हर कविता में नये पन के साथ जीवन के यथार्थ स्पष्ट होते है। मैं भाई शिशिर उपाध्याय को इतने अच्छे सुभाषित संग्रह के लिए बधाई देता हूँ। वे छंदमुक्त लिखे उनमें छन्द मुक्त लिखने का माद्दा है क्योंकि छन्द मुक्त कविता पूरी ताकत से अपने समय के यथार्थ को रखने में सक्षम होती है और आज हम जिस समय को जी रहे है, भोग रहे है उसे साहित्य में उतारना नितान्त आवश्यक है वरना समय हमें माफ नहीं करेगा। प्रतिरोध की ताकत के बगैर कविता अधूरी है इसलिए कविता ही एक ऐसा माध्यम है जो गलत को गलत कहने का सामर्थ्य रखती है। सरल शब्दों में बड़ी बात कह जाना ही तो कविता है। नये बिम्ब, विचार और नये तर्क कविता को सही रूप प्रदान करते हैं। पुनः बधाई।

श्रमफल 1520, सुदामा नगर, इंदौर - 452009

खरगोन में हुआ एक भावभीना साहित्यिक समागम

खरगोन। (रंगसंस्कृति प्रतिनिधि) शहर के गोपाल होटल में 'निराला सृजन पीठ' के बैनर तले एक भावभीना साहित्यिक समागम हुआ,जिसमे मुख्य वक्ता श्री जगदीश जोशीला द्वारा 'निमाड़ी के इतिहास और वैशिष्ट्य' पर प्रकाश डाला गया। कहानीकार राकेश राणा ने भगवान श्रीराम की तुलसीकृत रामायण पर शोध परक आलेख का पाठ किया, वहीं कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाते हुए म.प्र. लेखक संघ के स्थानीय अध्यक्ष डॉक्टर मधुसूदन बार्चे ने निरालाजी की 'राम की शक्ति पूजा'पर पांडित्य पूर्ण व्याख्यान दिया। समारोह में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे नाट्यकर्मी दिलीप कर्पे ने गुरु महिमा पर अपना उदबोधन दिया, इसके पूर्व सृजन पीठ की निदेशक डॉ. साधना बलवटे ने अपने सारगर्भित शब्दों के माध्यम से सदन में उपस्थित साहित्य धर्मियों का स्वागत किया। मां शारदा के पूजन के उपरांत रजनी उपाध्याय के सरस्वती वंदना पाठ से कार्यक्रम आरम्भ हुआ,संचालन महेश्वर के माणिक श्री पंडित हरीश दुबे ने किया। समारोह के द्वितीय सत्र में वयोवृद्ध कवि श्री राजनाथ सोहनी की अध्यक्षता में सर्वश्री अजय मंडलोई, मोहन परमार, विजय जोशी, डॉ. पुष्पा पटेल, हरीश दुबे, आरती डोंगरे, साधना बलवटे और बड़वाह से आमंत्रित शिशिर उपाध्याय ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। सत्र का संचालन डॉ. दीपक दशोरे ने किया।

भोंदू ने दी घर जमाई बन सीख

सुनील चौरे 'उपमन्यु'

अम्मा की खुशी का ठिकाना नही था, आज अम्मा की बिटियां को जो देखने वाले आ रहे थे। अम्मा ने साफ सफाई कर, लिपाई पुताई कर घर स्वच्छ सुंदर बना दिया था। लोगों को समझते देर न लगी कि अम्मा की बिटियां निम्मी को देखने वाले आ रहे है। अम्मा ने दद्दा को तो बस दरवज्जे पर खड़ा कर दिया था कि वे आए तो सम्मान उन्हें अंदर लेकर आएं ताकि गुड़ इम्प्रेशन पड़े। निम्मी को इसकी आदत पड़ गयी थी, अभी तक कितने ही आए और बिना कुछ कहे चले गए। निम्मी के दद्दा अंदर आए और निम्मी से बोले –बिटियां ! जो तुझे और मुझे पसंद आते वो तेरी अम्मा को नही। अम्मा अंदर आते ही बोली–हाँ हाँ ! मुझे पसंद नही आते है। वो श्यामई कह रही थी हमारा दामाद तो बहुत अकडू है,हमारे ही अन्य रिश्तेदारों से बात नही करता है, दामादगिरी बताता है। जितनी आवभगत करते है उतने ज्यादा नखरे बताता है। हमारी बिटिया के तो भाग फूट गए। अब जरा मेरी सखी रामई की बात बताती हूं उसका दामाद अपनी वाली चलाता है वो जो बोले वोज करना पड़ता है, वो जो बोले वोज सुनना पड़ता है अन्यथा बिटिया को मायके छोड़ जाने की धमकी देता है। इसलिए सोचसमझ कर ही दामाद का चयन करूंगी। अम्मा की बात सुन बिटियां बोली अम्मा! विवाह मुझे करना है और चयन प्रक्रिया तुम करोगी ? अम्मा बोली हाँ हाँ! तू क्या जाने दामाद को खूब दाद देनी होती है अन्यथा नाराज होकर धूम मचाता है ।और बिटियां तेरे सहित पूरे ससुराल को नचाता है दामाद प्रजाति होती ही ऐसी है। अनार बाई खूब पछता रही है। उसने छानबीन नही करी तो परेशान है।घर के बाहर खड़े होकर चिल्लाता रहता है। दामाद बेवड़ा है। अनारबाई दामाद की हरकतों को बेटी के कारण सहन करती रही। दामाद पीकर आ जाता फिर जो चाहता अपनी मांगे पूरी करवा लेता। चम्पी बाई का दामाद करोड़ों का मालिक वह ससुराल में किसी को कुछ समझता ही नही है। मर्सडीज़ से नीचे उतरता ही नही है। सासु चंपीबाई, ससुर व सभी लोग कार की आवाज सुन आवभगत में लग जाते है।दामाद है कि अकड़ता ही रहता है। अम्मा बोली दद्दा से–समझे ना! इसलिए मैं निम्मी की शादी ऐसे व्यक्ति से करूंगी जो ससुराल की इज्जत करे, सब की सुने, सीधा साधा हो, भोला हो। ऐसा दामाद ही चुनूँगी। अम्मा की बात प्रभू ने सुन ली। एक दिन दातादीन अपनी पत्नी व अपने पुत्र भोंदूराम के साथ लड़की निम्मी को देखने आये। पिता ने कहा–बेटे बैठ जाओ तब बेटा भोंदू बैठा ।दातादीन ने कहा –बेटा भोंदू। ये लड़की की माताजी है इनको नमन करो। भोंदू ने दण्डवत नमन कर दिया। अम्मा बहुत खुश हो गयी कितना आज्ञाकारी व संस्कारी लड़का है। अम्मा ने कहा उठो बेटे भोंदू। भोंदू खड़ा होकर बैठ गया। इधर उधर देखकर भोंदू बोला–बाबूजी, ओ मेरी जो दुल्हन बनेगी, वो कहाँ है ? अम्मा ने लड़की निम्मी को बुलवा लिया। भोंदूराम भी उस लड़की के पास बैठ गया व उसे देखते रहा। लड़की कुछ कहती इसके पहले ही भोंदू बोला–ए जी तुम बहुत अच्छी हो तुम बैठी रहना ये भोंदूराम सब कामकर लेगा। घर पर भी मैं ही सब करता हूं। लड़की उठकर चली गयी ।अम्मा बोली ठीक है हमे रिश्ता मंजूर है। अम्मा को ऐसे ही रिश्ते की तलाश थी। विवाह धूमधाम से हो गया। भोंदूराम अपने माँ बाप के यहाँ कम और ससुराल में ज्यादा रहने लगा। एक पत्नी भी क्या चाहेगी, कि उसे ऐसा पति मिले जो उसकी सुने, उसके इशारे पर चले। भोंदूराम बिल्कुल फिट था ।सास, ससुर,सब के काम कर दे, पैर दबा दे कहने का मतलब यह कि पूरा घर भोंदूराम पर आश्रित हो गया। ऐसा भोंदू पति, ऐसा भोंदू दामाद पा कर सब खुश थे। दातादीन बोला–भोंदू तुम तो घर को भूल ही गए तुम्हारी माँ चिंता कर रही है। भोंदू बोला–अब आप ही बताओ कौन लड़की दे रहा था मुझे ? कोई पैकेज पूछता, तो कोई अलग रहने की बात करता तो कोई कुछ ।भांति भांति के प्रश्नों से तंग आ गया था, इसलिए पिता जी भोंदू बन कर ही ससुराल में ऐश कर रहा हूँ। मेरा सभी बढ़ती उम्र के भाइयों से निवेदन है कि आप गुणवान भी तो भी भोंदू बन जाइए और एक अच्छी पत्नी एक अच्छी सास पाइए, और घर जमाई बन जाइए ।इस बार की होली निम्मी के साथ ऐसी खेली की निम्मी भोंदू की होली।

सम्पर्क : 24, जवाहरगंज वार्ड रामेश्वर रोड, खण्डवा (म.प्र.)
मो. : 9926496988

इस आस में...

सुनील चौरे 'उपमन्यु'

खोजता रहा उसे इस आस में,
फिर मुलाकात हो आमो–खास में

कैसे भूल सकता हूं उसे,
वो बसा है मेरी हर श्वांस में,

कहते है सब वो साथ है तेरे,
बीत रही उम्र उसकी तलाश में

वो टका सेर भी पूछते नही उसे,
फिर भी है वो उसके पास में ,

मिलेगा तुझे वो अवश्य ही,
भक्ति में शक्ति ला अरदास में ,

इश्क में तेरे पागल वो भी है उपमन्यु,
इसलिए बुलवाता है तुझे गरबरास में

कहां दूर है तुझसे तेरा ये साँवरिया,
पाता है तू मुझे प्रतिदिन आभास में।

सम्पर्क : 24, जवाहरगंज वार्ड
रामेश्वर रोड, खण्डवा (म.प्र.)
मो. : 9926496988

माँ के बुने हुए स्वेटर से...

सुरेश कुशवाह 'तन्मय'

लगे काँपने कंबल
बेबस हुई रजाई है
ठंडी ने इस बार
जोर से ली अँगड़ाई है।।

सर्द हवाएँ सुई चुभाए
ठंडे पड़े बदन
ओढ़ आढ़ कर बैठे लेटें
यह करता है मन,
बालकनी की धूप
मधुर रसभरी मलाई है।
ठंडी में...

धू–धू कर के लगी जलाने
जाड़े की गर्मी
रूखी त्वचा सिकुड़ते तन में
नष्ट हुई नरमी,
घी–तेल से स्नेह की
अब बारी आई है।
ठंडी ने....

बाजारु जरकिनें विफल
मुँह छिपा रहे हैं कोट
इनर विनर नहीं रहे
उनमें भी आ गई खोट,
माँ के बुने हुए स्वेटर से
राहत पाई है।
ठंडी ने....

घर के खिड़की दरवाजे
सब बंद करीने से
सिहरन भर जाती है
तन में पानी पीने से,
सूरज की गुनगुनी धूप से
प्रीत बढ़ाई है।
ठंडी ने....

कैसे जले अलाव
पड़े हैं ईंधन के लाले
जंगल कटे,निरंकुश मौसम
लगते मतवाले
प्रकृति दोहन स्पर्धा की अब
छिड़ी लड़ाई है।
ठंडी ने....।।

226, माँ नर्मदे नगर,बिलेहरी, जबलपुर (म प्र),
मो. : 9893266014

चलो चलते रहो

कविता विश्वकर्मा

क्या पाया जीवन मैं
जीवन ढलती छाँव
धीरे धीरे चलते रहे
थक गए अब पांव

मंजिल मिली नही
बुने सपने हजार
वजूद साथ में ले
चली नदियां की धार

टूटा अंदर विह्वगम
आशाओं के पार
सब रिक्त लगा
हाथ में था परिवार

मेने आखिर स्वयं से पूछे प्रश्न अपार
चलो कविता अकेले ही
लक्ष्य है अपना सार
हँस कर जियो
रोकर जियो
जीवन का ये रंग
अपने अभिमत में जियो
आवाज ये आती है
हर बार
लक्ष्य को प्राप्त करने
में जीवन का विस्तार

जगदम्बापुरम नारायण नगर,
खण्डवा

घोसला

राजेन्द्र ओझा

घोसले के लिए, तिनके लांने,
और उसे,
व्यवस्थित करने में,
वे दोनों व्यस्त थे।

वह,
उड़ – उड़कर तिनके लाता,
और,
वह उसे,
व्यवस्थित करती,
सजाती इस तरह, कि आराम रहे,
घोसले में।

मनुष्य हो,
या पशु – पक्षी स्त्रियाँ ही सजाती हैं घर,
रखती हैं व्यवस्थित।

इलेक्ट्रिक ट्रान्सफार्मर के बीच की,
छोटी सी जगह में,
वे बना रहे थे घोसला,
वे जानते थे,
कोई मनचला तो क्या,
यहां तक नहीं पहुंचेगा,
कोई शिकारी भी,
वह भी तो,
आखिर,
जीना तो चाहता ही है ना।

पहाड़ी तालाब के सामने, बंजारी मंदिर
के पास, वामनराव लाखे,
कुशालपुर, रायपुर (छत्तीसगढ़)
मो. : 9575467733

धुन राम नाम की

दीपक चाकरे

पावन भूमि पुण्य धाम की,
मन में तस्वीर सदा राम की।
जब तक चले सासें मेरी,
धुन रहे सदा राम नाम की।।
राम नाम के बिना तो,
हिलता न कोई भी पत्ता।
कण कण में बसते राम,
रोम रोम में उनकी सत्ता।।
जड़ में हैं चेतन में हैं,
चेतना की लौ जलती राम की।
जब तक चले..... ।।
सुबह से लेकर शाम तक,
शाम से लेकर सुबह तक।
हाथ जोड़ चरणों में तुम्हारे,
नित झुका रहे यें मस्तक।।
न धन दौलत चाहिए,
तुम्हारी चरण धुलि मेरे काम की।
जब तक चले...... ।।
तुम्हारी कृपा से प्रभु,
पत्थर भी तर जाते हैं।
अलौकिक महिमा तुम्हारी,
देव दानव शीश झुकाते हैं।।
मैं नादान मानव धरा का,
मैं पत्थर हूं खांडकी।
जब तक चले..... ।।
तुम्ही हो सकल पदार्थ,
तुम्ही हो जीने का आधार।
ब्रम्हांड तुम्हारी हथेली पर,
तुम्ही हो नैया की पतवार।।
कोटि कोटि नमन प्रभु,
कोटि कोटि नमन माता जानकी।
जब तक चले सासें मेरी,
धुन रहे सदा राम नाम की।।

सम्पर्क -प्रणाम सिटी फेस-2 गाय गार्डन
आई टी आई के पीछे खण्डवा (म.प्र.), मो.-9977562587

संवेदनशून्य

देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

जरूरी नहीं है हर आदमी
आप जैसा ही रखता हो विचार
देश—समाज और घर से रखें सरोकार
कुछ लोग बस अपने से, अपने लाभ से
रखते हैं मतलब...

बगल में लाश सड़ रही हो
नृशंस हत्या हो गई हो
सड़क किनारे कोई गिर कर
किसी को अधिक चोट लगी हो
पीड़ा—दर्द से कराह रहा हो
वो बगल से गुजर जाएंगे
अपने मन और तन को सीधे ही रखेंगे
जरा भी नज़र नहीं घुमाएँगे
वो सिर्फ अपने में मस्त है...

बम धमाके की भी न करते परवाह
वे चल पड़ते हैं अपनी राह
क्या देश समाज के प्रति उनकी
कोई जिम्मेदारी नहीं है...

जो हम कह रहे हैं, क्या! सही नहीं है
आखिर इसी देश और समाज में
वें भी रहते हैं, जीते हैं
और मुस्कराते हुए विचरण करते हैं
देश और समाज ने
उन्हें बहुत कुछ दिया है
मान—सम्मान और धन—दौलत
पर वें जीते हैं मृतप्राय समान
आखिर! कैसे होते हैं ये इंसान...

क्या! देश व समाज के लिए
उनके नहीं हैं कोई कर्तव्य
केवल चाहते हैं अधिकार ऐसे लोगों को देखकर
मैं हतप्रभ रह जाता हूँ
कि ऐसे लोग भी शान से जी रहे हैं
जो सचमुच संवेदनशून्य हैं...

ग्राम-कैतहा, पोस्ट-भवानीपुर, जिला-बस्ती
(उ. प्र.), मो : 7355309428

रामराज्य’ बनाना होगा

ओमप्रकाश चौरे

जयकारों से काम न होगा,
पौरूष अब दिखाना होगा।
रामलला के आने पर,
‘रामराज्य’ बनाना होगा।
जयकारों से काम न होगा,
पौरूष अब दिखाना होगा।
राम कृष्ण की भूमि पर
जन–जन को जगाना होगा।
जयकारों से काम न होगा,
पौरूष अब दिखाना होगा।
तुम सत्ता के ‘शीश’ शिखर हो।
रामराज्य दिखाना होगा।
जयकारों से काम न होगा,
पौरूष अब दिखाना होगा।
जनमानस मे ‘राम’ बसे हैं,
ये अब बतलाना होगा।
जयकारों से काम न होगा,
पौरूष अब दिखाना होगा।
पौरूष अब दिखाना होगा।

सम्पर्क : खण्डवा

हम मध्यमवर्गीय

विपिन चन्द्र साद

हम मध्यमवर्गीय कुछ इस तरह जीते हैं,
कि सफेद कमीज के अन्दर की बनियान भी सीते हैं,
आप खफा न हो जाएं इसलिए,
चाय की प्याली को आखरी घूंट तक पीते हैं,
साइकिल के सफर पर ही मंजिल को पाते हैं,
कभी–कभार ही टू व्हीलर या फोर व्हीलर पर जाते हैं,
रूकवाते है, शान से टेक्सी या रिक्शा,
पर सिटी बस के आते ही उस पर चढ जाते हैं,
एक स्वेटर या कोट मे कई ठंड निकालते हैं,
उसे ही पहनकर शादी या पार्टी निपटाते हैं,
बाजार कि मूल्य वृध्दि का होता हैं कुछ ऐसा असर,
अक्सर खाली झोला लिये ही वापस आ जाते हैं,
उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच,
हम मध्यमवर्गीय कुछ इस तरह पीसते हैं,
कि उच्च वर्ग की अय्याशी,
और निम्न वर्ग के आँसू देख,
हमारे दिल पसीज जाते हैं,
हम मध्यमवर्गीय कुछ..............

सम्पर्क : 446 प्रणाम सिटी–2, खंडवा

जतरा कबीरा

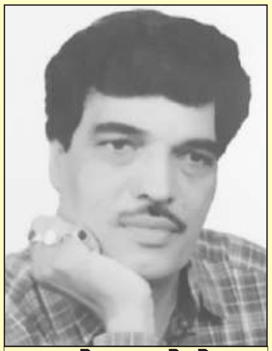

बृजेश बडोले

मानो तो या जिनगी छे जतरा कबीरा,
नई तो फिर लफड़ा भी सतरा कबीरा ।
लाड़ी खऽ खुस कसो राखणु ऊ बतावऽ,
करेल जेका चार–चार नातरा कबीरा ।
सास बिना न्हाएल चउका मऽ नी जाय,
वउ का किचन मऽ बठऽ कुतरा कबीरा ।
ऊ छे नेता परखणु ओखऽ घणो कठण,
अपणा हित सारू बदलऽ पैतरा कबीरा ।
माल्या, मेहुल, नीरव की चौकसी करी नी,
जप्तीवाळा होरी का उखाडऽ, पतरा कबीरा ।
राजनीति गजब दुकान सिंगारऽ अनऽ छोलऽ,
हाथ मऽ सबका छे पजाएल उस्तरा कबीरा ।
नही खऽ चलो करीनऽ चली गया तारणहार,
अवँ तूज बता पार कसा, उतराँ कबीरा ।

सम्पर्क : 13 गौरिधाम खरगोन
(म.प्र), मो.9977072864

दारू, बीड़ी मत पैओ सायबा

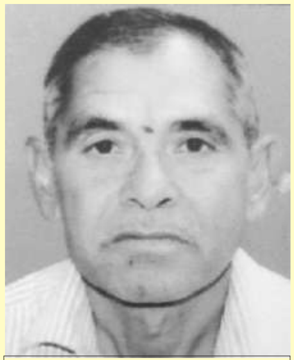

तोताराम अमोदे

दारू मत पैओ सायबा
बीड़ी मत पैओ, नशा की लत छोड़ी देओ
ओ सायबा तुम दानव आदत क
छोड़ी देओ...
पयसो भी जायग इज्जत चली जायग
बड़ी बीमारी हुई जायग
ओ सायबा तुम नशा की लत छोड़ी देओ
दारू मत पैओ...
नानी आरू नाना को ध्यान रखी लिजो।
लिखाई पढ़ाई को पैसो रखजो,
नशा की लत म, पैसो गमई
मत देजो।।
दारू मत पैओ
घर बिगड़ी जायग, परिवार बिगड़ी जायग
समाज म नाम नीचो होयग।।
विदेश म भारत को नाम नीचो होयग...
विदेश म निमाड़ को नाम नीचो होयग...
दारू मत पैओ

(आकाशवाणी कलाकार)
नन्दगांव बगूदवाले वैष्णवी कॉलोनी, खरगोन

संदेश हमारा समझें

बलिराज चौधरी

कश्मीर की न राग अलापे,पीओके पाक हमारा समझे।
यदि हमारी ओर उंगली की,तो फिर शेर दहाड़ा समझे।

करके चीन से यारी वो , घुसपैठ करता रहता है।
देकर उसको कर्ज सामग्री, करता उसे नकारा समझे।

सीमा पर आतंक करता,गोला बारूद भेजता रहता।
कारगील सी हालात करेंगे,यह संदेश हमारा समझे।

मदद की भीख मांगता रहता, जा पड़ोसी मुल्कों से।
लिए कटोरा भटक रहा है, फिरता मारा मारा समझे।

अर्थव्यवस्था खतरे में है, होती रहती वहां बगावत।
त्राहि त्राहि करती है जनता, कैसे होगा गुजारा समझे।

उठा भरोसा दुनिया का, उसकी दोगली चाल से।
मदद नहीं मिलती उसको, अपने को बेसहारा समझे।

फोड़ देंगे हम आंखें उसकी, अगर हमें दिखाई तो।
एक गोली एक दुश्मन की, यही है मेरा नारा समझे।

देख दूरंगी चाल उसकी, दिल अपना आहत होता।
सीमा पर फौजी बलिराज, जाना चाहे दोबारा समझे।

सम्पर्क : भोपाल

राम- राम कहते रहो

संदीप सृजन

राम नहीं है कल्पना, राम जगत आलोक ।
राम नाम के जाप से दूर रहे भय, शोक
राम शब्द छोटा मगर. भरा भाव विस्तार ।
राम जीवन की सुचिता. राम श्रेष्ठ व्यवहार ।।
राम जगत में उर्ध्व हैं, राम सकल उत्कर्ष।
राम हृदय जिसके रहे, मिटे सभी संघर्ष ।
राम कविता में बसते, राम मयी हर छंद ।
राम कहानी में रहे, राम हरेक निबंध ।
राम ही सद् गृहस्थ है, राम रूप वैराग्य ।
राम रघुकुल भाग्य है, शबरी के सौभाग्य ।
राम नहीं व्याकुल हुए, सहज रहे हर भाव ।
राम नहीं चिंता करे, धूप मिले या छाँव ।
राम राम कहते रहो, राम जीव आधार ।
राम नहीं जो घट रहे, पहुंचे मरघट द्वार ।

लेखक सांस्कृतिक पत्रिका 'शास्वत सृजन' के सम्पादक हैं
सम्पर्क : 99 व्ही डी मार्केट बुधवारिया चौक, उज्जैन
मो.: 9406649733

जिन्नs कालमुखी की रामलीला नी देखी ऊ जलम्यो ज नी

शिशिर उपाध्याय

रूमेरा गाँव कालमुखी, जहां से मुझे संस्कार मिले जिन्ने कालमुखी की रामलीला नई देखी वो जन्मयाई नई निमाड़ी में जिन्न कालमुखी की रामलीला नी देखी ऊ जलम्यो ज नी सुप्रसिद्ध लेखक प्रो असगर वजाहत का चर्चित नाटक 'जिन्ने लाहौर नई वेख्या वो जन्मया नई' की तर्ज पर मैं भी इसी तर्ज पर यह बात सगर्व कह रहा हूँ। विगत कोरोना काल में चल रही दूरदर्शन की रामायण कथा 'भावों और गीतों से भरी राम कथा' हमारे देश मे त्याग और समर्पण की पुण्य संस्कृति रही है। डॉ रामानन्द सागर ने उपसंहार में कहा था कि राम कथा कभी समाप्त नहीं होगी हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता, श्री राम लीला मण्डल – कालमुखी (खण्डवा) के एक यादगार चित्र आपको साझा कर रहा हूँ।।

राम दरबार की झाँकी और श्री रामायण जी की आरती से प्रारंभ मेरे गाँव की राम लीला एक जमाने में माँ कावेरी के समोर –घाट पर होती थी, उस पार बड़ के नीचे रेत और मिट्टी से मंच बनता था। श्रोता मंच के बनने की खबर के साथ ही सामने की रेत में अपने – अपने टीले बना लेते थे। प्यास लगने पर रेत में झिरी बना कर बिसलेरी से भी ज्यादा शुद्ध पानी झुक झुक कर पीते थे।

मुझे याद है 1966–67 में पहली बार खबर लगी की इस बार 'डंडा बिजली और लाउड़ स्पीकर' भी आयेगा।

और फिर शाम की केवलराम बस से एक बड़ी मशीन उतरी (जनरेटर) जिसके साथ खोखों में डंडा बिजली (ट्यूब लाइट) भी थे, कालमुखी की रामलीला वर्तमान में राजनैतिक कारणों से विगत 2004 से बन्द हो गई हैं, किन्तु मुझे याद है,एक जमाने में साँझ ढलने के साथ ही आसपास के लगभग 20 गाँव वाले दर्शक बैल गाड़ियों, घोड़ा गाड़ियों, घोड़ियों से गाँव मे इसी नदी के तट पर डेरा डाल लेते थे, कुछ घर से खाना लेकर आते तो कुछ तट पर ही तीन पत्थर के चूल्हे पर तपेली में दाल रख कर कण्डो पर बाटी सेकते थे। एक मेले जैसा वातावरण हो जाता था। रामायण के वरिष्ठ गणेश जी के पात्र नायक पं राधेश्याम उपाध्याय के सुपुत्र प्रदीप उपाध्याय कहते हैं कि, हम तो बहुत छोटे थे लेकिन याद है रामलीला के पूरे 11 दिन तक गाँव के गणमान्य परिवारों व्दारा पूरी रामलीला मण्डली को सुस्वाद पकवानों का भोज दिया जाता था।

श्री रामलीला मण्डल - कालमुखी जिला खण्डवा

पुण्य सलिला कावेरी नदी जो ओंकारेश्वर जी की परकम्मा करती है के रेतीले तट समोर घाट पर पूर्वाभिमुख होकर ली गई तस्वीर मई 1966

सर्वश्रीAचम्पालाल निहालB प्रेमसिंह ठाकुर C कंचनलाल गंगराड़े
Dराधेश्याम उपाध्यायE श्रीकृष्ण गुप्ताFजीवनसिंह पटेल Gशंकरलाल गुप्ता
HगेंदालालजैनाI..........Jचंपालाल जीKमौजीलाल सेठLबाबूभाई वसावाल(चंगल्या)
Oअनोखीलाल लाड़,Pमांगीलाल जटाल्या(हनुमान)Qगोरेलाल लाड़
Rगुलाबसिंह झालाSचंदूभाई पेटिवालेTरामकृष्ण(सीता)M छोगालालजी N.........

आज भी जब गाँव जाता हूँ तो मेरी यादें भी उनके साथ कावेरी किनारे जाकर बैठ जाती है, आँखों के गीले पन के साथ, हालाँकि इस स्थान पर एक ऊँचा पुल बन गया है, जो पार लगाने का दावा भर करता है पार तो वो रामलीला ही करती थी, जो ग्यारह दिन तक चलती थी।

21 सृजन :शर्मा कालोनी
बड़वाह (खरगोन)
मो. न. 9926021858

कम्बल

सुरेश कुशवाह 'तन्मय'

जनवरी की कड़कड़ाती ठंड और ऊपर से बेमौसम की बरसात। आँधी–पानी व ओलों के हाड़ कँपाने वाले मौसम में चाय की चुस्कियाँ लेते हुए घर के पीछे निर्माणाधीन अधूरे मकान में आसरा लिए कुछ मजदूरों के बारे में चिंतित हो रहा था रामदीन। ये मजदूर जो बिना खिड़की–दरवाजों के इस मकान में नीचे सीमेंट की बोरियाँ बिछाये सोते हैं, इस ठंड को कैसे सह पाएँगे। इन परिवारों से यदा–कदा एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज भी सुनाई पड़ती है। ये सभी लोग एन सुबह थोड़ी दूरी पर बन रहे मकान पर काम करने चले जाते हैं और शाम को आसपास से लकड़ियाँ बीनते हुए अपने इस आसरे में लौट आते हैं। अधिकतर शाम को ही इनकी आवाजें सुनाई पड़ती है। स्वभाववश रामदीन उस मजदूर बच्चे के बारे में सोच–सोच कर बेचैन हो रहा था, इस मौसम को कैसे झेल पायेगा वह नन्हा बच्चा! शाम को बेटे के ऑफिस से लौटने पर रामदीन ने उसे पीछे रह रहे मजदूरों को घर में पड़े कम्बल व अनुपयोगी हो चुके कुछ गरम कपड़े देने की बात कही। कोई जरूरत नहीं है पापाजी, उन्हें कुछ देने की पता नहीं किस मानसिकता में उसने रामदीन को यह रूखा सा जवाब दे दिया। आहत मन लिए रामदीन बहु को रात का खाना नहीं खाने का कह कर अपने कमरे में आ गया। न जाने कब बिना कुछ ओढ़े, सोचते–सोचते बिस्तर पर नींद के आगोश में पहुँच गया पता ही नहीं चला। सुबह नींद खुली तो अपने को रजाई और कम्बल ओढ़े पाया। बहु से चाय की प्याली लेते हुए पूछा–बेटा उठ गया क्या? हाँ उठ गए हैं और कुछ कम्बल व कपड़े लेकर पीछे मजदूरों को देने गए हैं, साथ ही मुझे कह गए हैं कि, पिताजी को बता देना की समय से खाना खा लें और सोते समय कम्बल–रजाई जरूर ओढ़ लिया करें। यह सुनकर रामदीन की आज की चाय की मिठास और उसके स्वाद का आनंद कुछ और ही अधिक ही बढ़ गया।

226, माँ नर्मदे नगर,बिलेहरी, जबलपुर (म प्र),
मो. : 9893266014

आम का पेड़

विपिन चन्द्र साद

आज मां के द्वारा लगाए आम के पेड़ को देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है, पेड़ पर लगे एक एक आम, उनके द्वारा दिये हुए एक एक आशीर्वाद कि याद दिलाते हैं, याद आता है वो मंजर, जब मां ने वो पौधा अपने हाथों से आंगन में लगाया था, रोज उसकी साज संभाल करना, पानी देना, जानवरों से बचाना स्वयं करती थी। तब मैं ध्यान नहीं दे पाया था और कल्पना भी नहीं की थी कि ये पेड़ एक दिन ऐसे फल देगा। जब थोड़ा बड़ा हुआ तो पौधा भी पेड़ बन गया, गर्मी में पत्तों का झड़ना आम बात थी, मैं कभी कभी गुस्सा हो जाया करता था तो वो स्वयं ही पत्तों को इकट्ठा कर फेंकती थी आंगन साफ रखतीं थी कभी–कभी धूप में उसी आम की छाया में बैठकर सुस्ता लेती थी। धीरे–धीरे आम बड़ा हुआ, दो चार कैरी आना शुरू हुआ खुद ही शौक से तुड़वा कर कभी कैरी कि लोंजी तो कभी कैरी का पना बच्चों को बना कर खिलाती, बच्चे भी उसी आम की छाया में एवं मां की वात्सल्य मयी ममता में बड़े हो रहे थे, दिन बीतते गये पेड़ बड़ा होने लगा जड़े भी मजबूत होने लगी परन्तु मां ने हमसे रिश्तों की जड़ें कमजोर कर ली और एक दिन हमें रोता बिलखता छोड़ कर अनन्त यात्रा पर चली गई, उसी आम कि छाया में मां को सुलाया गया, हम सब के साथ आम का पेड़ भी आशीर्वाद ले रहा था। आज वह पेड़ विशाल और फलदार हो गया है मानो एक एक फल मां का आशीर्वाद हो, बच्चे भी बड़े शौक से फल खाते हैं और खुशी से कहते हैं हमारी दादी के हाथ का लगाया हुआ आम है, बहुत मीठा है।

446 प्रणाम सिटी–2, खंडवा

संदीप राशिनकर के चित्रों से सज्जित है नोबेल विजेता कैलाश सत्यार्थी की कृति 'सपनों की रोशनी'

इंदौर। नोबेल विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी जी द्वारा लिखी गई डायरियों के परिप्रेक्ष में एक प्रेरणास्पद पुस्तक हाल ही में सम्पन्न दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में आई है। 'सपनोँ की रोशनी' शीर्षक से प्रकाशित इस वैश्विक महत्व की कृति को दिल्ली के प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक श्री कैलाश सत्यार्थीजी द्वारा मात्र सत्रह वर्ष की उम्र में डायरी में लिखे सफलता के नौ सूत्रों पर आधारित है।

उल्लेखनीय है कि सत्यार्थीजी की यह तीसरी कृति है जिसकी चित्राभिव्यक्ति के लिए इंदौर के चित्रकार संदीप राशिनकर का चयन किया गया था। संदीप ने इस कृति में निहित नौ प्रसंगो को अपनी अभिनव शैली में चित्रित अठारह चित्रों में चित्रबद्ध कर प्रसंगो को रुचिकर और प्रभावी बनाया है। संदीप के बनाये चित्रों ने न सिर्फ इस कृति की रोचकता में वृद्धि की है वरन इसे और लक्षभेदी बनाया है। अनेक कृतियों के लिए बनाए अपने हजारों रेखांकनों से संदीप ने न सिर्फ राष्ट्रव्यापी ख्याति अर्जित की है वरन ज्ञान्तव्य है कि श्री सत्यार्थीजी की कोरोना पर लिखी चर्चित कृति कोविड–19 सभ्यता का संकट और समाधान और कैलाश सत्यार्थी के जीवन के प्रेरक प्रसंग में भी संदीप राशिनकर के चित्रों का समावेश किया गया था। उल्लेखनीय है कि भारत रत्न सत्यजित रॉय की एक कृति में भी आवरण के साथ संदीप ने आंतरिक चित्रण किया था।

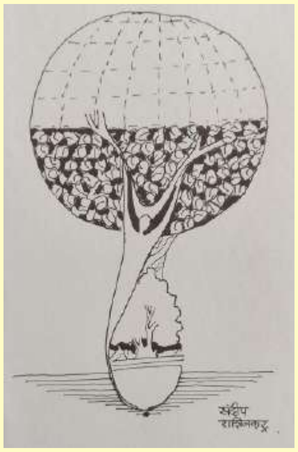

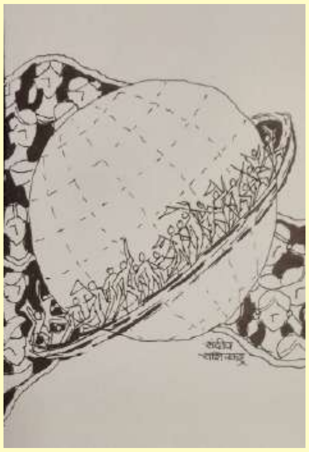

पिछलें दिनों रंगमंच...

पाहुना के छठवें महोत्सव में 'गांधी ने कहा था', 'दास्तान ए दानापुर' एवं 'भेड़िये' नाटक मंचित

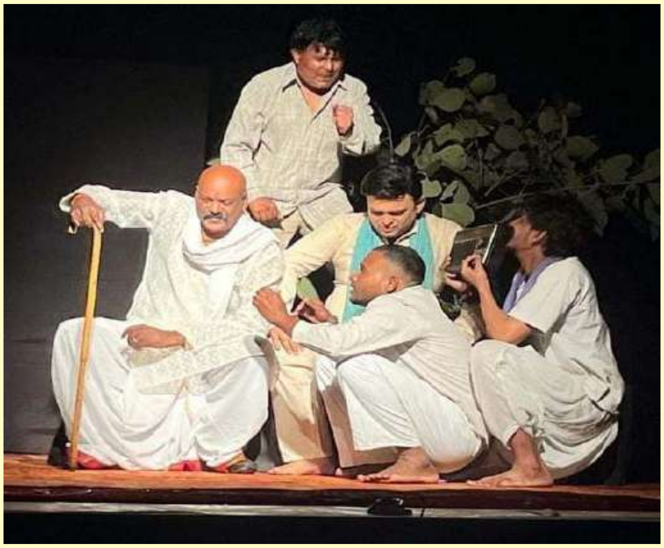

कटनी/टीकमगढ़ । टीकमगढ़ नगर की सर्वाधिक सक्रिय नाट्य संस्था पाहुना लोकजन समिति विगत कई वर्षों से रंगकर्म में सक्रिय भूमिका निभाते हुए क्षेत्र में स्वस्थ सांस्कृतिक वातावरण निर्मित करने में प्रयासरत है।

विगत 1 से 3 दिसम्बर 2023 को संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार एवं स्थानीय जन सहयोग से संस्था 'पाहुना लोकजन समिति' द्वारा तीन दिवसीय नाट्य समारोह नगर टीकमगढ़ नगर के शहनाई गार्डन में विधिवत रूप से आयोजित किया गया।

बुंदेलखंड के प्रसिद्ध बुंदेली कवि डॉ. देवदत्त द्विवेदी जी (बड़ा मलहरा,– छतरपुर) वरिष्ठ कवि जय हिंद सिंह (पलेरा), वरिष्ठ रंगकर्मी श्री अजय श्रीवास्तव (भोपाल) और बुन्देलखंड के प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री राजीव अयाची ने दीप प्रज्वलित कर नाट्य महोत्सव का शुभारंभ किया। तत्पश्चात पहली नाट्य प्रस्तुति राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से स्नातक ख्यातिलब्ध रंगकर्मी संजय श्रीवास्तव ने भुवनेश्वर की प्रसिद्ध कहानी भेड़िये का दर्शको के समक्ष मनमोहक प्रदर्शन किया। भेड़िए नाटक के कथासार की बात करें तो,– खारू बंजारा नटनियों को बेचने किसी बड़े शहर लेकर जाता है, इस काम मे खारू के बाप का मन नही था पर बेटे की जिद ने उसे चलने पर मजबूर कर दिया। रास्ते मे भेड़ियों का झुंड उनका पीछा करता है और जीवन जीने की जिजीविषा में एक एक कर सब मारे जाते हैं सिर्फ सिवाय खारू के.......भुवनेश्वर की कहानी भेड़िये का नाट्य लेख सुमन कुमार जी (उप सचिव, संगीत नाटक अकेडमी, नई दिल्ली) ने तैयार किया। स्थानीय दर्शकों के लिए एकल नाट्य प्रस्तुति एकदम नया अनुभव था। संजय श्रीवास्तव के आंगिक और वाचिक अभिनय ने दर्शको को मंत्रमुग्ध कर दिया। भेड़िये नाट्य प्रस्तुति का पार्श्वसंगीत संस्कार श्रीवास्तव ने तैयार किया, तथा संगीत संचालन मानस जैन ने किया। प्रकाश व्यवस्था में थे अशोक प्रजापति।

नाट्य महोत्सव की पहली नाट्य प्रस्तुति 'भेड़िये' के उपरांत क्षेत्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमे 20 आमंत्रित कवियों ने अपनी बोली बुंदेली, हिंदी और उर्दू भाषा में अपनी काव्य रचनाओं का मनमोहक पाठ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। पाहुना नाट्य संस्था ने विगत कुछ वर्षों कवि सम्मेलन का आयोजन भी शुरू किया है, जिसका मुख्य उद्देश्य यह है कि स्थानीय रंगकर्मी और साहित्यकार एक दूसरे से जुड़कर उनका काम देखें–सुने। एक दूसरे के साथ सम्वाद स्थापित हो। भविष्य में संस्था साहित्यक गोष्ठियों का आयोजन भी शुरू करेगा, जिसमे स्थानीय साहित्यकार अपनी कहानी, व्यंग्य, और नाटकों का पाठ कर उनकी समीक्षा करेंगे।

नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन संप्रेषणा नाट्य मंच, कटनी (मध्य प्रदेश) की साम्प्रदायिक सद्भावना पर आधारित सशक्त नाट्य प्रस्तुति गांधी ने कहा था प्रस्तुत की गई। इस नाटक के लेखक थे राजेश कुमार और निर्देशित किया था सादात भारती ने।

हिन्दू परिवार में मुस्लिम बच्चे के पालन पोषण के द्वंद्व और संघर्ष की कहानी को रेखांकित करता यह नाटक देश की वर्तमान हालात के सच को बयां करता है। नाटककार ने अपने नाटक 'गाँधी ने कहा था' के माध्यम से जाति– पाति और वर्ग–भेद से से ऊपर उठकर इंसानियत को सबसे बड़ा धर्म माना है, और इस संदेश को जाने–माने युवा नाट्य निर्देशक जनाब सादात भारती ने अपनी परिकल्पना और कुशल निर्देशन से अत्यंत प्रभावपूर्ण तरीके से दर्शकों के मन–मस्तिष्क तक बड़ी ही सहजता से पहुँचाया है। नाटक की कहानी शुरू होती है 14 अगस्त 1947 की आधी रात से, जब गांधी जी बेलाघाट की तंग गलियों में एक मुस्लिम मजदूर के घर अनशन पर बैठे थे तभी तारकेश्वर पांडे आता है और उन्हें उपवास तोड़ने को कहता है क्योंकि उनका उसका इकलौता पुत्र दंगों में

मारा गया इस दुख और वेदना से उबरने के लिए गांधी जी उसे एक बच्चा ढूंढ कर उसकी परवरिश करने की सलाह देते हैं। लेकिन शर्त रहती है कि बच्चा मुसलमान होना चाहिए और उस बच्चों की परवरिश मुस्लिम तौर– तरीके से होनी चाहिए। तारकेश्वर लौटकर घर आता है और आफताब नाम के बच्चे की परवरिश करता है। तारकेश्वर की पत्नी सुमित्रा समाज, संस्कृति और परंपराओं के द्वंद्व को काटकर भी बच्चे की मां का प्यार देती है और उसे अच्छा इंसान बनाना चाहती है, लेकिन आतंकवाद की अंधेरी गलियों में धँसकर आफताब भटक जाता है पर वह अंततः लौटकर आता है और गांधी के सत्य को यथावत करता है। नाटक 'गांधी ने कहा था' दिलों को पास लाने की दिशा में एक सफल प्रयास है। वर्तमान मे सांप्रदायिक लोग जिन सवालों को खड़ा कर लोगों के जेहन में सांप्रदायिकता का गुबार भर देना चाहते हैं उसका असली चेहरा उजागर होता है। एक तरह से यह नाटक तोड़ने वाली ताकतों को बेनकाब करता है तो दूसरी तरफ जोड़ने वालों को शक्ति प्रदान करता है। इंसानियत से ही हर इंसान को एक दूसरे से जोड़ा जा सकता है। तारकेश्वर की भूमिका में योगेश तिवारी, सुमित्रा की भूमिका ने ज्योति सिंह, आचार्य की भूमिका में के.एल.राव और आफताब की भूमिका में बाल कलाकार शुभम रजक ने अपने अभिनय से दर्शकों को बहुत प्रभावित किया।

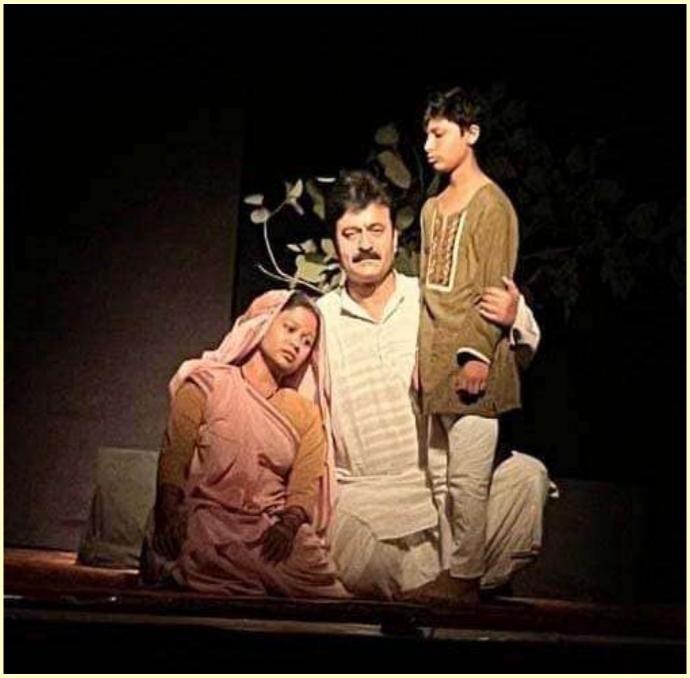

नाटक में भाग लेने वाले अभिनेता थे – अनुज मिश्रा, योगेश तिवारी, ज्योति सिंह, के एल राव, युग रजक, शिव रजक, शुभम रजक, शिवानी अहिरवार, अनन्या, सतीश अहिरवार, प्रहलाद रजक, ऋषि परोहा, आदित्य गोस्वामी, शिव कुमार रजक, निर्मल सिंह, दीपक केवट, आकाश तिवारी, अनिल बर्मन, गणेश माथुर, और आशुतोष गुप्ता प्रकाश परिकल्पना, मंच सज्जा एवं निर्देशन सादात भारती ने किया था।

साम्प्रदायिक सद्भावना और भाईचारे पर आधारित इस नाट्य प्रस्तुति को स्थानीय दर्शकों ने खूब सराहा। नाट्य महोत्सव के तीसरे व अंतिम दिन 'दास्तान–ए–दानापुर' का मंचन किया गया। यह नाटक रशियन नाटककार निकोलाई गोगोल द्वारा लिखित नाटक 'द गवर्मेंट इंस्पेक्टर' का भारतीय परिवेश में नाट्य (बुंदली/हिंदी) अनुवाद है। जिसकी कहानी इस तरह है दानापुर हिंदुस्तान के दूर–दराज किसी कोने में बसा एक ऐसा नगर है जहां आजादी के बाद से अब तक न तो कुछ खास विकास हुआ न ही परिवर्तन आया। दानापुर नगर व्यवस्था के कुछ जिम्मेदार एवं ओहदेदार लोगों की लापरवाही और मनमानी का शिकार है। यह जिम्मेदार लोग अपने स्वार्थ वश गैरकानूनी काम करने से भी नहीं कतराते इन्हीं लोगों की गतिविधियों की खबर दिल्ली में बैठी सरकार तक पहुंच जाती है, इसलिए दिल्ली की सरकार दानापुर में हो रही गतिविधियों की जांच पड़ताल करने के लिए खुफिया जासूस भेजती है। खुफिया जासूस की खबर लगते ही दानापुर के नगर मुखिया और उनके साथियों के मन में डर बैठ जाता है। डर और घबराहट की वजह से ये लोग तिहाड़ जेल से भागे हुए दो अपराधियों को खुफिया जासूस समझ कर उनकी चापलूसी और खातिरदारी में लग जाते हैं। इसी भ्रमवश जो घटनाएं घटती है उनसे एक और जहाँ हास्य उत्पन्न होता है तो वहीं दूसरी और नौकरशाही की मनमानी, व्यवस्था की खामियाँ और आम आदमी की पीड़ा हो उजागर होती है।

दास्तान–ए–दानापुर नाटक के माध्यम से भ्रष्ट नौकरशाही के दुष्परिणामों से व्यवस्था में फैली खामियों एवं आम जनता की पीड़ा को दर्शाया गया है। इस नाटक को प्रदर्शन हेतु तैयार करने के दो कारण हैं पहला तो यह कि, 1836 में लिखा गया यह रूसी नाटक वर्तमान में भारतीय पृष्ठभूमि व सामाजिक परिवेश में अत्यंत समसामयिक व प्रासंगिक है तथा दूसरा कारण यह कि आज हम जिस बाजारवाद के दौर में जी रहे हैं वह हमें जबरदस्ती हीनता के गर्त में धकेल रहा है। हम अपनी ही लोक संस्कृति को हेय दृष्टि से देखने लगे हैं, परिणाम स्वरूप दिनों–दिन हमारी लोक सांस्कृतिक अपनी पहचान खोती जा रही है। इसीलिए मैंने इस नाटक को बुंदेली बोली में तथा लोक सांस्कृति के विविध रंगों में रंगकर प्रस्तुत करने का निर्णय लिया, ताकि हम नाटक के साथ–साथ अपनी समृद्ध

लोक सांस्कृतिक धरोहर को ससम्मान दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। नाटक का निर्देशन किया है टीकमगढ़ नगर के जाने–माने युवा रंगकर्मी सन्दीप श्रीवास्तव ने, जो स्वयं कुशल अभिनेता भी हैं, इन्होंने इस नाटक में मुख्य भूमिका भी निभाई। इनके अलावा नाटक में कुलदीपक शर्मा, प्रसून तिवारी, फिजा रंगरेज, सोनिका नामदेव, जैकी जैन, बृजकिशोर नामदेव, मानस जैन, राजेश विश्वकर्मा, मनोज लोदी, अंकित जैन वृंदावन अहिरवार, अशोक प्रजापति, एवं संगीता विश्वकर्मा, ने अपने मनमोहक अभिनय से दर्शकों को खूब हँसाया। हर वर्ष की भाँति पाहुना नाट्य संस्था द्वारा छठवें नाट्य महोत्सव में अलग अलग रंग की तीन नाट्य प्रस्तुतियों के प्रदर्शन एवं कवि सम्मेलन के आयोजन हेतु क्षेत्र के सुधि दर्शकों ने पाहुना के प्रयासों की भूरी– भूरी प्रसंशा भी की। सर्दी का मौसम ऊपर से मुक्ताकाशी मंच भी दर्शकों की संख्या लगातार बढ़ती गई। कार्यक्रम के अंत में संस्था के सचिव श्री संदीप श्रीवास्तव ने सभी कला प्रतिभाओं, आमंत्रित अतिथि रंगकर्मियों एवं समस्त दर्शकों का आभार व्यक्त किया। पाहुना परिवार के सभी सदस्यों ने अथक परिश्रम किया सभी के प्रयास से यह नाट्य महोत्सव सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। संस्था का हर सदस्य साधुवाद का पात्र है। अंत में संस्था के संरक्षक मंडल श्री फूलचंद जैन, श्री अजीत श्रीवास्तव, श्री रामगोपाल रायकवार, श्रीमती अनीता श्रीवास्तव और श्रीमती डॉ. प्रीति परमार तथा संस्था के संस्थापक श्री संजय श्रीवास्तव ने पाहुना संस्था के सृजनात्मक काम की समीक्षा व सराहना कर पाहुना परिवार के सभी सदस्यों को मनोबल प्रदान किया।

लेखक क्या लिखें उससे अधिक आवश्यक है क्या ना लिखें - सुरेश तन्मय

भोपाल। लघुकथा लेखक क्या लिखें इससे अधिक इस बात के प्रति ज्यादा सचेत रहें कि क्या ना लिखें, आज लघुकथा लेखक हड़बड़ी और जल्दबाजी में बहुत सारी लघुकथाएँ लिखकर विधा का नुकसान कर रहे हैं। लघुकथा लेखन एक गंभीर कार्य है लघुकथा वृहद् कैनवास पर कम से कम शब्दों में बड़ी बात कहने का श्रम साध्य सृजन है। यह उद्‌गार हैं वरिष्ठ साहित्यकार सुरेश कुशवाह तन्मय के जो लघुकथा शोध केंद्र समिति द्वारा सुपरिचित साहित्यकार अशोक धमेनियाँ आयोजित ऑनलाइन बुधवारीय लघुकथा गोष्ठी में लघुकथा पाठ की अध्यक्षता करते हुये बोल रहे थे। इस आयोजन में अशोक धमेनिया ने विविध विषयी लघुकथाएँ दान, प्रवासी, कौवा और कोयल, चेहरा पे चेहरा और सेवा परमोधर्म लघुकथाओं का वाचन किया। इन लघुकथाओं पर लघुकथाकार और समीक्षक मृदुल त्यागी ने समीक्षात्मक टिप्पणी देते हुए प्रस्तुत लघुकथाओं के शिल्प और कथ्य को लेकर महत्वपूर्ण बातें कहीं, उन्होंने बेबाकी से इन लघुकथाओं में जो कमियाँ और खूबियाँ थीं उन्हें रेखांकित किया। इस आयोजन का सफल और सुमधुर संचालन मुजफ्फर इकबाल सिद्दीकी ने किया। कार्यक्रम में लघुकथा शोध केंद्र समिति की निदेशक कांता राय ने भी अपने विचार रखे, आयोजन में स्वागत उद्‌बोधन संयोजक कर्नल डॉ. गिरजेश सक्सेना ने दिया और अंत में आभार डॉ.रंजना शर्मा ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रदेश और देश के अनेक महत्वपूर्ण लघुकथा प्रेमी पाठक और लेखक उपस्थित थे।

कानपुर में सम्पन्न राष्ट्रीय नाट्य समारोह में भोपाल के कलाकारों द्वारा मंचित नाटक 'पंचलेट', 'आधेअधूरे' रहे आकर्षण का केन्द्र

कानपुर, रंग संस्कृति प्रतिनिधि। पिछलें दिनों शहर के चैम्बर ऑफ मर्चेंट सभागार में अनुकृति मण्डल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय नाट्य समारोह सम्पन्न हुआ। जिसमें भोपाल की रंग संस्थाओं अविराम जनकल्याण एवं पिंकबर्ड सोशियो एवं कल्चरल समिति के कलाकारों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करयी। चार दिवसीय इस नाट्य समारोह का प्रारंभ अनुकृति रंग मण्डल कानपुर के कलाकारों द्वारा नाटक मामूली आदमी के मंचन से हुआ। प्रसिद्ध लेखक अशोक लाल द्वारा लिखित इस नाटक का निर्देशन वरिष्ठ रंगकर्मी एवं कंजूस मक्खीचूस, असुर 2 जैसी हिट फिल्म/वेबसीरीज में महत्वपूर्ण किरदार निभा चुके अभिनेता डॉ. ओमेन्द्र कुमार ने किया।

नाटक में दिखलाया गया कि महापालिका के दफ्तर में बड़े बाबू ईश्वर चंद्र अवस्थी (महेन्द्र धुरिया) सीधे सादे, ईमानदार लेकिन सिद्धांतों पर चलने वाले इंसान हैं। पत्नी के न रहने पर उन्होंने अपने बेटे उमेश (दीपक राही) का जीवन संवारने में अपनी सारी उम्र लगा दी। जैसा कि आमतौर पर होता है शादी के बाद उमेश अपनी पत्नी रमा (दीपिका) व बेटे स्वप्नेश के साथ अपनी एक अलग ही दुनिया में व्यस्त हो गया। जबकि ईश्वर चंद्र का जीवन घर और दफ्तर के बीच ही सिमटता चला गया। रिटायरमेंट करीब आते देख अवस्थी जी को अकेलेपन का एहसास होता है, वह दफ्तर के मस्तमौला साथी खरे (विजयभान सिंह) का साथ पाने की कोशिश करते हैं मगर उन्हें वो खुशी नहीं मिलती जिसकी उन्हें तलाश थी। दफ्तर की एक क्लर्क लक्ष्मी (संध्या सिंह), जो कि बेहद खुश मिजाज है, ईश्वर चंद्र लक्ष्मी से उसके खुश रहने का राज जानने की कोशिश करते हैं, और यहीं उन्हें हासिल होता है खुशहाल जीवन का सूत्र।

बारुद के धमाकों के बीच नफरत और मोहब्बत की जंग

अनुकृति रंगमंडल कानपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय नाट्य समारोह में दूसरे दिन अनुकृति रंगमंडल कानपुर के कलाकारों ने नाटक टेररिस्ट की प्रेमिका का शानदार मंचन किया। अभी हाल में ही राष्ट्रपति से सम्मानित लेखक पाली भूपिंदर सिंह के इस नाटक का निर्देशन डॉ. ओमेन्द्र कुमार ने किया।

संवेदनशील संवाद, सस्पेंस और थ्रिल से सजे इस नाटक की नायिका अनीत (संध्या सिंह) प्रकृति से प्रेम करती है। उसका विवाह पुलिस अफसर देवराज सिंह (विजयभान सिंह) से होता है। देव की पोस्टिंग पहाड़ी इलाके में है, अनीत खुश होती है कि आसमान छूते पहाड़, देवदार के वृक्ष, सफेद बादलों के बीच खूबसूरत जीवन का उसका सपना शायद सच हो गया, लेकिन यहां गोलियों के धमाके उसे निराशा करते हैं। उसे पता चलता कि यह इलाका आतंक प्रभावित क्षेत्र है। तभी कहानी में प्रवेश होता है एक अजनबी (दीपक राज राही) का अजनबी यह बताता है कि देव ने किस तरह उसका पता जानने के लिए उसकी प्रेमिका नीलू को पांच दिन हिरासत में रखा, बुरी तरह उसे टार्चर किया। और अंत में तकलीफ की इंतहा होने पर पुलिस हिरासत में ही नीलू ने अपनी जान दे दी। अनीत के किरदार को संध्या सिंह ने बहुत ही शिद्दत के साथ जीवंत किया। अन्य कलाकारों का अभिनय भी सहज,स्वाभाविक था।

राम को भक्ति से मिला शक्ति का समर्थन...

अनुकृति रंगमंडल कानपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय नाट्य समारोह में तीसरे दिन अनुकृति कानपुर के कलाकारों ने नाटक राम की शक्ति पूजा के मंचन से पूरा माहौल राम मय बना दिया।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की यह कविता राम–रावण युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। युद्ध के दौरान एक दिन राम यह देख कर चिंतित होते हैं कि उनके अचूक बाण लक्ष्य भ्रष्ट हो रहे हैं। रावण की सेना उत्साहित है तो वहीं राम और उनकी सेना बहुत खिन्न और मायूस। पूजा के अंतिम चरण में शक्ति (माँ दुर्गा) राम की परीक्षा लेने के लिए अंतिम फूल चुरा लेती हैं। राम बहुत निराश हो जाते हैं लेकिन फिर वह विभीषण से कहते हैं कि उनकी माँ उन्हें कमल नयन कहा करती थीं। वह खोये हुए कमल के स्थान पर अपना एक नयन देवी को अर्पित कर देंगे। जैसे ही वह देवी को अपनी आँख चढ़ाने को होते हैं, शक्ति प्रकट होकर राम का हाथ पकड़ लेती हैं। मां प्रसन्न हो राम को विजयी होने का आशीर्वाद देती और राम के शरीर में विलीन हो जाती हैं। नाट्य समारोह की दूसरी प्रस्तुति थी पिंक बर्ड सोशियो कल्चरल सोसाइटी और ड्रामेबाज समिति भोपाल का नाटक पंचलेट नाटक की मूल कहानी फणीश्वर नाथ रेनू की है जबकि नाट्य रूपांतरण सुनील राज ने किया। बुंदेली अनुवाद व सहायक निर्देशक आरती विश्वकर्मा, निर्देशन अनुप शर्मा का था। नाटक में मुख्य पात्र सुनील राज ने गोधन के रूप में, नायिका मुनरी, आरती विश्वकर्मा, और अन्य कलाकार थे। सार्थक त्रिपाठी, अन्नू अहीरवार, ओशिन श्रीवास्तव, रोहित पटेल, विभांशु खरे, संतोष पडित के अलावा पीयूष सैनी, आधार नामदेव, मोहित मित्रा, ओशीन श्रीवास्तव, हिमांशु प्रजापति अमन, प्रियांश, हर्ष राज, कमलेश दुबे आदि ने अभिनय किया।

दिल से न निभाये रिश्ते रह जाते आधे अधूरे

'मोहन राकेश के कालजयी नाटक आधे अधूरे के साथ हुआ राष्ट्रीय नाट्य समारोह का समापन' अनुकृति रंगमंडल कानपुर द्वारा संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से मर्चेंट चेंबर आडिटोरियम सिविल लाइंस में आयोजित राष्ट्रीय नाट्य समारोह का समापन मोहन राकेश के कालजयी नाटक आधे अधूरे के मंचन के साथ हुई। अविराम जन कल्याण, भोपाल की इस नाट्य प्रस्तुति का निर्देशन सुनील राज ने किया।

नाटक में सावित्री के चरित्र के जीवन के कशमकश को आरती विश्वकर्मा ने बहुत ही शिद्दत से जीवंत किया। बड़ी बेटी बिन्नी व छोटी किन्नी के किरदार को ओशीन श्रीवास्तव और अन्नू अहिरवार ने बखूबी निभाया। बेटे अशोक के चरित्र को विभांशु खरे ने बेहद सहज भाव से साकार किया।

सीमित साधनों, अनूकूलतम संगीत के साथ प्रभावी संदेश दे गया नाटक 'आत्महंता'

भोपाल, (पंकज चौबे।) सृजनात्मकता संसाधनों की मोहताज नहीं होती है। पिछलें दिनों शहर में मंचित एक छोटे से ब्लैक बॉक्स, जिसे मकान के तलघर में बनाया गया था, में असीम संभावनाओं से भरे युवा निर्देशक चैतन्य सोनी के निर्देशन में नाटक आत्महंता देखा।
शहर की चुनिंदा रंगमंचीय शख्शियतों के मौजूदगी में एक बेहद भावनात्मक और लगभग थ्रिलर जैसे कथानक को सीमित लाइट लेकिन अनुकूलतम संगीत संयोजन के माध्यम से जिस प्रभावी ढंग से डिजाइन किया गया और लगभग 8 बाई 8 के मंच पर पियूष और सौरभ ने जिस ढंग से पात्रों को बिना ब्लॉकिंग गैप के जिया उसके लिए पूरी युवा टीम बधाई की पात्र होनी चाहिए। मुकेश शर्मा जी का इस तरीके का दृष्टिकोण वाकई रंगकर्म की दुनिया में किसी नए प्रकाश पुंज की तरह है जिसका दायरा समय के साथ निश्चित रूप से बढ़ेगा। इस तरह के शो एक तरीके का रंगमंचीय ऐलान भी है कि सरकार अगर रंगकर्मियों की जायज जरूरतों जिनमें रिहर्सल स्थल और शहीद भवन के दामों पर शहर के हर कोने में एक हॉल उपलब्ध करा दे तो भोपाल, जिसे अपनी रंगकर्मीय गतिविधियों के लिए पूरे देश में जाना जाता है, के संभावनाओं से भरे ये युवा रंगकर्मी न सिर्फ रंगकर्म के क्षेत्र में बल्कि समाज को नई दिशा देने और एक जिम्मेवार समाज के निर्माण में महती भूमिका निभा सकते हैं।

वसंत राशिनकर स्मृति अ. भा. सम्मान घोषित

इंदौर। आपले वाचनालय एवं श्री सर्वोत्तम द्वारा उत्कृष्ट मराठी काव्य कृतियों को दिए जाने वाले वसंत राशिनकर स्मृति अखिल भारतीय सम्मानों की घोषणा कर दी गई है।

संस्था सचिव संदीप राशिनकर ने बताया कि देशभर से आई काव्य संग्रहों की प्रविष्टियों में से निर्णायक मंडल ने लातूर के प्रतिभाशाली कवि प्रताप वाघमारे की कृति सांजार्त का चयन कविवर्य वसंत राशिनकर स्मृति अ. भा. सम्मान 2023 के लिए किया है. ज्ञान्तव्य है की इसके पूर्व सर्वश्री रविचन्द्र हडसनकर, दासू वैद्य,गीतेश गजानन शिंदे, संजय चौधरी, डॉ. विशाल इंगोले, राजू देसले एवं डॉ. बाला साहेब लबडे इस प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित हो चुके है। उल्लेखनीय काव्य कृतियों को दिए जाने वाले वसंत राशिनकर काव्य साधना अ. भा. सम्मान 2023 के लिए बेलगांव की हर्षदा सुंठणकर की कृति कपडे वाळत घालणारी बाई , ठाणे के उदय भिडे की कृति बोलकी चित्रे, पुणे की सीमा गांधी की कृति मनाचे सोहले, ऋचा दीपक कर्पे, देवास की कृति आभास, अमळनेर के रमेश पवार की कृति गावगाड्याच्या पडझडिचे संदर्भ, उदगीर के प्रा. ज्ञानेश्वर हंडरगुलीकर की कृति अभंग ज्ञानेश्वर, पुणे की संजीवनी बोकील की कृति हिरव्या सूक्तांच्या प्रदेशात का चयन किया गया है। आपले वाचनालय राजेंद्र नगर में निकट भविष्य में होने वाले गरिमामय समारोह में ये सम्मान प्रदान किये जायेंगे।.

सैनिकों के लिए जरूरी है योग, आती है एकाग्रता

महेश अग्रवाल

तटरक्षक दिवस भारत में 1 फरवरी को मनाया जाता है। यह दिन उन वीर जवानों के प्रति समर्पित है जो अपनी जान की परवाह किए बगैर अपना जीवन देश सेवा में लगा देते है। यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा तटरक्षक बल है। एक तट रक्षक जहाज पर जीवन आकर्षक, साहसिक और चुनौतीपूर्ण होता है। समुद्र में मानव जीवन को बचाने और संकट में मछुआरों की सहायता करने से लेकर शिकारियों को पकड़ने और समुद्री जैव विविधता को संरक्षित करने तक, 'तट रक्षक' अपनी नौकरी करते हैं। समुद्र में प्रत्येक दिन आशाओं से भरा होता है, और प्रत्येक मिशन अद्वितीय तरीके से भिन्न होता है। भारतीय तट रक्षक भारतीय नौसेना, सीमा शुल्क विभाग, यहां तक कि राज्य और सामान्य पुलिस बलों के साथ भी सहयोग करता है।

भारतीय तट रक्षक का आदर्श वाक्य 'वयं रक्षामः – हम रक्षा करते हैं'। हर दिन वे खुद को कई मिशनों में शामिल कर रहे हैं। हमारे देश और नागरिकों की सुरक्षा के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयासों की हमें निश्चित रूप से सराहना करनी चाहिए।

योग गुरु अग्रवाल ने सेना में सैनिको एवं उनके परिवार के लिये योग के महत्व के बारे में बताया कि योग और अध्यात्म हमारा स्वभाव है, रोग हमारा स्वभाव नहीं है। योग के माध्यम से हम पूर्ण स्वास्थ्य, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं। योग जीवन जीने की कला और विज्ञान है, और इसका संबंध मन और शरीर के विकास से है। अतः समन्वित रूप से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने के लिए योग क्रमबद्ध अनुशासनों का समावेश करता है। हम योगानुशासनों का आरंभ प्रायः व्यक्तित्व के बाहरी आयाम, भौतिक शरीर से ही करते हैं। आसनों का अभ्यास मेरुदण्ड के अतिरिक्त मांसपेशियों तथा जोड़ों को स्वस्थ और लचीला बनाये रखता है। विभिन्न ग्रंथियों की सूक्ष्म मालिश हो जाती है जिससे अवटु (थाइरॉयड) – अतिक्रियता या अवक्रियता, इंसुलिन का दोषपूर्ण स्राव और अन्य हॉर्मोन असंतुलन जैसी दैहिक असामान्यताएँ संतुलित हो जाती हैं। प्राणायाम केवल फेफड़ों में शुद्ध वायु पहुँचाने और उन्हें शक्ति प्रदान करने के कारण महत्त्वपूर्ण नहीं, बल्कि ये मस्तिष्क और भावनाओं पर भी सीधा असर डालते हैं। प्राणायाम के द्वारा प्राप्त हुई भावनात्मक स्थिरता मानसिक एवं सृजनात्मक ऊर्जाओं को रचनात्मक ढंग से मुक्त करती है और बच्चा अधिक आत्म–विश्वास, आत्म–सजगता तथा आत्म–नियंत्रण से भर उठता है। प्रत्याहार बाहरी वातावरण से सजगता को अन्दर खींचकर दैनिक जीवन के तनाव को कम करता है। प्रत्याहार की विभिन्न विधियाँ, जैसे योग निद्रा, व्यक्ति के सभी आयामों को प्रभावित करती हैं, क्योंकि सजगता के प्रत्यावर्तन से उत्पन्न शारीरिक एवं मानसिक शिथिलीकरण तथा एकाग्रता इस विधि के महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं। अविच्छिन्न एकाग्रता या ध्यान मन के उपद्रवों को शांत करने और मानसिक शक्तियों को सृजनात्मक दिशा प्रदान करने में अत्यंत सहायक होता है। योगानुशासनों की नियमित पुनरावृत्ति के द्वारा दैनिक जीवन में समचित्तता की अनुभूति और बाद में सभी यौगिक अभ्यासों के अंतिम लक्ष्य, समाधि को पाया जा सकता है। योग का अभ्यास सम्पूर्ण व्यक्तित्व में एक संतुलन उत्पन्न करता है।

(लेखक के ये अपने विचार हैं।)

आम आदमी के लिए आम आदमी से प्रेरित संगीत

विनोद नागर

फिल्म संगीत भारतीय फिल्मों का एक अनिवार्य घटक रहा है। हिन्दी फिल्मों की सफलता में उसके गानों की अहमियत जग जाहिर है। भारतीय सिनेमा की एक सदी से लम्बी विकास यात्रा के हर दौर में सिने संगीत का अद्भुत योगदान उन कालजयी गीतों की अनमोल धरोहर के रूप में आज भी अजर अमर है। इस धरोहर को सहेजने में देश–विदेश में फैले असंख्य फिल्म संगीत रसिकों का अद्भुत योगदान रहा है। इन्दौर में राऊ के पास ग्राम पिगडम्बर में रहने वाले सुमन चौरसिया को ही लीजिये, जिन्होंने अपने सीमित साधनों से पुराने ग्रामोफोन रिकार्ड्स का एक अनूठा संग्रहालय कायम किया है। वर्षों पूर्व उन्होंने मुंबई जाकर महान पार्श्व गायिका लता मंगेशकर को उन्हीं के गाये कुछ दुर्लभ गीतों के ग्रामोफोन रिकॉर्ड भेंट किये थे। जिन्हें पाकर लताजी इतनी खुश हुई थीं कि उन्होंने सुमन चौरसिया के लिए अपने घर 'प्रभु कुंज' के दरवाजे हमेशा के लिए खोल दिये थे। फिल्म संगीत की धरोहर को कागज के पन्नों पर संरक्षित करने का एक और श्रमसाध्य काम कानपुर के हरमंदिर सिंह 'हमराज' ने किया है। अपने छह खण्डों वाले हिन्दी फिल्म गीत कोश में उन्होंने 1931 से 1985 के फिल्मी गीतों का ब्योरा बड़ी शिद्दत से समेटा है। इसी कड़ी में अब एक नाम और जोड़ा जा सकता है– वड़ोदरा के अजय पौंडरिक का। पेशे से मैकेनिकल इंजीनियर और बॉयलर टेक्नोलॉजी में निष्णात इस फिल्म संगीत रसिक के मन में बॉयलर की खदबदाती भाप की जगह लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत से सजे गीतों की दीवानगी का प्रेशर इतना बढ़ गया कि सेवा निवृत्ति के उपरांत उन्होंने इस महान संगीतकार जोड़ी पर बड़े आकार के करीब सात सौ पृष्ठों की एक भारी–भरकम किताब लिख डाली है. 'लक्ष्मीकांत प्यारेलालः म्यूजिक फॉर एवर.. एन एलपी इरा 1963–1998 ' नामक अंग्रेजी में लिखी इस पुस्तक में उन्होंने कभी हिन्दी फिल्मों की सफलता की गारंटी मानी जानेवाले 'एलपी' के बेजोड़ योगदान को बड़े ही दिलचस्प अंदाज में रेखांकित किया है। लेखक ने लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत का समग्र मूल्यांकन करते हुए उसे 'आम आदमी द्वारा आम आदमी के लिये आम आदमी से प्रेरित संगीत' परिभाषित किया है। फिर चाहे वह रोमांटिक युगल गीत हों या सोलो सॉग, कव्वाली हो या मुजरा, भजन और लोरी हो अथवा गजल या लोक धुनों से सजे गीत हों या शास्त्रीय रागों पर आधारित गानेय 'एलपी स्टाइल' ने सदैव अपनी अलग छाप छोड़ी. हालाँकि ढोलक और तबला उनके प्रिय वाद्य रहे हैं, लेकिन वायलिन, मेंडोलिन, सितार, संतूर, गिटार, पियानो, एकोर्डियन, कांगो–बांगो सहित अन्य देशी–विदेशी वाद्ययंत्रों का भी उन्होंने लाजवाब इस्तेमाल अपनी बनाई धुनों और पार्श्व संगीत में किया। यह पुस्तक बताती है कि बचपन में मुंबई में तंगहाली का जीवन गुजारते हुए लक्ष्मीकांत कुदालकर और प्यारेलाल शर्मा को संगीत से लगाव पारिवारिक विरासत में मिला। दस–बारह साल की उम्र से ये दोनों किशोर आजीविका के लिए स्टूडियोज में फिल्मी गानों की रिकॉर्डिंग के दौरान मेंडोलिन और वायलिन बजाने लगे थे। एक ने हुस्नलाल भगतराम, सी. रामचंद्र, शंकर जयकिशन, ओ.पी. नैयर, हेमंत कुमार, रवि, रोशन, एस.डी. बर्मन द्वारा संगीतबद्ध कई गीतों में मेंडोलिन बजाया, वहीं दूसरे ने बुलो सी. रानी, नौशाद, मदन मोहन, खैयाम, चित्रगुप्त आदि के लिए वायलिन पर तान छेड़ी। लेकिन इनकी दोस्ती परवान चढ़ी लता मंगेशकर और उनके परिवार द्वारा संचालित 'सुरीला बाल कला केंद्र' में नियमित रूप से आने वाले दस–पंद्रह बच्चों की संगत में जिनमें लताजी के अनुज हृदयनाथ मंगेशकर, लक्ष्मीकांत के भाई शशिकांत और प्यारेलाल के भाई गणेश व गोरख भी शामिल थे। 1957 में कल्याणजी आनंदजी के सहायक बनने के छह साल बाद 1963 में 'पारसमणि' से फिल्मों में नई संगीतकार जोड़ी के बतौर 'एलपी' का लॉन्ग प्लेयिंग रिकॉर्ड बजना शुरू हुआ। राजश्री की भावनाप्रधान 'दोस्ती' (1964) के गीतों की अपर लोकप्रियता ने इस जुगलबंदी को शिखर पर पहुँच दिया। उनका संगीत फिल्मों की सफलता की गारंटी माना जाने लगा। उन्होंने जिन पांच सौ से अधिक फिल्मों के ढाई हजार से अधिक गीतों को अपने मधुर संगीत से संवारा, उनमें से एक सौ दस फिल्मों ने गोल्डन/सिल्वर जुबिली मनाई। वे एकमात्र ऐसे संगीतकार रहे जिन्होंने हर दौर के नामचीन फिल्म निर्माता–निर्देशकों के साथ काम किया। सत्तर से ज्यादा गीतकारों ने उनकी फिल्मों के गीत लिखे और डेढ़ सौ से अधिक पार्श्व गायक–गायिकाओं ने उन्हें गाकर अपनी पैठ बनाई। गीतकार आनंद बख्शी के साथ उनकी जबरदस्त ट्यूनिंग थी जिन्होंने उनकी आधे से अधिक फिल्मों के गाने लिखे। उनके सर्वाधिक (712) गीत लताजी ने गाये। लगातार पैंतीस साल तक रुपहले परदे से लेकर रेडियो तक एलपी की मधुर झंकार ने लोगों के दिलों पर राज किया। आज भी यदि कोई रेडियो स्टेशन लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के गीतों को दिन–रात चौबीस घंटे

प्रसारित करने की पहल करे तो शायद एक सप्ताह बाद ही हमें उनका कोई गीत दुबारा सुनाने को मिले। उनके गीतों में जीवन का हर रंग, प्रकृति का हर मौसम और कुदरत की हर देन असरदार ढंग से मौजूद है जो उन्हें अद्भुत 'मेलोडी मेकर्स' साबित करती है। आखिर अपने ऑर्केस्ट्रा में हमेशा सौ–डेढ़ सौ साजिंदों और कम से कम चालीस वायलिन वादकों को रखने का जूनून भला कैसे रंग न लाता..? दरअसल, लेखक ने अनन्य प्रशंसक के बतौर जीवन भर एलपी के सांगीतिक योगदान को लेकर विभिन्न स्रोतों से जो महत्वपूर्ण जानकारियाँ एकत्र की, उसे पुस्तक के रूप में संजोकर लोगों तक पहुँचाने का प्रयास नेकनीयती से किया है। इन सबकी बदौलत लेखक ने एलपी के सृजनात्मक योगदान पर 2017 से ब्लॉग लिखना शुरू किया और चार साल में 93 ब्लॉग लिख डाले। इसमें उन्हें काफी मदद देश–विदेश में एलपी को चाहने वाले उन प्रशंसकों से भी मिली है जो इन्टरनेट/सोशल मीडिया के जरिये उनके संपर्क में आये। प्रकारांतर से यह पुस्तक लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के गीतों/फिल्मों के अलग–अलग दृष्टिकोण से किये गये वर्गीकरण और वर्षवार संकलन का ब्यौरा देने वाला इनसाइक्लोपीडिया ही है। कम से कम एलपी के प्रशंसकों के लिये तो यह एक संग्रहणीय तोहफा है ही। चूँकि अजय पौंडरिक कोई लेखक तो हैं नहीं और न ही उन्होंने इस पुस्तक को लिखने में किसी पेशेवर लेखक की सहायता ली, इसलिए किताब में लेखकीय प्रवाह और शब्द शिल्प नदारद है। आखिरी के दो सौ पन्नों में तो केवल लक्ष्मीकांत प्यारेलाल की फिल्मों और उनके गीतों की फेहरिस्त ही दी गई है। पुस्तक लेखन की भूमिका, शोध सन्दर्भ, और आभार आदि का खुलासा करती 'प्रस्तावना' भी शुरुआत के बजाय अंत में दी गई है।

(विनोद नागर की फेसबुकवॉल से साभार)

अभिनेता की तैयारी से ही यादगार बनता है चरित्र

कानपुर। अभिनेता को अपना किरदार तैयार करते समय चरित्र का सूक्ष्म विश्लेषण और रिसर्च करनी चाहिए। चरित्र को पूरी तौर पर आत्मसात करने के बाद ही कुछ ऐसी कामयाबी हासिल होती है कि लोग उस अभिनेता और उसके अभिनय को लंबे समय तक याद रखते हैं।

यह बात अनुकृति रंगमंडल कानपुर के कार्यक्रम में प्रसिद्ध रंगमंच, फिल्म अभिनेता अखिलेन्द्र मिश्रा ने कही। इससे पहले अनुकृति के सचिव डा. ओमेन्द्र कुमार ने श्री मिश्रा का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि किस तरह अखिलेन्द्र जी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से प्रशिक्षण लेने के बाद मुंबई पहुंचे और थिएटर में बैंक स्टेज से शुरुआत की। रंगकर्मी संध्या सिंह ने श्री मिश्रा की चर्चित पुस्तक अखिलामृतम की कविता नारी के संबंध में विस्तृत चर्चा भी की। अभिनय को लेकर रंगकर्मियों की जिज्ञासाओं का श्री मिश्रा ने विस्तार में समाधान किया। इस दौरान वरिष्ठ रंगकर्मी कृष्णा सक्सेना, सुरेश श्रीवास्तव, दीपक राज राही, आरती शुक्ला, सुमित गुप्ता, विजय भास्कर, जिज्ञासा शुक्ला, सम्राट यादव, कुशल, अजीत, साहिल, संजय शर्मा मौजूद रहे।

आमिर खान और किरण राव की 'लापता लेडीज' और घूंघट में दुल्हनों की अदला-बदली का घनचक्कर

अजित राय

आमिर खान की पूर्व पत्नी किरण राव की नई फिल्म 'लापता लेडीज' को सऊदी अरब के जेद्दा में आयोजित तीसरे रेड सी अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में दर्शकों ने काफी पसंद किया।आमिर खान और जियो स्टूडियो ने इस फिल्म को प्रोड्यूस किया है। इसी साल 8 सितंबर 2023 को टोरंटो अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में इस फिल्म का वर्ल्ड प्रीमियर हुआ था। यह फिल्म अगले साल 5 जनवरी 2024 को भारतीय सिनेमा घरों में रिलीज़ होगी।

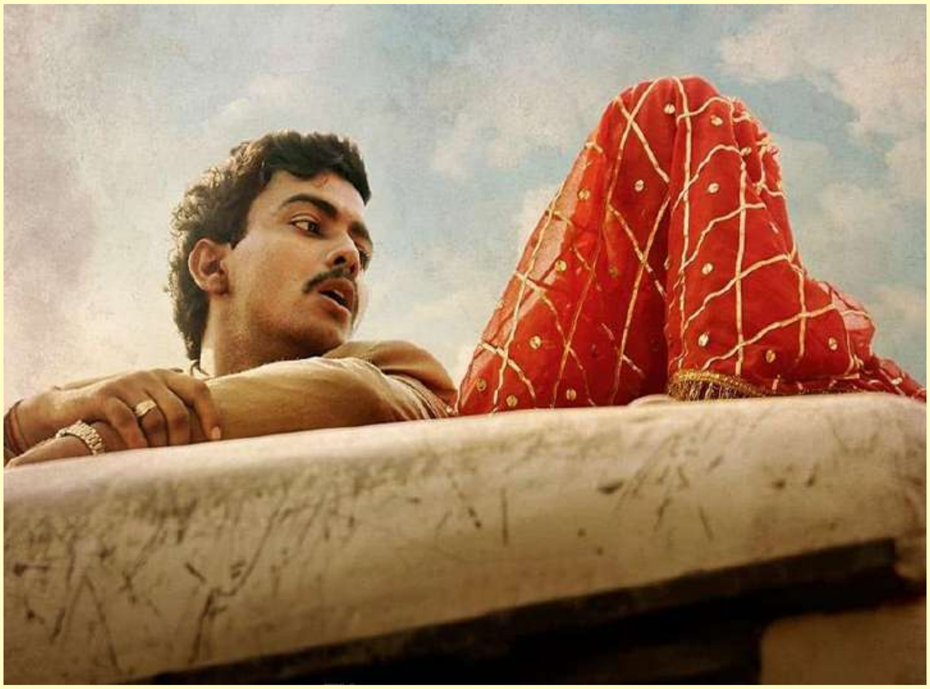

इस फिल्म समारोह में भारत से कुल तीन फिल्में दिखाई गई जिसमें दो हिंदी और एक पंजाबी की है। किरण राव की 'लापता लेडीज' के साथ साथ करण जौहर और गुनीत मोंगा द्वारा निर्मित निखिल नागेश भट्ट की 'किल' और टी सीरीज के भूषण कुमार और अन्य द्वारा निर्मित भारतीय मूल के कनाडाई फिल्मकार तरसेन सिंह की पंजाबी फिल्म 'डियर जस्सी' को भी यहां काफी पसंद किया गया। 'डियर जस्सी' को 'ओ माय गॉड –2' के निर्देशक अमित राय ने लिखा है।

किरण राव ने 'धोबी घाट' (2011) के बारह साल बाद कोई फिल्म बनाई है। बिप्लव गोस्वामी की कहानी के आधार पर इसे स्नेहा देसाई ने लिखा है। इसमें मुख्य भूमिकाएं रवि किशन, स्पर्श श्रीवास्तव, प्रतिभा रत्ना,नीतांशी गोयल, गीता अग्रवाल, छाया कदम, दुर्गेश कुमार, सत्येंद्र सोनी आदि ने निभाई है। 'लापता लेडीज' दो ग्रामीण औरतों की कहानी है जो शादी के बाद लाल जोड़े में अपने अपने पति के साथ ससुराल आते हुए ट्रेन में लंबे घूंघट के कारण खो जाती है। पहली दुल्हन फूल का पति भूल से दूसरे की दुल्हन को लेकर अपने गांव के रेलवे स्टेशन पर उतर जाता है। उसकी असली दुल्हन फूल ट्रेन में आंख लग जाने के कारण छत्तीसगढ़ के किसी पतीला रेलवे स्टेशन पर पहुंच जाती है जहां दूसरी दुल्हन को उतरना था। उस जमाने में उत्तर भारत के गांवों में भयानक पर्दा प्रथा थी और शादी से पहले लड़का और लड़की एक दूसरे को देख भी नहीं पाते थे। वह भटकती हुई एक नकली अपाहिज भिखारी और उसके दोस्त छोटू की मदद से रेलवे प्लैटफॉर्म पर चाय पकौड़े का दुकान चलाने वाली चाची के यहां शरण लेती है। चाची मर्दों के धोखेबाज चरित्र से जली भुनी बैठी है। उसे लगता है कि फूल के पति ने दहेज लेकर और सुहागरात मनाकर जानबूझकर उसे छोड़ दिया है। जबकि फूल हमेशा शादी वाला लाल जोड़ा पहने रहती है क्योंकि उसे यकीन है कि एक न एक दिन उसे खोजता हुआ उसका पति जब यहां आएगा तो इसी लाल जोड़े के कारण उसे पहचान लेगा। फूल को केवल अपने गांव का नाम याद है, पता ठिकाना नहीं। उस नाम के गांव हर जगह भरे पड़े हैं। उसे अपने पति और ससुराल का भी नाम पता ठिकाना नहीं मालूम। उस जमाने में गांव की

औरतें अपने पति का नाम तक नहीं बोलती थी। फूल का पति ससुराल से अपनी दुल्हन की विदाई कराकर मोटरसाइकिल, नाव, बस और ट्रेन से जब अपने गांव पहुंचता है और दुल्हन का घूंघट उठाया जाता है तो पता चलता है कि यह तो किसी दूसरे की दुल्हन है जो लंबे घूंघट के कारण गलती से यहां आ गई है। फूल का पति जब थाने में अपनी पत्नी की गुमशुदगी की रिपोर्ट लिखाने जाता है तो थानेदार (रवि किशन) उससे फूल की फोटो मांगता है। उसके पास उसकी पत्नी के साथ शादी के समय खींचा गया एकमात्र ऐसा फोटो है जिसमें दुल्हन का चेहरा लंबे घूंघट से ढका हुआ है। अब समस्या है कि इन लापता औरतों की खोज कैसे की जाय।

फूल का पति जिस दूसरी दुल्हन को गलती से घर ले आया है उसकी भी रहस्यमय कहानी है। उसकी शादी उसकी मर्जी के खिलाफ एक अपराधी किस्म के बिगड़ैल से कर दी गई थी। वह उससे पीछा छुड़ाने की सोच ही रही थी कि फूल का पति उसे अपनी पत्नी समझ कर ले आया। वह सबसे पहले अपने मोबाइल का सिम कार्ड जलाकर नया सिमकार्ड डालती है जिससे उसके घर या ससुराल वाले उसे ढूंढ न पाए। पता चलता है कि वह कृषि विज्ञान की पढ़ाई करना चाहती है और शादी के गहने बेचकर अपनी बहन को चुपके–चुपके मनीआर्डर करती है। वह फूल के पति की कल्पना से फूल का एक गुमशुदगी का पोस्टर बनाती है। उसे सारे रेलवे स्टेशनों पर चिपका दिया जाता है। उसी पोस्टर की मदद से पतीला स्टेशन से फूल को खोज निकाला जाता है। फूल की जगह आई दूसरी औरत का पति भी उसे खोजता हुआ गांव के थाने पहुंचता है। पुलिस इंस्पेक्टर को सबके सामने रिश्वत देकर वह उसे जबरदस्ती ले जाना चाहता है। पर यहां सब लोग उसके खिलाफ हो जाते हैं। सबकी मदद से दूसरी औरत आजाद होकर अपनी पढ़ाई पूरी करने चली जाती है।

किरण राव की यह फिल्म बेशक सुखांत है पर भारतीय समाज में औरतों की दयनीय हालत पर सतत टिप्पणी करती है। फिल्म की मेकिंग कामेडी स्टाइल में तो है पर यथार्थवादी तरीके से फिल्माया गया है। सभी चरित्र बेहद स्वाभाविक लगते हैं। लड़के की मां (गीता अग्रवाल) अपने पति पर हमेशा कटाक्ष करती रहती है। लड़के का बड़ा भाई शहर में सेक्यूरिटी गार्ड की नौकरी करता है और अपनी पत्नी और बच्चों को गांव में छोड़े हुए हैं। उसकी पत्नी उसका चित्र बनाकर तकिए के नीचे रखती है और छुप छुप के देखती रहती है। लड़के का दादा भी सेक्यूरिटी गार्ड की नौकरी से रिटायर होकर आया है। वह हमेशा आधी आंख खोलकर सोता है और नींद में बड़बड़ाता रहता है– जागते रहो। इलाके का विधायक एक चुनावी सभा में फूल के खो जाने की घटना को विरोधी दल की साजिश और उनके द्वारा अपहरण बताता है। फिल्म में प्रकट हिंसा तो कहीं भी नहीं है। लेकिन चुटीले अंदाज में काफी कुछ कहा गया है। बस एक ही बात खटकती है कि किरण राव ने कुछ ज्यादा ही निष्पाप भाव (इनोसेंट) से गांव और ग्रामीण जनता को दिखाया है। भले ही इस फिल्म का समय 2001 के आस–पास का है और इलाका मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ का बार्डर है, पर इतना निष्पाप और सीधा सादा गांव तो आज कहीं नहीं बचा है।

फिल्म समीक्षक
(अजित राय की फेसबुकवॉल से साभार)

कार्टूनिस्ट हरिओम तिवारी की नज़र से...

उज्जैन के साहित्यकार संदीप सृजन कर्मयोगी सम्मान से सम्मानित

उज्जैन। विद्यांजलि भारत मंच महू के तत्वावधान में ललिता त्रिपुर सुंदरी शक्तिपीठ उज्जैन में आयोजित आठवें वार्षिक समारोह में युवा साहित्यकार एवं शब्द प्रवाह के संपादक संदीप सृजन को कर्मयोगी सम्मान 2023 से सम्मानित किया गया।

शक्तिपीठ के आचार्य उमेश शर्मा और स्वामी मुस्कुराके के आतिथ्य में हुए समारोह में गीतकार हेमंत श्रीमाल, देवकृकृष्ण व्यास, हरेराम वाजपेयी, प्रदीप नवीन, गिरेन्द्रसिंह भदौरिया, मीरा जैन और संस्था अध्यक्ष दामोदर विरमाल ने श्री सृजन को यह सम्मान उनके सक्रिय लेखन और साहित्यिक पत्रिका संपादन के श्रेत्र में सतत कार्यरत रहने के लिए प्रदान किया गया। इस अवसर पर प्रतिभा सम्मान के साथ भव्य कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

घर बैठे रंग संस्कृति के सदस्य बनें

सदस्यता फॉर्म

◆वार्षिक शुल्क 100-/◆ 3 वर्षीय शुल्क 270-/ ◆ 15 वर्षीय शुल्क 1100-/

(डाक खर्च अतिरिक्त)

नाम..

निवास पता ....

दूरभाष.. ईमेल..

Union Bank of India 0241

UPI ID: rangsanskriti@okaxis

स्कैन करें।

सदस्यता का प्रकार

★ वार्षिक/ 3 वर्षीय/ 15 वर्षीय शुल्क रूपये..

★ सदस्यता यूनियन बैंक शुल्क मनीआर्डर द्वारा या रंग संस्कृति के खाता क्रमांक 549101010050241 IFSC CODE UBINO554910

★ ड्राफ्ट/ चेक क्रमांक/यूपीआई ट्रांजेशन नं..

★ यूनियन बैंक ऑफ इंडिया शाखा मंदाकिनी, कोलार रोड, भोपाल - 42 के माध्यम से जमा कर विवरण डाक द्वारा प्रेषित करें।

आपके पास यदि संस्कृति, रंगमंच, स्थानीय प्रतिभा खोज से संबंधित लेख, फोटो, समाचार एवं स्व-लिखित रचनाएं जिन्हें आप पत्रिका में प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो निम्न पते/ ई-मेल पर भेजें

पता : यनी हाउस 141, अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म कोलार रोड, भोपाल - 462042 (म.प्र.)

प्रशासनिक कार्यालय - रंग संस्कृति पब्लिकेशन US-6/DK-4 दानिश कुंज कोलार रोड भोपाल

मो. : 9425004536, 9424410981 Email : rangsanskriti@gmail.com

+ PAIN CLINIC +

डॉ. राघवेन्द्र साध

डी. आर्थ, एम.एस. (अस्थि रोग), एफ.बी.ओ.एस., एफ.एन.आईओ.एच.

अस्थि एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ
स्पाईन सर्जन
हैन्ड एवं नर्व (नस) रिकंस्ट्रकटिव

प्रतिदिन - सायं 5 से 9 बजे तक, रविवार सुबह 9.30 से 12.30 बजे तक

डॉ. श्रीमती दीपिका साध

एम.एस.सी., डी.एच.एम.एस.

होम्योपैथी फैमिली फिजिशियन

समय : सुबह 9.30 से 12.30 बजे तक, शाम : 5.00 से 7.00 बजे तक

डॉ. प्राची साध

एम.बी.बी.एस., फिजिशियन एवं सर्जन

गर्दन दर्द, चक्कर आना
घुटने व अन्य जोड़ो का दर्द
झुनझुनी
सुन्नपन
साइटिका
पीठ दर्द, कमर दर्द
नसों का दर्द
गठिया
स्पोन्डेलाइटिस

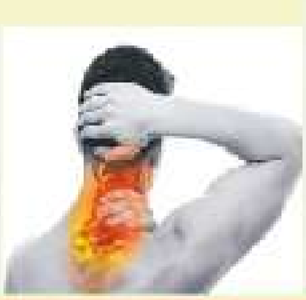

पता : 23, 24, नर्मदा नगर, न्यू फ्रेन्ड्स कॉलोनी
बावड़िया कलॉं, मृत्युन्जय शिव मंदिर के पास, भोपाल

संपर्क :-
9425681936

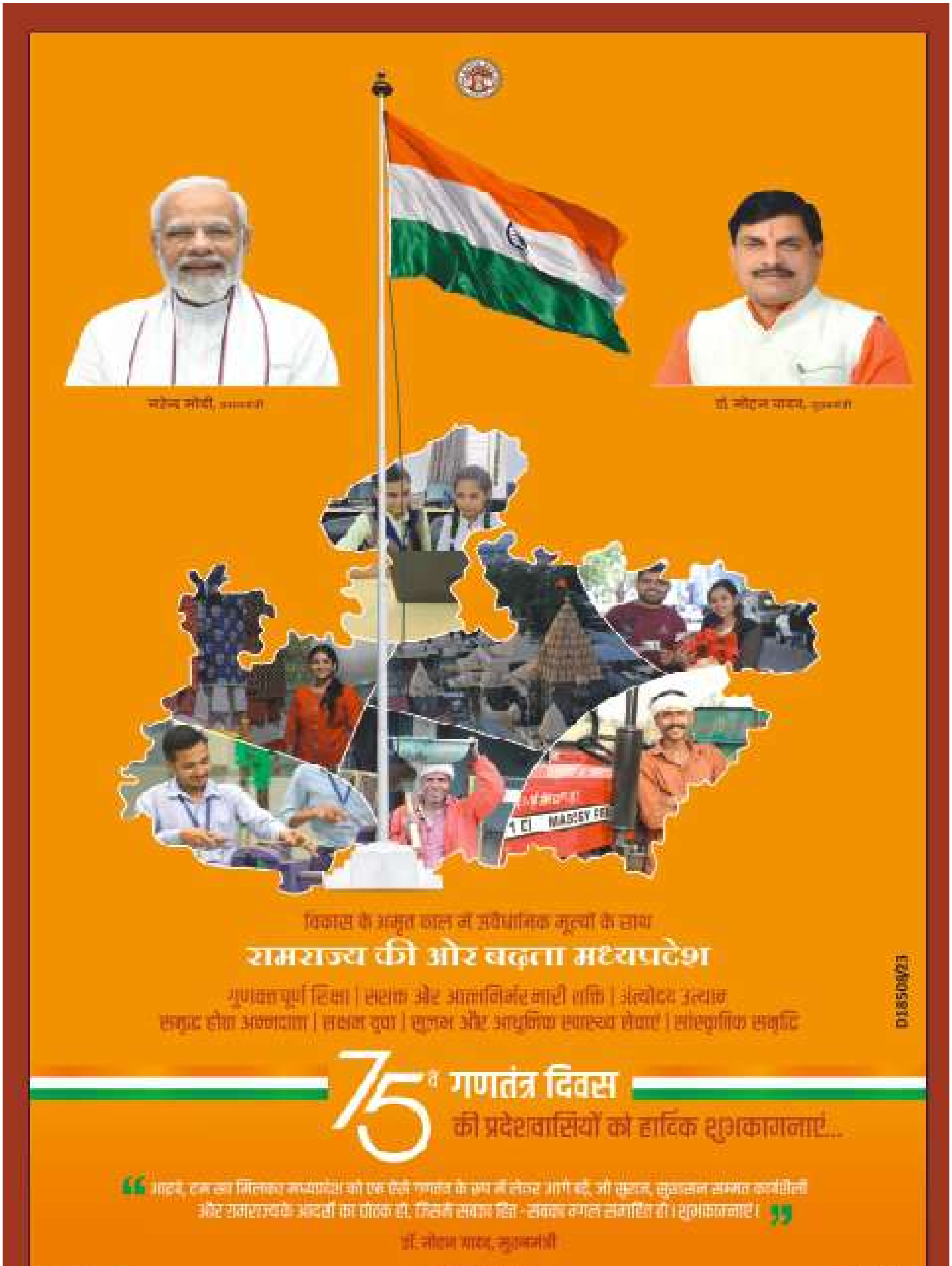
विकास के अमृत काल में संवैधानिक मूल्यों के साथ
रामराज्य की ओर बढ़ता मध्यप्रदेश
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा | सशक्त और आत्मनिर्भर नारी शक्ति | अंत्योदय उत्थान
समृद्ध होता अन्नदाता | सशक्त युवा | सुलभ और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं | सांस्कृतिक समृद्धि
D18508/23
75 वें गणतंत्र दिवस
की प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं...